CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामदास

एक अध्यापक के जीवन पर आधारित

साहित्यकार - लक्ष्मण राव

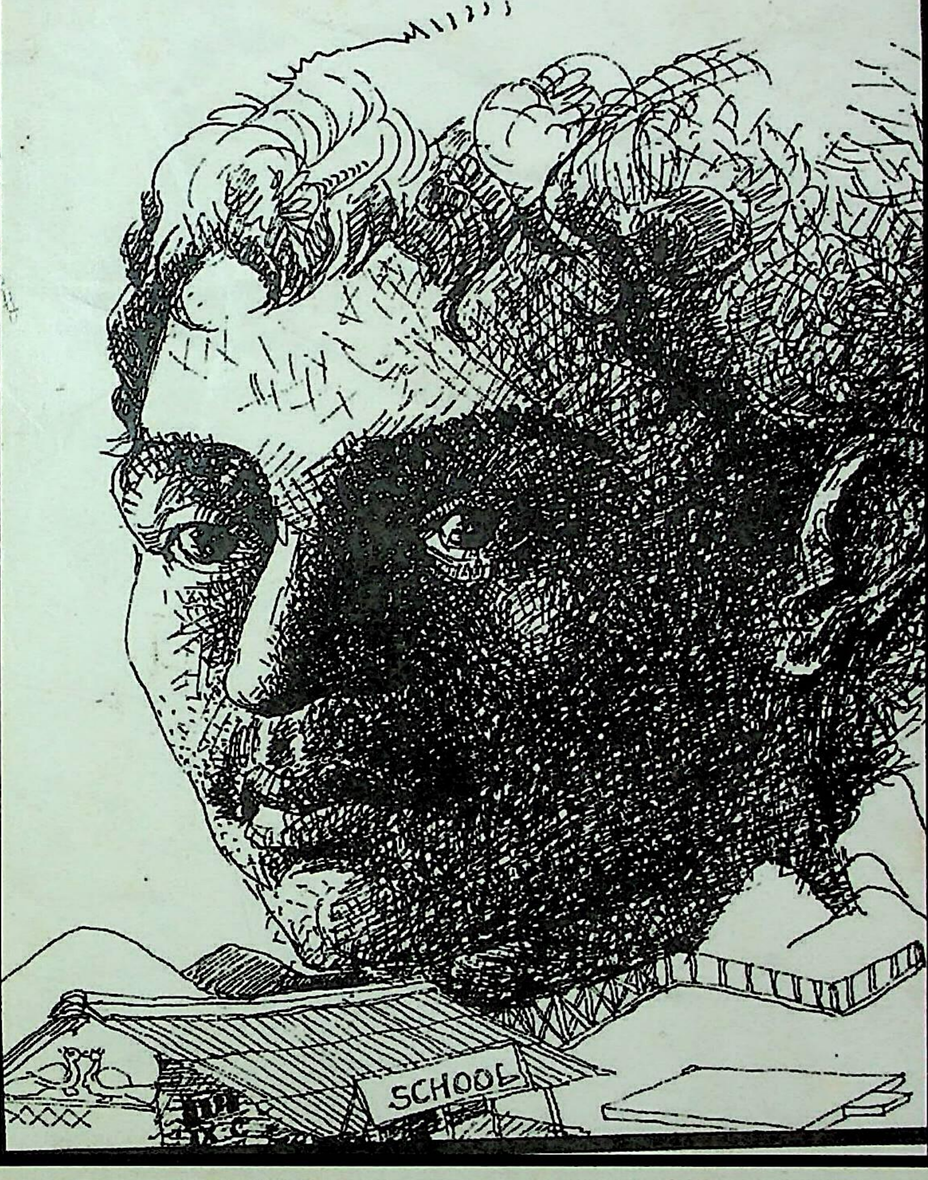

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

रामदास

एक आदर्शवादी अध्यापक के जीवन पर आधारित मार्मिक उपन्यास

छात्र जीवन की स्थिति-बोध को साफ-साफ दर्शाने वाला यह मार्मिक उपन्यास अपनी रचना-संरचना में अद्भुत है। रामदास, बिगड़े तथा चरित्रहीन छात्र को एक आदर्शवादी अध्यापक ने उसे आदर्शवाद का पाठ पढ़ाकर समाज में नया उदाहरण रेखांकित किया।

यह कृति जहां एक ओर छात्रों के भविष्य पर प्रकाश डालती है वहां आज के माहौल में समूचे शिक्षा संस्थानों पर भी प्रश्न उठाती है। पुस्तक की भाषा सरल व सुबोध है।

साहित्यकार
लक्ष्मण राव

संस्करण : 2010
मूल्य : 300/- रूपये
ISBN - 978-81-900386-4-5

RAMDAS
Master-Piece

मुखपृष्ठ चित्रकार
अमृत पटेल
राष्ट्रीय चित्रकला पुरस्कार
1976 में राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

One man show, Admit One Gallery-New York USA , 1999; One man show, Lalit Kala Akadmi-New Delhi, 2004

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास

एक आदर्शवादी अध्यापक के जीवन पर आधारित मार्मिक उपन्यास . . .

साहित्यकार - **लक्ष्मण राव**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास

एक आदर्शवादी अध्यापक के जीवन पर
आधारित मार्मिक उपन्यास

साहित्यकार
लक्ष्मण राव

भारतीय साहित्य कला प्रकाशन
11, विष्णु दिगम्बर मार्ग, नई दिल्ली - 110 002

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रचना का नाम : रामदास
साहित्यकार : लक्ष्मण राव
मूल्य : 300/- (तीन सौ रुपये)

© : साहित्यकार लक्ष्मण राव के पास सुरक्षित

संस्करण : संस्करण 2010
मुख्यपृष्ठ चित्र : अमृत पटेल
लेज़रटाइप : त्रिपाठी कम्प्यूटर सेन्टर,
जी - 22, शकरपुर, दिल्ली - 92
मुद्रक : सुमन प्रिन्टर्स, दिल्ली
प्रकाशक : भारतीय साहित्य कला प्रकाशन
11 विष्णु दिगम्बर मार्ग,
नई दिल्ली - 110 002

ISBN - 978-81-900386-4-5
International Standard Book Numbering
Ministry of HRD, Govt. of India

Ramdas (Social Hindi Novel)
Laxman Rao
Rs. 300/-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

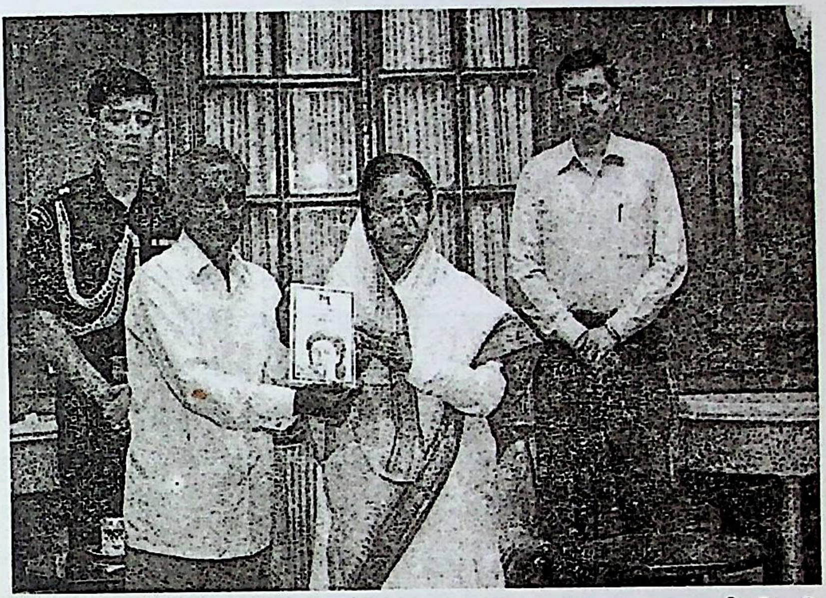

नई दिल्ली में आईटीओ के निकट विष्णु दिगम्बर मार्ग हिन्दी भवन के पास चाय की दुकान चलाने वाले लक्ष्मण राव महामहिम राष्ट्रपति महोदया जी श्रीमती प्रतिभा पाटिल को राष्ट्रपति भवन में अपनी पुस्तक 'रेणु' भेंट करते हुए।

समाचार कक्ष
भारतीय साहित्य कला प्रकाशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साहित्यकार लक्ष्मण राव

(जीवन परिचय)

राष्ट्रभाषा हिन्दी के धरातल पर विशेष स्थान प्राप्त करने वाले साहित्यकार श्री लक्ष्मण राव का जन्म 22 जुलाई, 1954 को महाराष्ट्र प्रान्त के अमरावती ज़िले में एक छोटे से गांव तड़ेगांव दशासर में हुआ। उन्होंने मराठी भाषा में माध्यमिक कक्षाएं, दिल्ली तिमारपुर पत्राचार विद्यालय से उच्चतर माध्यमिक कक्षा व दिल्ली विश्वविद्यालय से बी. ए. उत्तीर्ण किया।

श्री लक्ष्मण राव साहित्य के प्रति आरम्भ से ही आकर्षित थे। मराठी भाषी होते हुए भी उन्हें हिन्दी भाषा के प्रति विशेष आकर्षण था।

एक दिन इनके गांव का रामदास नाम का लड़का छुट्टी के समय अपने मामा के गांव गया। जब वह लौटने लगा तो रास्ते में एक नदी पड़ी। शीशे की तरह चमकते हुए पानी में उसने छलांग लगा दी। वह फिर कभी लौटकर नहीं आया। बाद में गांववालों ने रामदास के शरीर को नदी के बाहर निकाला।

गांव में रामदास की मृत्यु की घटना श्री लक्ष्मण राव के लिये प्रेरणा बन गई और उन्होंने उस पर एक उपन्यास लिख डाला। लेखन का माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी को चुना। जब उन्हें गांव के पुस्तकालय में हिन्दी की अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने को मिलीं तो उनके मन में लेखक बनने की इच्छा जागृत हुई।

लक्ष्मण राव रात दिन हिन्दी की पुस्तकों का अध्ययन करने लगे। उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित चतुर्वेदी एवं प्रसाद शर्मा तथा व्याकरण वेदान्ताचार्य पण्डित तारिणीश झा का संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ ग्रंथ खरीदा। यह एक हिन्दी-संस्कृत शब्द कोष था। उस शब्दकोष का वे गहन अध्ययन करने लगे। श्री लक्ष्मण राव उस समय मात्र बीस वर्ष के थे। हिन्दी भाषा पर जब अधिकार (कमाण्ड) दिखाई दिया तब इन्होंने पत्राचार माध्यम से मुंबई हिन्दी विद्यापीठ से हिन्दी में परीक्षांए दीं। यह बात 1973 की है। उन दिनों लक्ष्मण राव दसवीं कक्षा पास करके महाराष्ट्र के अमरावती शहर में सूत मिल में टेक्सटाइल मज़दूर के रूप में काम कर रहे थे।

1975 मे अप्रैल के महीने में बिजली कटौती के कारण वह मिल बंद हो गई और लक्ष्मण राव अमरावती से अपना सामान उठाकर गांव चले गये। वहां वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेती का कांम करने लगे। वे हमेशा मानसिक तनाव से ग्रस्त रहने लगे। एक महीने के बाद मई महीने में उन्होंने पिताजी से 40 रूपये लिये और गांव से भोपाल आ गए। यहां तक 40 रूपये समाप्त हो गये।

लक्ष्मण राव भोपाल में ही एक भवन पर पांच रूपये रोज़ से बेलदार का काम करने लगे। तीन महीने भोपाल में रहकर 30 जुलाई, 1975 को जी. टी. एक्सप्रेस से दिल्ली आये।

दिल्ली में दो तीन दिन बिरला मंदिर की धर्मशाला में ठहरे। काम ढूंढ रहे थे पर मिल नहीं रहा था। जीवन के कठिनतम समय पर श्री लक्ष्मण राव ने ढाबों पर बर्तन साफ करने का काम स्वीकार किया। दो वर्ष लगातार यही चलता रहा, कभी ढाबों पर बर्तन साफ करना, कभी भवनों पर मज़दूरी करना आदि।

1977 में दिल्ली जैसे भीड़ भरे शहर में आई. टी. ओ. क्षेत्र के विष्णु दिगम्बर मार्ग पर श्री लक्ष्मण राव पेड़ के नीचे बैठकर पान-बीड़ी, सिगरेट बेचने लगे। वस्तुतः उनकी छोटी सी दुकान दिल्ली नगर निगम व दिल्ली पुलिस अनेक बार उजाड़ती रही। पर उन्होंने एक सफल साहित्यकार बनने का सपना अधूरा नहीं छोड़ा।

श्री लक्ष्मण राव दरियागंज के रविवारीय पुस्तक बाज़ार में जाकर अध्ययन करने हेतु पूरे सप्ताह भर के लिये साहित्य खरीदकर लाते थे। उन्हीं दिनों उन्हें साहित्य सम्राट शेक्सपीयर, सर्वश्रेष्ठ यूनानी नाटककार सोफोक्लीज़ का पता चला। इसी तरह मुन्शी प्रेमचन्द, शरत् चन्द्र चट्टोपाध्याय आदि साहित्यकारों की पुस्तकों का अध्ययन करने लगे।

लक्ष्मण राव का पहला उपन्यास 'नई दुनिया की नई कहानी' 1979 में प्रकाशित हुआ। उस समय वे चर्चा का विषय बन गए। एक पानवाला उपन्यासकार, लोगों को विश्वास नहीं हो रहा था। परन्तु टाइम्स ऑफ इन्डिया के सन्डे रिव्यू में उनका परिचय प्रकाशित हुआ। यह बात एक फरवरी, 1981 की है। तब उनके कार्य पर लोगों को विश्वास होने लगा।

इसके बाद देश-विदेश के समाचार पत्रों, रेडियो तथा दूरदर्शन पर श्री लक्ष्मण राव मानवीय समाचार सूचक बन गए। धीरे-धीरे उनका परिचय सम्माननीय लोगों के साथ बढ़ने लगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27 मई, 1984 को तीन मूर्ति भवन में पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जब उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गांधी के सामने उनके जीवन पर पुस्तक लिखने की मन्शा व्यक्त की तब उन्होंने अपने जीवन के बदले, प्रधानमंत्री कार्यकाल के सम्बन्ध में लिखने का सुझाव दिया।

लक्ष्मण राव ने 'प्रधानमंत्री' नाम से एक नाटक लिखा और उसे प्रकाशित किया। 1984 में प्रधानमंत्री नाटक प्रकाशित होने के बाद 1992 में उनका 'रामदास' उपन्यास प्रकाशित हुआ। 2001 में 'नर्मदा' उपन्यास तथा 2006 में 'परम्परा से जुड़ी भारतीय राजनीति'। 2008 में उपन्यास 'रेणु' प्रकाशित हुआ। इस प्रकार से लक्ष्मण राव की रचनाएं प्रकाशित हुई और अब रामदास 2009 में द्वितीय संस्करण में प्रकाशित होकर आप के हाथ में है। पहले संस्करण की 2200 प्रतियां बिक चुकी हैं।

एक सामान्य व्यक्ति की रचनाएं हिन्दी भाषा में प्रकाशित होना अपने आप में विशेषता है। कठिन परिश्रम करके साहित्यिक धरातल तैयार करना व शून्य से शिखर तक पहुंचना बहुत बड़ा संघर्ष है।

लक्ष्मण राव ने कहा है - "यदि मुझे पहले से ही पता होता कि साहित्यकार बनना इतना आसान नहीं है तो मैं कभी प्रयास नहीं करता। मेरे तीस वर्षों के परिश्रम से मैं साहित्यकार बन गया और अब मेरे लिये इस क्षेत्र का प्रत्येक मार्ग सरल हो गया है। पुस्तके लिखने से लेकर बिक्री करने तक।"

देश-विदेश के सामाचार पत्रों ने लक्ष्मण राव को विशेष स्थान देकर उनका जीवन परिचय प्रकाशित किया है। यह सत्य हिन्दी भाषी लेखकों के लिये गर्व की बात है।

सम्पादकीय कक्ष से

भारतीय साहित्य कला प्रकाशन

पता :

लक्ष्मण राव (साहित्यकार)

11, विष्णु दिगम्बर मार्ग, नई दिल्ली - 110 002

फोन : 09210415574

Email : laxmanrao.bskp@gmail.com

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

MAJOR INTERVIEWS NEWS AND REVIEWS

Author
Laxman Rao

February 1, 1981	The Times of India	Sunday	Review
April 26, 1981	Doordarshan	Delhi TV	Interview
March 21, 1982	The Hitvada	Nagpur	Interview
January 16, 1983	Mathrubhumi	Calicut	Interview
Decembe 3, 1984	Sandhya Times	New Delhi	Review
January 13, 1985	Lokmat	Nagpur	Review
January 3, 1986	UNI	New Delhi	Interview
January 5, 1986	Radio (Delhi B)	Lok Ruchi Samachar	
January 10, 1986	Radio (Delhi A)	Aaj Subaha	Interview
June 10, 1986	Bhasha (PTI)	Wedding News	
June 19, 1987	Veer Arjun Sandhya	New Delhi	Interview
May 26, 1990	Navbharat Times	Indradhanush	Interview
April 28, 1992	The Statesman	New Delhi	Interview
June 11, 1993	Face in the Crowd	Newwork	Review
December 10, 1995	Qaomi Awaz	Mumbai	Interview
November 26, 1997	The Hindustan Times	New Delhi	Interview
May 2, 1998	Samna	New Delhi	Interview
Sept. 11, 2000	Indian Express	New Delhi	Interview
Sept. 25, 2000	Gulf News	Dubai	Interview
October 8, 2000	Sunday Mid Day	Mumbai	Interview
October 21, 2000	Amar Ujala	Merrut	
November 13, 2000	Wahindia	Internet	
May 15, 2001	Hindustan (Hindi)	New Delhi	
June, 2001	Vanita	(Hindi Magazine)	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

July, 24, 2001	The Pioneer	New Delhi	
July 30, 2001	The Indian Express	New Delhi	
Aug. 19, 2001	Dainik Bhaskar	Rasrang	
Dec. 6, 2001	The Hindu	New Delhi	
Dec. 10, 2001	The Hindu	New Delhi	
Dec. 15, 2001	Punjab Kesari	New Delhi	
January 8, 2002	Dainik Jagaran	New Delhi	
February 11, 2002	N. C. R. The Tribune	New Delhi	
March 4, 2002	Sandhay Times	New Delhi	
July 13, 2002	Radio Metro	New Delhi	
Aug.2, 2002	Hindustan Times	New Delhi	
February 10, 2003	Rashtriya Sahara	New Delhi	T. V.
February 21, 2003	Shah Times	New Delhi	
April 10, 2003	Sahara Samay	New Delhi	T. V.
Sept. 29, 2003	Dainik Jagaran	New Delhi	
Oct. 18, 2003	Samna	Mumbai	News
Oct. 26, 2003	Bhasha Agency	New Delhi	News
Nov. 3, 2003	Adbi Akhbar	New Delhi	News
Jauary 24, 2004	Samyak Bharat	New Delhi	Review
January 24, 2004	The Times of India	East Delhi plus	Award News
February 25, 2004	Zee TV News	Top Ten	T. V. News
March 28, 2004	Samay Varta	New Delhi	Interview
Oct. 27, 2004	Doordarshan Patrika	National Channel	Interview
Dec. 1, 2004	Sahara Samay	U. P. Channel	
Dec. 11, 2004	Sahara Times	Weekly English	Award News
Dec. 31, 2004	Dainik Bhaskar	Nagpur	News
Dec. 2004	Rashtriya Jan	New Delhi	Interview
January 1, 2005	Anjuri (Magazine)	New Delhi	Interview
April 2, 2005	Art Explorer	New Delhi	Interview
June 4, 2005	The Sunday Post	Noida	Interview
July 30, 2005	Sahara N. C. R.	T. V.	News
Aug. 8, 2005	Amar Ujala	Delhi Bureau	News
Sept. 5, 2005	Pratham Pravakta	New Delhi	Interview
Sept. 5, 2005	D. D. News	(DhartiKeyLal)	Interview
Oct. 17, 2005	Bhasha (PTI)	New Delhi	News
Oct. 27, 2005	HariBhumi	New Delhi	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Oct. 28, 2005	Andaz Apna Apna		Z. T. V.
Nov. 3, 2005	The Hindu	New Delhi	
Nov. 23, 2005	Sunday Tribune	Chandigad	
January 25, 2006	Dainik Bhaskar	Nagpur	
Feb. 2006	Virat Vaibhav	New Delhi	
Feb. 2006	Hans	New Delhi	
April 10, 2006	Manohar Khaniya		
June 24, 2006	N. D. T. V.		
1 July, 2006	Metro Manorama	(Malyalam)	Interview
July 21 2006	Sahara T. V.		
Sep. 2006	After Break	Delhi	
January 11, 2007	D. D. News		
January . 2007	Dost Police		
Feb. 18, 2007	Shakti Chanal		
January 2007	Gaurav Ghosh		
May 25, 2007	Tarun Bharat	Nagpur	
June 26, 2007	Times of India	Nagpur	
22 Aug 2007	Loksabha TV	New Delhi	Interview
29 Sep 2007	Sahara NCR	New Delhi	Interview
2 Oct. 2007	Delhi Aaj Tak	New Delhi	Interview
Nov. 2007	Harmony	Mumbai	Interview
Jan 20, 2008	Hitvada	Nagpur	Interview
Jan 20, 2008	Times of India	Nagpur	Interview
Jan 20, 2008	Sakal (Marathi)	Nagpur	Interview
Feb. 2009	Aha Jindgi (Magazine)	New Delhi	Interview
24 July, 2009	Nai Duniya	New Delhi	News
24 July, 2009	Times of India	New Delhi	News

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Exclusive Interviews by International Media

Feb. 9, 1986	Asiaweek	Hong Kong
May 5, 1996	TVI	Singapore
August 23, 2004	Gulp News	Dubai U. A. E.
December 13, 2004	BBC News Radio	
January 15, 2005	BBC Urdu Redio (AFP)	
November 2, 2005	Agence Frence Presse	Paris
November 20, 2005	BBC World News	London
July 13, 2006	ANI(Asian News International)	
March 21, 2007	AFP South Asia Video	France
Aug, 17, 2007	CCN News	
Aug. 19, 2007	CNN-IBN	
July 23, 2009	IANS	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेब साईट पर साहित्यकार लक्ष्मण राव

का साहित्य एवं जीवन परिचय

http://www.rediff.com/cms/print.jsp?docpath=/news/2003/aug/04spec.com
http://www.4to40.com/newsat4/print.asp?id=1162
http://www.guardian.co.uk/world/2005/nov/16/books.india/print
http://www.dawn.com/2005/11/03/int17.htm
http://meri-talash.blogspot.com/2008/09/blog-post_07.html
http://www.thebetterindia.com/tags/laxman-rao/
http://www.sakaaltimes.com/2009/07/27141354/President-Patil-meets-tea-vend.html
http://www.guardian.co.uk/world/2005/nov/16/books.india
http://www.thaindian.com/newsportal/health/president-patil-meets-tea-vendor-whos-also-an-author_100222083.html#
http://www.indiaenews.com/pdf/210148.pdf
http://blog.taragana.com/n/president-patil-meets-tea-vendor-whos-also-an-author-118497
http://www.thebetterindia.com/topics/empowerment/
http://www.jansamachar.net/
http://www.indiaenews.com/india/20090724/210148.htm
http://www.hindu.com/mp/2005/10/22/stories/2005102202060300.htm
http://in.buzz.yahoo.com/article/1:spice_zee508:916da49c10540b07419e4cf8c352c2b3/A-tea-vendor-with-a-literary-passion
http://spicezee.zeenews.com/articles/story36327.htm#
http://andhracafe.com/index.php?m=show&id=29199
http://delhiwithavinash.blogspot.com/2009_02_01_archive.html
http://www.blogadda.com/showblog?url=thetrueindia.wordpress.com/2009/08/12/the-unique-chaiwallah/
http://kitabkhana.blogspot.com/2005_11_01_archive.html
http://www.ecsaleszone.com/index.php/2009/09/03/
http://ibnlive.in.com/videos/47706/.html

समाचार कक्ष, भारतीय साहित्य कला प्रकाशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरस्कार व सम्मान

1. भारतीय अनुवाद परिषद्	(2000)
2. कोच लीडरशिप सेन्टर	(2002)
3. इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती	(2003)
4. निष्काम सेवा सोसायटी	(2004)
5. अग्निपथ	(2005)
6. अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच	(2005)
7. शिव रजनी कला कुंज	(2005)
8. प्रागतिक सहजीवन संस्थान	(2006)
9. यशपाल जैन स्मृति	(2006)
10. चिल्ड्रन वैली स्कूल, प्रीतविहार-दिल्ली	(2007)
11. विज्ञान एवं प्रौद्योगिक परिषद्	(2007)
12. चित्रकला संगम	(2008)
13. इ. एम. पी. आई. मैनेजमेन्ट इन्स्टिट्यूट, सतबड़ी	(2008)
14. इन्टरनेशनल, इन्टिलेक्च्युअल अवार्ड	(2008)
15. नेशन केअर	(2008)
16. पुनित सक्सैना संस्थान	(2009)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साहित्यकार लक्ष्मण राव की साहित्यिक रचनाएं

1. नई दुनिया की नई कहानी (1979), 2. प्रधानमंत्री (नाटक, 1984), 3. रामदास (1992), 4. नर्मदा (2001), 5. परम्परा से जुड़ी भारतीय राजनीति (2006), 6. रेणु (2008), 7. पत्तियों की सरसराहट, 8. सर्पदंश, 9. साहिल, 10 प्रातः काल, 11 शिव अरूणा, 12. प्रशासन (नाटक), 13. राष्ट्रपति (नाटक), 14 संयम (राजीव गांधी की जीवनी), 15. साहित्य व्यासपीठ (आत्मकथा), 16. दृष्टिकोण, 17. समकालीन संविधान, 18. अहंकार, 19. अभिव्यक्ति, 20. मौलिक पत्रकारिता 21 गांधी (महात्मा गांधी के जीवन की विशेष घटनाओं पर आधारित जीवन वृत)

(सम्पादकीय कक्ष)

भारतीय साहित्य कला प्रकाशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1

मनुष्य के जीवन में कभी-कभी अकल्पनीय घटना घट जाती है। दसवीं कक्षा का मेरा छात्र रामदास मेरे लिये ऐसी ही स्मृति छोड़ गया, जिसे मैं आजीवन भूल नहीं सकता।

महाराष्ट्र प्रान्त के अमरावती ज़िले में धामणगांव तहसील में एक छोटा-सा गांव है - 'तड़ेगांव दशासर'। वहां स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय अभी भी मेरी आँखों के सामने घूम रहा है। विद्यालय की बड़ी-बड़ी दीवारें और विशालकाय अनेक कक्ष बरबस ही याद आते हैं।

लगभग बाईस वर्ष की उम्र में नागपुर विद्यापीठ से मैंने अंग्रेज़ी में एम. ए. किया। परिणाम घोषित होते ही मुझे अमरावती ज़िला परिषद् के शिक्षा विभाग में शिक्षक की नौकरी मिल गई। मेरे पिताजी नागपुर के ज़िला कार्यालय में एक वरिष्ठ अधिकारी थे। उनसे आवश्यक आदेश-निर्देश लेकर मैं वहां नौकरी करने चला गया तथा दो वर्षों तक दसवीं कक्षा को अंग्रेज़ी पढ़ाता रहा। पश्चात् मुझे तड़ेगांव दशासर भेज दिया गया।

तड़ेगांव दशासर के विद्यालय की स्थापना अंग्रेज़ शासन के समय हुई थी और अंग्रेज़ों ने शिक्षा की दृष्टि से उस विद्यालय को आस-पास के छोटे-छोटे अनेक गावों से जोड़ लिया था। विद्यालय दसवीं कक्षा तक ही था और खासतौर पर दसवीं कक्षा हेतु अंग्रेज़ी के शिक्षक की आवश्यकता थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2\रामदास

जबसे मुझे नौकरी मिली तब से विवाह के लिए मुझ पर माता-पिता और बड़ी बहन का दबाव बढ़ता रहा। किसी तरह इस प्रस्ताव को मैं अगले एक वर्ष के लिए टाल गया।

मुझे तड़ेगांव दशासर पदोन्नति पर भेजा गया। वेतनवृद्धि के साथ-साथ मुझे सरकारी आवास भी मिल गया। परन्तु साथ-साथ मुझ पर एक अतिरिक्त कार्यभार भी लाद दिया गया। एक तो मुझे दसवी कक्षा का क्लास-टीचर बनाया गया और दूसरा पुस्तकालय के सचिव पद का भार भी सौंपा गया।

मेरी कक्षा में पैंतीस बच्चे थे। पर सभी गरीब परिवार के छात्र-छात्राएं थे। मासूम चेहरे; स्वाभाविक दृष्टिकोण; भविष्य में कुछ बनने की अभिलाषाएं; यह उन बच्चों के स्वभाव का वर्णन था। इनमें ग्यारह लड़कियां थीं-शेष लड़के थे। सभी छात्र-छात्राएं आदर्शवादी थे। पढ़ने-लिखने में भले ही कमज़ोर थे, परन्तु उनकी जिज्ञासा में कोई कमी नहीं थी। उनमें से एक लड़का बहुत चर्चित था। उसका नाम था 'रामदास'। हाज़िरी के समय अनुपस्थित रहना तथा पांच-पांच, सात-सात दिन विद्यालय नहीं आना उसके लिये बहुत सरल काम था। मैं देखना चाहता था कि वह कब तक विद्यालय नहीं आता है। 15 जुलाई को विद्यालय खुल गया था और 14 अगस्त तक जब वह विद्यालय नहीं आया तब मैंने उसकी शिकायत प्रधानाचार्यजी से की। वह बोले - "देखिए अध्यापक जी, रामदास के प्रति अधिक सोचकर आप अपना समय व्यर्थ न करें। एक छात्र के लिये पूरी कक्षा का नुकसान करना उचित नहीं है।"

एक दिन हम सभी अध्यापकों में रामदास की चर्चा चल पड़ी। उसके चरित्र के बारे में सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने क्या-क्या गुल नहीं खिलाए, सुनकर और सोचकर स्तंभित रह गया मैं।

रामदास एक आवारा लड़का था। उसके आचरण विश्वसनीय नहीं थे। वह बचपन से ही चरित्रहीन स्वभाव का था। विद्यालय से भागने के लिये खिड़कियों के शीशे तोड़ना, पढ़ने के लिये मजबूर करने वाले शिक्षकों पर हाथ उठाना उसके लिये सामान्य बातें थीं। एक बार तो उसने केवल इसलिये आम के पेड़ की टहनी काट दी कि प्रधानाचार्य जी ने आम तोड़ने से मना कर दिया था। उसने उन्हें डस्टर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी फेंक कर मारा। कारण था रामदास को विद्यालय के प्रांगण में घुसने के लिये मना कर दिया था, परन्तु सिर ऊंचा करके उसने तीसरी बार दसवीं कक्षा में दाखिला ले ही लिया था।

रामदास की काली करतूतें सुनने के बाद मेरा मन उसे देखने के लिये लालायित हो उठा। अब तो उसका सीधा संघर्ष मेरे ही साथ था।

हमारे प्रधानाचार्य उग्र स्वभाव के थे। इसलिये एक ही विषय पर उनसे बार-बार चर्चा करना मैंने उचित नहीं समझा। फिर गांव का मामला था। हाज़िरी का रजिस्टर महीने में दो बार उन्हें दिखाना पड़ता था।

रामदास की अनुपस्थिति देखकर उन्होंने कहा - "इस लड़के की मां को बतलाया तो था अध्यापक जी, परन्तु पता नहीं क्यों नहीं आई?"

मैंने पूछा - "क्या मैं उसके घर हो आऊं सर?"

उन्होंने कहा - "हां-हां, हो आइए आप। परन्तु थोड़ा सावधानी से, इस लड़के का पिता नहीं है। दो महीने पहले दमें की शिकायत से इसके पिता की मृत्यु हो गई। घर में मां ही होंगी। उनसे कहिए की लड़के को विद्यालय भेजना हो तो भेजिए, वरना उसका नाम काट देते हैं। साथ में विनायक को भी ले जाइए।"

प्रधानाचार्य जी से अनुमति मिलना मेरे लिये अधिक संतोषजनक था, क्योंकि रामदास की बुराई सुनकर मुझे उसके प्रति घृणा नहीं हुई, अपितु एक जिज्ञासा होने लगी कि रामदास है क्या?

2

'विनायक' हमारे विद्यालय के चपरासी का नाम था। मैंने विनायक को बुलाया और कहा - "तुम रामदास के घर जाकर उसे कहो कि कल से तुम्हें विद्यालय आना है।"

वह डर गया और बोला - "मैं उसके घर अकेले नहीं जाऊंगा सर। यदि आप चलते हैं तो मैं आपके साथ अवश्य आऊंगा।" वह भी मेरी हिम्मत को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ललकारना चाहता था। मैंने कहा - "ठीक है, मैं अभी एक पीरियड लेकर आ रहा हूं, फिर हम दोनों साथ चलते हैं।"

शाम को पांच बजे विद्यालय की छुट्टी हो गई थी। हम दोनों रामदास के घर पहुंच गए। उसका घर बहुत बड़ा था। वह एक ज़मीनदार का बेटा था। वह सौ एकड़ ज़मीन का मालिक था। घर में दस-पन्द्रह नौकर काम कर रहे थे। घर में 42 वर्ष की उसकी विधवा मां और वह, बस यही था उसका परिवार।

उसके घर को हवेली कहना अधिक उपयुक्त होगा। ऊंची-ऊंची दीवारों के बीच बने प्रायः बन्द अनगिनत कमरे और बीच में बड़ा आंगन। बीस बैल बंधे हुये थे, लगभग इतने ही गाय व बछड़े तथा सफेद रंग के ऊंचे-ऊंचे दो घोड़े भी थे। नौकर-चाकर जावनरो को दाना-पानी दे रहे थे।

विनायक ने एक नौकर से पूछताछ की। रामदास व उसकी मां दोनों घर पर ही थे। वह नौकर भीतर गया और लगभग दौड़ता हुआ बाहर आया। जल्दी से आंगन में उसने टीन की दो कुर्सियां रखीं और हम दोनों को बैठने के लिये कहा। हम बैठ गए। मैं काफी समय तक मकान व माहौल को देखता-परखता रहा।

थोड़े अन्तराल के बाद एक दूसरा नौकर पीने का पानी, कुछ नमकीन-बिस्कुट व दो कप चाय ले आया। हम दोनों अवाक् रह गये। मैंने उस नौकर से पूछा - "आप क्या काम करते हैं?" उसने कहा - "मैं खाना बनाता हूं।" मैं उससे आगे बात कर ही रहा था कि इतने में ही दूध जैसी सफेद साड़ी पहने एक भद्र महिला आई और बोली - "नमस्कार, अध्यापक जी।" उन्होंने मुझे दोनो हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मैं समझ चुका था कि यह रामदास की मां होंगी। मैंने भी दोनों हाथ जोड़कर उन्हें नमस्ते किया। बिना किसी भूमिका के उन्होंने कहा - "आप चाय लीजिए। रामदास नहा रहा है। वह अभी-अभी खेतों से आया है। मैं उसे अभी भेजती हूं।" इतना कहकर वह चली गई।

विनायक व मैंने जलपान किया और थोड़ी देर बैठे रहे। हम दोनों आपस में ही रामदास की आर्थिक परिस्थिति व दैनिक जीवन पर चर्चा करने लगे। विनायक ने सामने से रामदास को आते हुए देख लिया। वह मुझे हल्का सा संकेत करते हुए बोला - "वह देखिए सर, रामदास घोड़े की पीठ को सहला रहा है।" कौतुहल से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी नज़रें रामदास पर टिक गईं।

पहली नज़र में ही मैंने यह अनुमान लगाया कि इतना अच्छा लड़का, इसे खराब क्यों बताया जा रहा है। अच्छा-खासा उन्नीस वर्ष का जवान लड़का। सिर पर उसने सफेद कपड़ा बांध रखा था। मूछें बनवा रखीं थीं। उसका शरीर गठिला था, जो उसके नियमित व्यायाम की देन थी। उसकी आंखों मे तेज था। रंग हल्का सांवला था। कुल मिलाकर वह एक सुदर्शन व्यक्तित्व का स्वामी था।

धीरे-धीरे हल्के-हल्के पग भरता हुआ किसी धार्मिक नाटक के पात्र समान वह एक ऋषि कुमार की तरह हमारी ओर चला आ रहा था।

रामदास के व्यक्तित्व से उसकी चरित्रहीनता का आरोप सर्वथा अविश्वसनीय लगता था। उसके प्रति मेरे मन की पूर्व धारणाएं ढह गई और मैंने निश्चय किया कि रामदास से पता करना चाहिए कि वह चाहता क्या है? आते ही वह मेरे सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। तब तक एक नौकर उसके बैठने के लिये एक कुर्सी ले आया। लगता था वह कुर्सी रामदास की प्रिय कुर्सी हो। विनायक ने कहा - "बैठो रामदास! यह तुम्हारे नये शिक्षक हैं। तुमसे मिलने आए हैं।"

रामदास ने कहा - "धन्यवाद सर!" वह अब तक खड़ा ही था और शायद आदर-सम्मान की दृष्टि से वह अध्यापक के आदेश के बिना कुर्सी पर बैठना उचित नहीं समझ रहा था। जब मैंने उसे बैठने को कहा तब वह कुर्सी पर बैठा। वह नज़रें चुराकर कभी मुझे देखता, कभी विनायक की तरफ, तो कभी भावविभोर हो जाता।

मैंने पूछा - "क्या यह हो सकता है रामदास कि मैं तुम्हारे घर आऊं और तुम मुझे पत्थर फेंक के मारोगे? क्योंकि मैने ऐसा सुना है।"

वह हल्का सा मुस्कराया। बोला कुछ नहीं। विनायक ने कहा - "सर ने तुम्हारी इतनी बुराईयां सुनी हैं कि कहने लगे, मैं रामदास से उसके ही घर जाकर मिलूंगा।"

आगे मैंने कहा - "क्या तुम इतने बुरे हो सकते हो रामदास?"

मेरे प्रश्न पर वह बहुत देर तक सोचता रहा और मुस्कुराकर बोला - "गांव के लोगों ने और विद्यालय के अध्यापकों ने मुझे जीने का कभी मौका नहीं दिया।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने कहा - "मैं तुम्हें यह सुअवसर देना चाहता हूं, रामदास। तुम्हें कल से विद्यालय आना हैं। आओगे तो हां बोलो, और यदि नहीं आना है तो अभी मना कर दो।"

रामदास ने कहा - "सर, मैं कल से अवश्य आऊंगा। और मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आपके आदेशों का पालन करुंगा।"

3

रामदास के साथ मेरी पहली मुलाकात विश्वास में बदल गई। समय-समय पर शिक्षक द्वारा छात्रों के प्रति नम्रता रखना बहुत आवश्यक है। जब छात्र अपराध करते हैं तब वह शिक्षक को बहुत छोटा समझने लगते हैं। विद्यालय के हर अध्यापक को रामदास निचले स्तर का समझने लगा था। इस बात को शिक्षक वर्ग समझ नहीं पाया।

रामदास को सहानुभूति की आवश्यकता थी। रामदास ने आज तक जितने भी अपराध किये, उन पर वह पर्दा डालकर क्षमा की अपेक्षा कर रहा था। पर इस छोटे से कार्य के लिये कोई भी अध्यापक आगे नहीं आया।

आदेशानुसार रामदास प्रतिदिन कक्षा में आने लगा। एक सप्ताह तक मैं उसे गौर से निहारता रहा। उसमें छिपे दुर्गुणों को ढूंढता रहा। परन्तु मुझे कोई आभास नहीं मिला। क्या रामदास में आदर्श की ज्योति जग गई थी। क्या अपने पिता की मृत्यु के बाद वह आदर्शवादी बन गया था। क्या वह अपने नित्य व्यसन भूल गया था।

उस पर एकदम विश्वास करना कठिन था। सम्भव था कि इसमें उसकी कोई चाल हो। अन्ततः उसके प्रति सावधान रहना मुझे अत्यावश्यक लगा। रामदास में आए इन परिवर्तनों से मुझे एक अभूतपूर्व सुखानुभूति होने लगी। वह कक्षा में साफ-सुथरी वर्दी में समय से आता, बैठता और अध्यापकों को ध्यानपूर्वक सुनने लगता था। सारे अध्यापक उसकी प्रशंसा करने लगे थे। हां, एक बात जो मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अखरती थी वह यह थी कि अन्य लड़कों के साथ उसका उठना-बैठना, मिलना-जुलना प्रायः बहुत कम था।

लगभग एक सप्ताह बाद एक दिन वह मेरे पास आया और बोला - "सर, मेरे पास पुस्तकें और नोट-बुक्स नहीं हैं। यदि आप पुस्तकों की सूची दे दें तो मैं उन्हें खरीद लूंगा।"

मैंने उसे कहा - "दो दिन ठहरो, मैं तुम्हें अपने साथ शहर ले जाऊंगा और सारी नोट-बुक्स व पुस्तकें खरीदवा दूंगा।" वह सहर्ष मान गया। उसमें हो रहे परिवर्तनों से मुझे बेहद खुशी हो रही थी। मेरी खुशी का एक दूसरा कारण भी था। गांव के सीधे-सादे लोग, एक दूसरे के प्रति उनका निष्कपट व्यवहार, मां-बाप का बच्चों और छोटों के प्रति स्नेहिल आचरण आदि देखकर मेरा मन खुशी से गद्गद् हो जाता था।

जाने-अनजाने एक और आकर्षण भी मेरे मन में अंकुरित हो रहा था। वस्तुतः शिक्षक होने के नाते इसकी चर्चा करना अधिक उचित नहीं होगा, परन्तु सच्चाई से मुंह मोड़ना भी कभी-कभी असंभव हो जाता है।

मेरी कक्षा में एक सुन्दर-सी छात्रा थी। उसका नाम 'रंजना' था। जब भी मैं कक्षा में प्रवेश करता तो मेरी तरफ देखकर मुस्करा उठती थी। प्रायः मैं विस्मय से उसे निहारता रह जाता था।

पिछले दो वर्षों में अमरावती शहर के विद्यालयों में मेरे साथ कभी ऐसा नहीं हुआ। सुन्दर-सुन्दर छात्राएं वहां भी थीं। परन्तु रंजना नाम की इस ग्रामीण छात्रा में एक अद्भुत आकर्षण था और जाने-अनजाने में उसकी यह भूल मुझे अखरने लगी थी।

हिरणी की तरह ज्वलंत और सजग आंखें, कमल पुष्प सा गोलाकार, शुभ्र सुन्दर मुखाकृति और नवजात कोंपल जैसी लालिमापूर्ण उसकी त्वचा - यह था उसका बाह्य रूप और उसका स्वभाव भी सागर जैसा गंभीर था। छोटी सी उम्र उसकी, पर उसमें संस्कारों की अपार गंभीरता थी।

रंजना से अधिक बोलने का दुःसाहस मैंने कभी नहीं किया। वह मेरी छात्रा थी और मैं उसका शिक्षक। उसकी अपनी सुन्दरता उसके लिये थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कक्षा के सभी छात्र-छात्राएं मेरे लिये एक समान थे। केवल रामदास पर मैं विशेष ध्यान देने लगा था। अध्ययन में उसकी रूचि देखकर मैं खुश होता था और उसे उत्साहित करता था। कभी उसकी पीठ पर हाथ फेरता और कभी बड़े यत्न और प्रेम से उसकी त्रुटियों को समझता। कभी-कभी सामाजिक उपन्यास भी उसे पढ़ने के लिए देता। इस तरह वह धीरे-धीरे मेरे करीब आने लगा। उसके मन मे जो शिक्षा का भय था वह कम होने लगा।

एक दिन वह बिना किसी भूमिका के बोला - "सर, मैं आप से ट्यूशन पढ़ना चाहता हूं। आप मेरे घर आकर मुझे पढ़ाईए। मां ने कहा कि अध्यापकजी जो भी अपनी फीस चाहेंगे वह हम दे देंगे।"

संभवतः रामदास मुझे एक व्यावसायिक शिक्षक समझ बैठा। इसका आभास होते ही मेरे मन में जो झिझक थी वह समाप्त हो गई। एक ओर ले जाकर उसके कन्धे पर हाथ रखकर मैंने समझाया - "रामदास, शिक्षक मार्गदर्शन के लिये होते हैं व्यवसाय करने के लिये नहीं। तुम्हारे लिये मैं समय निकाल रहा हूं तो इसका कारण मात्र यह है कि मैं एक शिक्षक हूं और मैंने यह ठाना है कि मैं तुम्हें एक आदर्श विद्यार्थी बनाकर रहूंगा। आज हर कोई रामदास नाम नहीं जानता है। पर एक दिन हर कोई रामदास-रामदास कहेगा।"

रामदास का मुख नीचे हो गया। उसने एक ही वाक्य में उत्तर दिया - "सर मैं आप की आज्ञा का पालन करूंगा।" इतना कहते हुए उसने नम्रता पूर्वक हाथ जोड़े और नमस्ते कहकर घर की ओर जाने लगा।

4

रामदास की अध्ययन की तरफ रूचि बढ़ती जा रही थी। पर उसने पुस्तकें खोलकर कभी पढ़ी नहीं थीं। इसका कारण था कि उसका मन विचलित हो रहा था। वह हिन्दी, मराठी, अंग्रेज़ी कोई भी भाषा पढ़कर समझ नहीं पा रहा था। तब उसके चेहरे पर दयनीय अवस्था दिखाई देती थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दिन उसकी मां विद्यालय आई और रामदास को घर आकर पढ़ाने का निवेदन करने लगीं। मुझे विवश होकर हां कहना पड़ा।

मैं प्रतिदिन उसके घर जाता और उसे एक-डेढ़ घन्टा पढ़ाता। पांचवीं-छठी के बच्चे की तरह उसे समझाना पढ़ता था। वह पढ़ाई में बिल्कुल शून्य था। न तो ढंग से लिख सकता था और न ही आसानी से पढ़ सकता था। जब पढ़ाते-पढ़ाते एक महीना हुआ तब धीरे-धीरे उसमे काफी परिवर्तन आने लगे। जो मैं उसे कहता, वह अवश्य करता। बहुत कुछ तो वह अपने-आप भी करने लगा था। इसी कारण उसके प्रति मेरी रूची बढ़ती गई। मैं उसे निरन्तर पढ़ाता रहा।

विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में मेरा मन लग रहा था। विशेष रूप से विद्यालय एवं मेरी कक्षा के ग्रामीण व गरीब बच्चों के मासूम चेहरे देखकर मुझे ऐसा लगता था जैसे मुझसे जितनी भी मदद हो, वह मैं इनके लिये करूं।

सरकार की तरफ से इन बच्चों के लिये शिक्षा के नाम पर विद्यालय का भवन व शिक्षक ही उपलब्ध थे। परन्तु बच्चे न तो पुस्तकें खरीद पा रहे थे न ही शैक्षणिक सामग्री। उनका प्रतिदिन विद्यालय में आना नियमित था।

मेरी कक्षा में रंजना सबसे अलग थी। उसे धन की चाह न थी। इसी तरह रामदास था। रामदास भी धनी था, परन्तु ज्ञान व शिक्षा में पिछड़ा हुआ था।

मेरे एक महीने पढ़ाने से उसका अध्ययन क्रम बढ़ता चला गया। वह हिन्दी, मराठी व अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं को थोड़ा-थोड़ा समझने लगा था। अध्ययन में उसकी रूचि देखकर पाठ्यक्रम से बाहर की कुछ अच्छी पुस्तकें मैंने उसे खरीद कर दी। वह मन लगाकर पढ़ता और जहां आवश्यकता होती मुझसे पूछ लेता।

उसने अपने घर में एक अध्ययन कक्ष भी बना लिया था तथा अपनी रूचि के अनुसार उसमें रंग-रोगन, पर्दा आदि का विशेष प्रबन्ध किया। यह सब कुछ उसमें आए परिवर्तन का द्योतक था।

अब उसका रहन-सहन भी काफी बदल गया था। पहले की अपेक्षा वह अधिक साफ-सुथरा रहने लगा। उसकी मां मुझे बार-बार कहतीं - "अध्यापक जी आपने लड़के को कितना बदल दिया है। भविष्य में न जाने कितना बदलेगा। आज यदि उसके पिता जीवित होते तो उन्हें रामदास पर गर्व होता।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास की अच्छाई का श्रेय मुझे दिया जा रहा था। सम्पूर्ण गांव में यदि चर्चा थी तो मेरी, एक अध्यापक की, एक ग्रामीण विद्यालय में अंग्रेज़ी विषय पढ़ाने वाले शिक्षक की। मैं भी अपने आपको भाग्यशाली समझ रहा था।

शनिवार को विद्यालय आधा दिन का होता था। एक शनिवार को विद्यालय की छुट्टी होते ही मैं अपने निवास स्थान जाने लगा था कि मेरे सामने रंजना खड़ी हो गई। वह बहुत देर से मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने कहा - "सर, मैं आपसे अंग्रेज़ी का ट्यूशन पढ़ना चाहती हूं। पिताजी ने आपको घर पर बुलाया है। वे आपसे बात करना चाहते हैं। आप उन्हें मना नहीं करियेगा सर। बहुत-बहुत कृपा होगी आपकी।"

मैं उसकी तरफ देखता ही रह गया। सोचता रहा, हां कहूं या ना। हां इसलिये नहीं कह सकता था कि उसके घर जाकर पढ़ाने के लिये मेरे पास समय नहीं है। ना इसलिये नहीं कह सकता था कि अध्यापक विद्या से पीठ नहीं मोड़ सकता। इस हां-ना की कशमकश में अनायास ही मेरे मुंह से - "रविवार को आ जाऊंगा।" निकल पड़ा और उस दिन लगभग शाम के छह बजे मैं रंजना के घर पहुंच गया।

उस समय उसके घर में उसके पिताजी, मां, दादी मां और स्वयं वह उपस्थित थी। रंजना के पिताजी को सेठजी कहकर सम्बोधित किया जाता था। रंजना अपने माता-पिता की अकेली संतान थी।

रंजना के पिताजी अधिक चतुर मालूम पड़ते थे। उन्होंने मेरा अपेक्षा से अधिक सम्मान किया। मुझसे उन्होंने अनेक प्रश्न किये।

प्रश्न पर प्रश्न करते हुए कहने लगे - "अध्यापक जी, बेटी आप की बहुत प्रशंसा करती है। वह आप से अंग्रेजी पढ़ना चाहती है। आप घर आकर उसे पढ़ा दिया करें। पारिश्रमिक आप जो कहेंगे, जितना कहेंगे मिल जाएगा।"

प्रतिमाह लाखों रूपयों का व्यापार करने वाले सेठजी, भला मैं उनकी व्यापारिक भाषा से कैसे बच सकता था। मुझे उन्होंने रंजना को पढ़ाने हेतु पूरे सत्र के लिए अनुबंधित कर ही लिया।

दूसरे दिन से मैं रामदास को पढ़ाकर रंजना के घर जाने लगा। पहले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास को दो घन्टे पढ़ाता। पश्चात् रंजना के घर जाकर उसे पढ़ाता। यह क्रम चलता रहा और मेरी भी रूची बढ़ती गई।

5

रामदास-रंजना को पढ़ाते-पढ़ाते सात-आठ दिन हो गये थे। पता चला कि मेरा दैनिक टाइम-टेबल बिल्कुल खराब हो गया है। रंजना को पढ़ाने के बाद समय ही नहीं मिलता था। भोजनालय में बचा-खुचा खाना रह जाता था। वहां के कर्मचारी मेरी प्रतीक्षा करते-करते नाराज़ हो जाते थे। रात को जब मैं अपने कक्ष में पहुंचता तो थकान का अनुभव होने लगता।

रामदास और रंजना, इन दोनों के घरों में कितना अन्तर था। रामदास के घर में स्वतन्त्रता थी। रंजना के घर सोच-विचारकर जाना पड़ता था। रंजना का कक्ष रसोई घर के साथ था। वह पढ़ने में बहुत तेज थी। इसके विपरीत रामदास बहुत कमज़ोर था। रामदास को अंग्रेजी ग्रामर कुछ भी नहीं आता था। पर रंजना प्रश्न करते ही उत्तर देने लग जाती थी। जैसे - "सर, नाऊन पांच प्रकार के हैं - प्रॉपर नाऊन, कॉमन नाऊन, कलेक्टिव नाऊन, मैटेरियल अॅन्ड अब्सट्रैक्ट नाऊन। सर जेन्डर चार प्रकार के होते हैं - मॉसकुलिन, फेमीनाईन कॉमन एन्ड न्यूटर। सर, माडर्न इंग्लिश में केस (कारक) पांच प्रकार के होते हैं - द नॉमिनेटिव, द व्याकेटिव, द अब्जेक्टिव, द डेटिव एन्ड द जेनेटिव।" इसी तरह उसने अॅडजेक्टिव के आठ प्रकार बता दिये। वह अंग्रेजी शब्दो का उच्चारण शीघ्रता पूर्वक भी शुद्ध प्रकार से करती थी। बाद में पता चला कि रंजना को ट्यूशन की लालसा इतनी ही थी कि वह धारा-प्रवाह अंग्रेजी बोल सके तथा वाक्य रंचना कैसे की जाए इस कला से अवगत हो सके।

रंजना की रूचि पढ़ने-लिखने में अधिक थी। इसी कारण मेरा उत्साह भी निरन्तर बना रहा। उधर रामदास को जो मैं अधिक समय देता था उसमें कटोती करके रंजना को भी उतना ही समय देने लगा। कुछ दिनों बाद रंजना और उसके पिताजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को पता चला कि मैं रामदास को पढ़ाकर उनके घर आता हूं और वहीं अध्याय (लेखन) रंजना को पढ़ाता हूं। सेठजी ने कहा - "यदि यही बात है तो दोनो बच्चों को एक साथ बिठाकर पढ़ाने में क्या आपत्ति है।"

सेठजी की यही बात मैं भी बहुत दिनों से सोच रहा था। जिस दिन रामदास को पता चला उस दिन से वह मुझे शंकालु निगाहों से देखने लगा। यहां तक कि कक्षा में वह अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति भी करने लगा था। वह कभी मेरी तरफ तो कभी रंजना की तरफ देखता था।

जिस बात को मैंने कभी सोचा नहीं, वह बात नादान रामदास की बुद्धि में घर कर गई थी।

उसकी गलतफहमी दूर करना आवश्यक हो गया था। कहीं ऐसा न हो कि उसका मुझ पर से विश्वास उठ जाए।

अब मैं प्रतिदिन रामदास के पास देर रात तक बैठने लगा और मन लगाकर उसे पढ़ाने लगा। परिणामस्वरूप रंजना के घर देर से पहुंचने लगा। मेरे देर से आने-जाने का सिलसिला सेठ जी के व्यापारिक निगाहों से छिपा नहीं रहा। एक दिन उन्होंने अपने मन की बात कह ही दी - "आप उस लड़के को यहीं बुला लीलिए अध्यापक जी। दोनों को साथ-साथ पढ़ाने में आपको सुविधा भी होगी और आपके समय की बचत भी होगी। पहले माले पर आपके लिये एक कमरा खाली करवा देते हैं। वहां पर आप निःसंकोच बैठकर बच्चों को पढ़ा सकेंगे।"

पहले माले पर जीने से चढ़कर बहुत बड़ा कक्ष था। उसमें कबाड़ भरा हुआ था। सेठजी ने उसे खाली करवाया और सफाई करवाकर हमारे अध्ययन-अध्यापन के लिए दे दिया। मेज़ कुर्सियां एवं लाईट का विशेष प्रबन्ध किया।

दूसरे ही दिन मैंने रामदास से कहा - "कल से तुम रंजना के घर पढ़ने आया करोगे। वहां पढ़ाई अच्छी हुआ करेगी और साथ-साथ मेरा समय भी बच जाया करेगा।"

रामदास स्पष्ट शब्दों में मना कर गया। "मैं रंजना के घर पढ़ने नहीं आऊंगा सर।" उसके मना करने पर मैं सोच में पड़ गया। वह वहां क्यों नहीं आना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहता है? कहीं इसका कारण उसकी हीन भावना तो नहीं है? अपने बदनाम चरित्र के कारण वह न तो किसी के घर जाता था और न ही किसी का अपने घर आना पसन्द करता था। वह नितान्त अकेले ही रहना पसन्द करने लगा था। एक तरह से वह स्वयंकेन्द्रित हो गया था।

उसकी इसी हालत का आभास होते ही मेरा अध्यापकीय दृष्टिकोण जाग गया। उसकी हीन भावना को दूर करने का मैंने निश्चय कर लिया। तरह-तरह के उदाहरण देकर मैं उसे समझाने लगा। अन्ततः वह मेरी बात मान गया।

पहले दो-चार दिन मैं उसे अपने साथ ही ले जाता रहा। रंजना का सामना होते ही वह शर्मा जाता था। यह सिलसिला लगभग पांच दिनों तक चलता रहा और छठे दिन रामदास ने रंजना के घर आना बन्द कर दिया।

6

रामदास के रंजना के घर पढ़ने न आने का निर्णय उचित था या अनुचित? परन्तु मेरी समस्या ज्योंकि त्यों खड़ी हो गई। कक्षा में मैं उसे पूछता - "रामदास आप पढ़ने क्यों नहीं आए?" और हर बार वह यही कहता - "आज आ जाऊंगा सर।" मैं प्रतिदिन उसकी प्रतीक्षा करता था, परन्तु वह नहीं आता।

मैं एक दिन रंजना को पढ़ाते-पढ़ाते ट्यूशन बीच में ही छोड़कर रामदास के घर गया। वह एकान्त में अकेले ही मन लगाकर अध्ययन कर रहा था। उस समय मैं उसे बिना कुछ कहे चुपके से निकल आया।

दूसरे दिन मैंने उसे कक्षा के बाहर बुलाया तथा समझाने लगा। अपनी झिझक पर काबू पाने का प्रयास करते हुए वह कहने लगा - "सर, रंजना के घर आने में मुझे संकोच होता है। उसके साथ बैठकर पढ़ने में मुझे घबराहट होती है। वह आपके हर प्रश्न का उत्तर शीघ्र देती है। परन्तु जब मैं नहीं बता पाता हूं तो मुझे अपमानित जैसा लगता है। चाय तथा खानपान की वस्तुएं आती हैं तो वह सब बोझ सा अनुभव होता है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह बिना रुके कहता रहा - "सर, आप मुझे क्षमा कीजिए। मैं रंजना के घर पढ़ने नहीं आऊंगा। अपने ही घर जी-जान लगाकर पढ़ूंगा। आप बेशक रंजना को पढ़ाइए।"

उसकी एक-एक बात मुझे शूल-सी चुभती रही। वह कहता रहा और मैं अवाक्-निर्वाक् होकर सुनता रहा।

रामदास के निर्णय से मैं कई दिनों तक क्षुब्ध रहा। एक सप्ताह तक मैं उसके घर नहीं गया। किन्तु मन-ही-मन मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। क्या मैंने उसके साथ न्याय किया है? यह प्रश्न मुझे भीतर ही भीतर आघात कर रहा था। अंततः हिम्मत करके एक दिन मैं उसके घर जा पहुंचा और उसका हाथ पकड़कर उसे रंजना के घर ले आया।

इस उपक्रम के बाद ऐसा करना लगभग मेरी दिनचर्या बन गई। मैं प्रतिदिन उसके घर जाता और उसे अपने साथ रंजना के घर ले आता। कुछ ही दिनों में उसके अच्छे परिणाम सामने आने लगे। रामदास स्वयं रंजना के घर आने लगा व मन लगाकर पढ़ने लगा। पहले की अपेक्षा कक्षा में भी उसके व्यवहार में परिवर्तन होने लगा। वह अपना होमवर्क ठीक-ठीक करने लगा।

रंजना व रामदास, इन दोनों को साथ-साथ पढ़ाने से मेरा समय भी बचने लगा था और उन दोनों के अभ्यास क्रम में सुधार भी दिखाई देने लगा। रामदास के बाह्यरूप, रहन-सहन में तथा आचार-व्यवहार में आए परिवर्तन भी किसी से छिप नहीं रहे थें। अब वह सभ्यता से साफ-सुथरे कपड़े पहनने लगा था। रामदास मानवीय मूल्यों के व्यक्तित्व पर विशेष ध्यान देने लगा था, जिससे आकर्षण उत्पन्न होता था।

इस तरह एक अध्यापक की भूमिका निभाते हुए मैं विशेषकर रामदास की ओर अधिक आकर्षित हो गया था। रामदास की शैक्षणिक दयनीय अवस्था जैसे थी वेसे ही रंजना को छोड़कर कक्षा के अन्य बच्चों की थी। मैं उन बच्चों पर भी विशेष ध्यान दे रहा था।

जो कभी रामदास में थीं, वहीं बातें अन्य बच्चों में पाई जाती थीं। इसलिये रामदास उदाहरण समझ लेता था और दूसरे दिन वही अध्ययन बाकी बच्चों के साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करता था। गांव के भोले-भाले बच्चों की दयनीय अवस्था देखकर मुझे बहुत दया आती थी। परन्तु अपने धनी व्यवहार से रामदास तथा रंजना उन बच्चों से अधिक प्रसन्न व प्रभावशाली दिखाई देते थे।

सप्ताह के छह दिन कैसे निकल जाते यह पता हीं नहीं चलता। इसका एहसास भी हमें रविवार को ही हो जाता था। उस दिन सब की छुट्टी होती थी। एक दिन अचानक ही मेरे मन में आया कि क्यों न रविवार को घूमने-फिरने का कार्यक्रम बनाया जाए। यह प्रस्ताव मैंने रामदास के सामने रखा। वह तुरन्त राज़ी हो गया। परन्तु रंजना ने साथ आने में अपनी असमर्थता प्रकट की। इसके लिये उसे माता-पिता की अनुमति लेनी होती और हम दोनों के साथ-साथ वह भी जानती थी कि यह कदापि नहीं होगा।

एक रविवार को रामदास के साथ घूमने के लिये मैं चला गया। उसके यहां से दो घोड़े.लेकर हम दोनों गांव से दूर दस किलोमीटर के अन्तराल पर वर्धा नदी की बाढ़ देखने चले गये। सावन की हरितिमा से आच्छादित वातावरण बड़ा ही मनभावन एवं आखों को लुभाने वाला था। नदी का पानी किनारों के ऊपर बह रहा था। रामदास कहने लगा - "सर बाढ़ के पानी का तो रंग ही नहीं दिख रहा है। जब बाढ़ समाप्त हो जाती है तो नदी का यही पानी शीशे की तरह चमकने लगता है।" आगे वह बोला - "सर, मेरे मामाजी का गांव नदी के उस पार है। हम इस नदी में तैरते हैं, खूब डूबकियां लगाते हैं, तब आगे जाते हैं।" मैंने कहा - "रामदास नदी में डुबकियां लगाना, तैरना, अच्छी बात नहीं है। अनजान जगह पता नहीं चलता कि भंवर कहां है।"

7

मेरी बात को रामदास ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना। संभवतः मन ही मन उस पर मनन करता हुआ वह घोड़ों को बारी-बारी दो अलग-अलग पेड़ों से बांध आया। तत्पश्चात् हम अपने-अपने जूते उतारकर नदी के किनारे खड़े हो गये एवं हाथ-मुंह धोने लगे। पश्चात् हम एक ऊंचे से टिले पर आकर खड़े हो गये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कांदेगांव से होकर छोटे-छोटे गांवों से आगे निकलती हुई वर्धा नदी मन्द-मन्द भावों से बह रही थी। नदी के उस पार बसे गांव ऐसे लग रहे थे मानों हरे-भरे पेड़ों की झुरमुट में सैलानियों के लिऐ ग्रामीण शिविर लगाए गए हों। यह सब देखकर मैं मन-ही-मन सोचने लगा कि हर छुट्टी के दिन यहां आना चाहिए।

अचानक रामदास बोला - "सर, चलिये मैं आपको एक ढाबे पर ले चलता हूं। वहां चाय पियेंगे।" उसके कहने के भाव से ऐसा लगता था कि ढाबा कहीं निकट ही है। जब हम वहां पहुंचे तो कुछ ग्रामीण एक बेंच पर बैठे हुए थे। हमारे सम्मान में वे बेचारे उठकर खड़े हो गए और हम दोनों को बैठने के लिए स्थान दे दिया।

चटनी और हरी मिर्च के साथ हम दोनों ने दो-दो प्लेट पकौड़ियां खाई, पानी पिया तथा चाय पी। आधे घन्टे बाद घोड़ों को पानी पिलाकर सूरज डूबने से पहले हम लोग घर की ओर चल पड़े। प्रायः हर रविवार को हम ऐसा ही करने लगे थे।

समय तीव्र गति से भाग रहा था। रामदास की मेरे प्रति जिज्ञासा तथा आत्मविश्वास को देखकर मैं प्रायः सोचा करता था कि रामदास के लिये ही मैं शिक्षक बनकर आया हूं।

रामदास और रंजना को पढ़ाते हुए मुझे दो माह हो चुके थे। उन दोनों ने अपने अध्ययन में बहुत ही विश्वास के साथ बढ़ोत्री कर ली थी। वह दोनो साथ-साथ बैठकर अध्ययन करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास नहीं था। रामदास को अपने साथ बैठे हुए रंजना पसंद करेगी, इसका भी मुझे विश्वास नहीं था। भले ही रामदास रंजना के सामने झेंप कर रहता था। वे दोनों मेरे सामने चुपचाप बैठे रहते थे। उन दोनो को मैंने कभी आपस में बातचीत करते हुए भी नहीं देखा था। उन्हें जो कुछ मैं पूछता वे उसका उत्तर दे देते थे। किसी विषय पर आपस में वाद-विवाद करते हुए भी मैंने उन्हें नहीं देखा। उनकी पारस्परिक चुप्पी को समझने के लिए मैने कभी अपनी ओर से प्रयास नहीं किया।

पर कभी-कभी मुझे उन दोनों पर शक होता था। मैं सोचने लगता था कि क्या कारण है कि वे एक-दूसरे का नाम अपने होंठों पर नहीं लेते हैं, न ही कभी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे सामने एक-दूसरे की चर्चा करते हैं। इसका रहस्य क्या है? यह जानने की इच्छा या उत्सुकता मैंने कई बार महसूस की।

कक्षा में कई बार ऐसा हुआ कि वे दोनों एक-दूसरे को छिपी निगाह से देखते पाए जाते और जब कभी उनकी आंखे मिल जातीं, वे मुस्कुराकर गर्दन नीचे कर लेते।

एक दिन कक्षा में पढ़ाते-पढ़ाते मैं रामदास के पास जाकर खड़ा हो गया। अचानक मेरी नज़र उसकी उंगली पर पड़ी जिसमें पीले रंग के नग की एक अंगूठी थी। वास्तव में यह अंगूठी रंजना की थी। मैंने रंजना को सदा दो अंगूठियां पहने पाया था। एक सफेद रंग के नग की और दूसरी वह जो उस समय रामदास पहने हुआ था।

शंका समाधान के लिये पढ़ाते-पढ़ाते मैं रंजना के पास भी गया। उस समय वह मात्र एक ही अंगूठी पहने हुए थी। ज़ाहिर था कि उन दोनो में वस्तुओं का आदान-प्रदान शुरू हो चुका था। दूसरे शब्दों में उनमें घनिष्ठता आ रही थी। शाम को ट्यूशन के समय रंजना की उंगलियों पर मेरी पुनः नजर पड़ी। उस समय दोनों अंगूठियां उसकी उंगली में विराजमान थीं।

इसी तरह एक और बात की ओर भी मेरा ध्यान गया। जब भी मैं रामदास की कॉपी चैक करता, उसमें जगह-जगह सुधार किया हुआ दिखाई देता। वह कांट-छांट रंजना के हाथों की हुई होती थीं।

एक बार लगातार तीन दिन की छुट्टियां पड़ी। दिन थे शनिवार, रविवार और सोमवार। दो दिन तो मैं रामदास के साथ पढ़ाई-लिखाई में व्यस्त रहा। अगले दिन अर्थात सोमवार को राष्ट्रीय त्यौहार था। इसलिये मैंने रामदास को उसदिन छुट्टी रखने के लिए कह दिया। त्यौहार के दिन मुझे रामदास व रंजना दोनों के घर भोजन के लिये निमंत्रित किया जाता था। यह लगभग परिपाटी सी बन गई थी। यथानुसार दोपहर का भोजन मैंने रंजना के घर किया और अपने गेस्ट हाऊस आकर सो गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

8

लगभग चार बजे मेरी आंख खुली। हाथ-मुंह धोकर मैंने चाय पी और समाचार-पत्र लेकर बैठ गया। पर तुरन्त ही एक विचार मेरे मन में आया। क्यों न रामदास के साथ हनुमान मंदिर जाया जाए। कपड़े बदलकर मैं रामदास के घर पहुंचा। वह घर पर नहीं था। मैंने नौकर से पूछा - "रामदास कहां है?" उत्तर मिला - "वह खेतों की तरफ गया है।" मैं सोचता रहा, अब क्या करें? मैंने नौकर से कहा - " तुम घोड़े को सजाकर दे दो, मैं भी खेतों की तरफ जाऊंगा।"

नौकर ने गद्दी एवं साज़ लगाया। घोड़े पर बैठकर गांव के बाहर आ गया। रामदास के खेतों का रास्ता मुझे पता था। क्योंकि मैं उसके साथ दो-तीन बार वहां हो आया था। परन्तु न जाने क्यों उस दिन घोड़ा रास्ता बदलकर चलने का प्रयास कर रहा था। काफी समय तक वह मुझे चक्कर कटवाने में उधेड़ बुन करता रहा। बहुत देर तक वह मेरे काबू में नहीं आया। मोहल्ले के छोटे-छोटे बच्चे चारों तरफ इकट्ठा हो रहे थे। मैंने सोचा यह घोड़ा अपनी मर्ज़ी से जहां जाना चाहता है उधर ही चलना चाहिए। क्योंकि बच्चों की भीड़ क्रमानुसार बढ़ती जा रही थी।

जैसे ही मैंने उसकी लगाम ढीली छोड़ी, घोड़े ने अपनी गर्दन को एक झटका दिया और धीरे-धीरे अपनी गति को तेज़ करके भागने लगा। उसने रास्ता बिल्कुल बदल दिया था। मैं पूर्व की ओर जाना चाहता था परन्तु घोड़ा दक्षिण दिशा की ओर सरपट दौड़ रहा था।

जिस रास्ते से घोड़ा दौड़ रहा था, वह रास्ता धामणगांव शहर की तरफ जाता था। गांव से तीन किलोमीटर दूर रास्ते के एक तरफ रंजना अर्थात् सेठजी के खेत और बाग थे। बाग में अंगूर, आम, अमरूद, संतरा, मौसमी, बेर आदि सभी प्रकार के वृक्ष थे। जैसे-जैसे बाग निकट आने लगा घोड़ा जोर-जोर से हिनहिनाने लगा और अपनी गति को तेज़ करने लगा। अचानक वह एक ओर मुड़ा और ज्वार के खेत में प्रवेश कर गया।

घोड़े की इस मनमानी से मुझे बहुत क्रोध आया। परन्तु क्षण भर में ही मेरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रोध जाता रहा। क्योंकि जो कुछ मैं देख रहा था, वैसा मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था।

रंजना और रामदास संतरों के पेड़ों की दो कतारों के बीच में चहल कदमी कर रहे थे। मैंने झटके के साथ पूरी ताकत लगाते हुए घोड़े की लगाम खींची। लगाम खींचते ही घोड़ा ठिठककर खड़ा हो गया। एक बार वह हिनहिनाया भी। उसकी जानी-पहचानी हिनहिनाहट सुनकर रामदास ने मुड़कर भी देखा। किन्तु उस पर उसने विशेष ध्यान नहीं दिया। घोड़े ने रामदास को नज़र भर देखा और फिर शांत होकर खड़ा हो गया।

उनका और मेरा फासला अधिक नहीं था। मैं ऐसे स्थान पर जाकर खड़ा हो गया जहां उनकी नज़र मुझ पर न पड़ सके। वे दोनों वार्तालाप में मग्न थे। रामदास के हाथ उसकी पैन्ट की जेब में थे। वह सफेद पैन्ट व सफेद शर्ट पहने हुए था। रंजना भी सफेद स्कर्ट व सफेद ब्लाऊज़ में थी। उसने अपनी सैन्डिल हाथ में पकड़ी हुई थी। शायद सैन्डिल का फीता टूट गया था। मैं सोचने लगा कि जो लड़की कालीन पर भी चप्पलें पहनकर चलती है वही आज खेतों में कांटे, कंकर, पत्थर और मिट्टी के ढ़ेलों पर निःसंकोच चल रही है।

जब वे मेरी आंखों से ओझल हो गए, मैं घोड़े पर बैठा और उसकी लगाम खींची। वह उस दिशा में जाने का प्रयास करने लगा जिधर रामदास-रंजना गए थे। मैं इस प्रयास में था कि उन दोनों को पता नहीं चलना चाहिए कि मैंने उन्हें देख लिया है। कहीं वे यह न समझे कि मैं उन्हें छुप-छुप कर देख रहा हूं।

खुफिया विभाग के खोजी कुत्ते जैसे अपराधी को ढूंढ निकालते हैं, उसी तरह रामदास का घोड़ा उसके पदचाप को सूंघते हुए मुझे वहां तक ले गया था। मैं घोड़े से उतरा और उसके नाक के पास की रस्सी को पकड़कर पैदल ही ज्वार के खेत से बाहर आ गया। जब पगडंडी शुरू हुई तब मैं घोड़े पर बैठ कर उसे गांव की ओर भगाने लगा। घोड़ा कुछ ही क्षणों में रामदास के घर के सामने आकर खड़ा हो गया। घोड़े के हिनहिनाने का स्वर सुनकर रामदास का नौकर दरवाजे के बाहर आ गया। घोड़े की लगाम उसके सुपुर्द कर मैं अपने गेस्ट हाऊस चला आया।

उस दिन रातभर मुझे नींद नहीं आई। ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरी अमूल्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वस्तु को नुकसान पहुंचाया हो। ऐसा लगा जैसे मुझे शारीरिक क्षति पहुंची हो।

उन दोनों का इस तरह अकेले में घूमना-फिरना और वह भी ऐसे निर्जन स्थान पर, यह कोई साधारण बात नहीं थी। फिर रंजना के घर से उसे अनुमति मिलना भी कोई आसान काम न था। तो क्या रंजना झूठ बोलकर रामदास के साथ बागों में घूमने-फिरने गई थी? मैंने उसे कभी झूठ बोलते हुए नहीं सुना था।

9

मैं बहुत गंभीरता से सोचता रहा। एक ओर एक सत्य सृजन हो रहा था। उस सत्य सृजन से मेरी अवमानना अवश्य होगी। इसके लक्षण मुझे साफ दिखाई दे रहे थे। रामदास और रंजना का यह मेल-जोल मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरे मन के भीतर कसक रह गई है, ऐसा आभास मुझे बार-बार होने लगा। मुझे ऐसा लगने लगा जैसे कि संभवतः मेरी अग्निपरीक्षा आरंभ हो गई हो।

जब भी मैं एकान्त में होता, मेरे सामने रामदास व रंजना की छवि खड़ी हो जाती थी। एक अध्यापक के प्रति कैसे आचरण होने चाहिए, रंजना जैसी सभ्य छात्रा भी इसे भूल रही थी। क्या उसने रामदास को अपना जीवन साथी चुनने का निर्णय ले लिया है? . . . क्या उसे यह अहसास नहीं है कि यदि सेठ जी को इस बात का पता चल गया तो उसे व रामदास को कैसे-कैसे परिणाम भुगतने पड़ेंगे?

मंद बुद्धि का रामदास, कक्षा में तो वह मेरा विद्यार्थी था। परन्तु व्यावहारिक जगत में उसे मैं अपना छोटा भाई समझता था। हम दोनों के सम्बन्ध बहुत मधुर हो गए थे। वह हर समय मुझे सम्मान देता था। हर बात पर उसकी मेरे लिये प्राथमिकता थी। वह हर सुअवसर पर मुझे मात्र अध्यापक समझने का ही प्रयास करता था। विद्यार्थी अध्यापक को अध्यापक समझे, यह गुरू-शिष्य के सम्बंधों की विशेषता है। पर रंजना के साथ अपने प्रेम सम्बन्धों को मुझ से छुपाकर वह मेरे साथ ज़्यादती कर रहा है, ऐसा मेरा मानना था। वह नादान बालक नहीं था। उसे अच्छे-बुरे की समझ थी। कक्षा में वह बेशक मुझसे बात नहीं करता, परन्तु ट्यूशन के समय थोड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुत हंस लेता। यह सब मेरे प्रति प्रेम की प्रगाढ़ पहचान थी। परन्तु अध्यापक की नज़रें बचा कर उसने रंजना से प्रगाढ़ दोस्ती कर ली थी, यह भविष्य के लिये हानिकारक था।

वह रामदास जिसे मैंने कीचड़ से निकालकर कमल की तरह खिलाया, क्या वह पुनः कीचड़ में धंसने का प्रयास कर रहा था? उसे मैंने सत्य, आदर्श और ज्ञान का पाठ पढ़ाया। परन्तु क्या वह असत्य, अवमानना तथा अज्ञानता की ओर चला जा रहा था?

मुझे रंजना से शिकायत नहीं थी। शिकायत तो रामदास से थी। रामदास आदर्श विद्यार्थी बनकर रहे, यही मेरी कामना थी। मन कर रहा था कि कल से रामदास को ट्यूशन पढ़ाना बन्द कर दूं। पर यह इतना आसान नहीं था। वह यही सोचता रहेगा कि रंजना के साथ मेरा घूमना-फिरना सर को अच्छा नही लगा। इसलिये उन्होंने मेरी छुट्टी कर दी। . . . और अब रंजना को अकेले पढ़ाना सर को अच्छा लग रहा है।

रामदास को किसी भी कारण से मैं अपने से अलग नहीं रखना चाहता था। रंजना भी मेरे सामने अकेले नहीं बैठ सकती थी। कई मौकों पर मैंने पाया था कि वह पढ़ाई से अधिक महत्व रामदास को देती थी। जैसे जब कभी रामदास देरी से आता था तो वह बार-बार घड़ी की तरफ देखा करती थी।

मैं उन दोनों की ट्यूशन भी बंद नहीं कर सकता था। ऐसा करने से मुझ पर तरह-तरह के आरोप लगाए जाते। कुल मिलाकर मैं एक धर्मसंकट में फंस गया था। इसी उधेड़बुन में छुट्टियों के बाद मैं सदा की भांति ट्यूशन पढ़ाने फिर गया। वे दोनो पहले से आकर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे पहुंचते ही ससम्मान खड़े होकर मुझे 'नमस्ते सर' कहा। प्रत्युत्तर में मैंने भी उन्हें नमस्ते कहा।

मैं अपनी कुर्सी पर बैठ गया। बैठने के साथ ही अंग्रेजी व्याकरण की पुस्तक निकालकर उन्हें आब्जेक्टिव (संज्ञा-विशेषण) पढ़ाने लगा। कुछ देर तक पढ़ाई चलती रही। मैं उन दोनों की तरफ बार-बार सन्देह की दृष्टि से देख रहा था। अब किसी प्रमाण की आवश्यकता तो रही नहीं थी कि वे दोनों मेरे सामने चुपचाप क्यों रहते हैं?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन दोनों के बारे में मुझसे अधिक जानकारी शायद माई को थी। अधेड़ उम्र की माई रंजना की निजी सेविका थी। उसे केवल रंजना के व्यक्तिगत कार्य हेतु रखा गया था। वह ट्यूशन के कमरे में चाय-कॉफी लाने, बर्त्तन ले जाने आदि कामों के लिए आया-जाया करती थी। परन्तु इस सम्बन्ध में माई से चर्चा करना मैंने उचित नहीं समझा।

पढ़ाते-पढ़ाते अचानक मेरे हाथ से पैन नीचे गिर गया। रामदास पैन को उठाने के लिए खड़ा हो गया। मैंने उसे रोका - "तुम लिखते रहो, मैं पैन् उठा लूंगा।" कुछ देर के बाद जब मैं स्वयं उस पैन को उठाने के लिये झुका तो मेरी नज़र उन दोनों के पैरों पर पड़ी। उन दोनों के पैर एक-दूसरे के पैरों को छू रहे थे। मानो दोनों सचेत रूप से अपनी तरफ से ऐसा करने का प्रयास कर रहे थे। यह सब देख कर मुझे बहुत क्रोध आया। परन्तु मैं करता भी क्या? इसमें दोनों की सहमती थी। मैं इसमे दखल कैसे दे सकता था। मैं चुप रहा और मन-ही-मन सोचने लगा।

आगे अवश्य ही कोई बहुत बड़ा संकट पैदा होगा। इन सबके भावी परिणाम में मेरा अनादर होगा। यह निश्चित था।

10

मैंने निर्णय ले लिया कि रामदास से एकान्त में वार्तालाप करके इस विषय पर चर्चा करनी चाहिए। उन दोनों को साथ-साथ पढ़ाना अभिशाप बन गया था। उस दिन उन दोनों की ट्यूशन समाप्त कर मैं अपने गेस्ट हाऊस तो आया पर मुझे रात भर नींद नहीं आई। वे दोनों मेरे सामने आपस में बातचीत तो नहीं करते थे पर प्रेम प्रसंग में बहुत आगे निकल चुके थे।

अगले दिन सुबह के आठ बजे अपने गेस्ट हाऊस पर रामदास को आने को कहा। दूसरे दिन वह निर्धारित समय पर पहुंच गया। डरा-डरा सा घबराया हुआ। मैं नहा-धोकर तैयार हो रहा था। आते ही उसने नमस्ते किया और पूछा - "कहिए सर, आपने कैसे याद किया?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने कहा - "आओ बैठो रामदास। आज तुमसे बहुत आवश्यक बात करनी है।" वह आकर कुर्सी पर बैठ गया। पहले हम दोनों ने साथ-साथ नाश्ता किया। तत्पश्चात बातचीत का क्रम शुरु करते हुए मैंने कहा - "रंजना के साथ तुम्हारे कोई प्रेम सम्बन्ध चल रहे हैं?" यह सुनते ही उसने अपनी गर्दन नीचे कर ली। वह बहुत देर तक चुप रहा। मैंने फिर पूछा - "रामदास, शायद मेरा अनुमान गलत तो नहीं है?"

बहुत देर तक सोचता रहा और फिर वह सोचकर मेरे प्रश्न का उत्तर देने लगा - "सर! प्रेम क्या है यह तो मैं नहीं जानता पर इतना तो जरूर है कि रंजना और मैं, हम दोनों में लगाव हो गया है।"

"यह लगाव साधरण नहीं है रामदास। यदि तुम्हारा नाम उसके साथ जुड़ गया और उसके पिताजी को पता चल गया तो जानते हो क्या अन्जाम होगा? तुम्हें तो नादान बच्चा समझकर माफ कर दिया जाएगा और इसके सारे आरोप मुझ पर रख दिये जाएंगे। तुम्हें भी घर में घुसने नहीं दिया जायेगा और पूरे गांव में तुम्हारे साथ मुझे भी बदनाम किया जाएगा। क्या तुम ऐसा चाहते हो?"

रामदास बिल्कुल निरूत्तर हो गया। थोड़ी देर शांत रहकर उसने एक लम्बी सी सांस ली और हिम्मत बटोर कर कहने लगा - "सर, मैं नहीं चाहता हूं कि ऐसा हो, मेरे कारण आपकी बदनामी हो। ऐसा मैंने कभी सोचा भी नहीं सर। जब की बदनामी से मुझे बहुत डर लगता है। सर, इसीलिये मैं कल रात भर नहीं सोया। मैं डरता रहा और सोचता रहा कि सर ने मुझे किसलिये बुलाया होगा? परन्तु मैं क्या करूं। मुझसे रहा नहीं जाता। शाम-सवेरे, दिन-दोपहर, मैं रंजना को ही याद करता हूं। जिस कक्ष में हम तीनों बैठते हैं, वही कक्ष हर समय मेरी आंखों के सामने घूमता रहता है।"

रामदास बोलता ही गया - "सर! मैं क्या बताऊं। पहले मैं रंजना के सामने बैठता था तो मुझे शर्म आती थी। मेरे मैले-कुचैले कपड़े अजीब-अजीब से मालूम पड़ते थे। साफ-सफाई से रहना मेरी आदत नहीं थी। धूल से भरा काला चेहरा साफ करना, यह भी मुझे याद नहीं था। परन्तु यह सब रंजना की मेहरबानी है। आज जो भी हूं, रंजना के साथ रहने की वजह से हूं। आपकी तरह वह भी मुझे समझाती रहती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है, मार्गदर्शन करती रहती है। क्या मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए सर? पर इसका सारा श्रेय आपको ही जाता है। मुझ में जो परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, यह सब आप की ही कृपा से है। आप के उपकार मैं जीवन भर भूल नहीं सकता।"

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए फिर रामदास बोला - "सर, आप मुझे सज़ा दें या क्षमा करें, रंजना मेरे साथ जो भी कर रही है वह नैतिक है, अपराध नहीं। वह निस्वार्थ कर रही है। सरल रूप से वह आपका अनुकरण कर रही है। जिस तरह से आप मेरे साथ सहानुभूति रख रहे हैं, उसी तरह वह भी मेरे साथ सहानुभूति रख रही है।"

रामदास के स्वर में बिखराव था। वह रुक-रुक कर बोल रहा था। आगे उसने कहना आरम्भ किया तो संवेदना भरे शब्दों में कहने लगा - "सर! अब तो जब तक मैं ट्यूशन के लिए नहीं जाऊं, तब तक मुझे चैन नहीं आता है। . . . और मैं एक-एक मिनट प्रतीक्षा करता रहता हूं कि शाम कब होगी और कब मैं रंजना के घर जाऊं। ट्यूशन के लिये आप आते हैं उसके एक घन्टा पहले ही मैं पहुंच जाता हूं और आप ट्यूशन लेकर चले जाते हैं उसके बाद भी रंजना देर तक मुझे बिठाकर रखती है। मेरा मन भी उसके पास से उठने को नहीं करता।"

वह कहते जा रहा था और मैं उसके भोलेपन को सुन रहा था। अपने मन की अभिव्यक्ति दर्शाते हुए रामदास आगे बोला - "रंजना चाहती है कि मैं रोज़ प्रेस किये हुए कपड़े पहनकर आऊं। वह चाहती है कि मेरे जूते शीशे की तरह चमकते रहें। मेरे दांत दूध की तरह सफेद दिखाई दें। मैं समझता हूं कि रंजना मेरे लिये प्रेरणा है। हम दोनों डरते हैं तो मात्र आप से। इसलिये कि हम दोनों आप का सम्मान करते हैं। आपकी इज्जत करते हैं।" रामदास जो कुछ कह रहा था वह बिल्कुल सत्य था पर इस सत्य के पीछे जो ज्वाला भड़क उठेगी इसका उसे ज्ञान नहीं था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11

रामदास ने साफ-साफ शब्दों में अपनी गलती मान ली। परन्तु उसने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि यह सब इसलिये हो रहा है कि रंजना उसे प्रेरित कर रही है। पढ़ाई-लिखाई एवं गहन अध्ययन के स्थान पर उन दोनों ने अपने प्रेम-प्रंसग को ही प्रधान विषय बना लिया था।

विद्यार्थी जीवन में ऐसे प्रेम-प्रसंग अच्छे नहीं माने जाते हैं। इसमें प्रेम कम और एक दूसरे के प्रति आकर्षण के भाव अधिक होते हैं। यही कारण है कि ऐसे प्रसंगों की इतिश्री सुखद नहीं होती है। परन्तु यह सब पेचिदगियां उन्हें कौन समझाए। समझाने पर भी क्या वे समझ पाएंगे?

उनका प्रेम-प्रसंग और आगे न बढ़ पाए इसके लिये मैं सजगता से प्रयत्नशील था। उन्हें डाट-डपट के कुछ हासिल कर लूंगा ऐसी संभावनाएं कम थी। रामदास शायद मान भी जाए, परन्तु रंजना नहीं मानेगी। वह पक्के इरादे की लड़की थी।

क्या सेठजी को सब कुछ साफ-साफ बता दिया जाए? ऐसा करना भी मुझे उचित नहीं लगा। क्योंकि इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि उन्हें उनके माता-पिता के नज़रों से गिराना। एक शिक्षक के नाते ऐसा करना मुझे उचित नहीं लगा।

इस समस्या को लेकर मैं मन-ही-मन घुलने लगा, चिड़चिड़ा हो गया। एक मानसिक वेदना ने मुझे ग्रस लिया था। उन दोनों के प्रति मैं उदासीन हो गया था।

पर गलती मेरी थी। मैं भूल गया था कि एक शिक्षक का दायित्व क्या होता है? मैं यह भी भूल गया था कि मैं एक अध्यापक हूं और कक्षा के छत्तीस बच्चों का भविष्य मेरे हाथ में है। मेरी कक्षा में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चे गरीब थे। न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि स्वभाव से भी। किन्तु उन बच्चों के मां-बाप की पूरी आस्था मुझ में थी। इसलिये की उनके बच्चों का भविष्य अवश्य ही सुखद व सुन्दर होगा।

रंजना इसका अपवाद थी। वह शौक से ट्यूशन ले रही थी। अंग्रेज़ी विषय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में वह सदा ही अच्छे अंकों से पास होती थी।

धीरे-धीरे मैंने रामदास व रंजना के प्रति घनिष्ठता दिखाना बंद कर दिया। उनकी ओर मैं उतना ही ध्यान देने लगा जितना आवश्यकता थी। फलस्वरूप कक्षा के अन्य बच्चों के साथ अचानक ही लगाव होने लगा। इसी क्रिया से वे दोनों मुझे उदास-उदास दिखाई देने लगे। यह भी मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। क्योंकि उन दोनों के साथ मैंने कक्षा में बोलना भी बंद कर दिया था। रामदास से कभी-कभार पूछताछ कर भी लेता था पर कुछ दिनों के बाद धीरे-धीरे उसे भी छोड़ दिया।

समय पर ट्यूशन लेने जाता और समय पर ही उठकर चला आता। रंजना के घर रामदास कब तक बैठा रहता है, कब आता है, कब जाता है, इसकी कोई छानबीन नहीं करता। उन दोनों के प्रति उतना सोचना उचित नहीं था जितना कि मैं सोच रहा था। यदि वे दोनों एक-दूसरे से प्रेम कर रहे हैं तो यह संसार की पहली घटना तो थी नहीं।

सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उन दोनों का प्यार एक तरफा नहीं था अपितु दो तरफा था। ऐसे सम्बन्धों को तोड़ने का प्रयास प्रायः निरर्थक होता है। यह तब तक चलता या बंद होता है, जब तक दोनों प्यार करने वाले वैसा करना स्वयं निर्धारित न कर लें।

अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करते हुए मैंने स्वंय के लिए एक रणनीति निर्धारित की। इसका असर रामदास व रंजना दोनों पर भी पड़ने लगा। खासकर रंजना पर। दिन प्रतिदिन मैं रंजना से कम बोलने लगा था, उसके सामने अपने हावभाव निराशा से दिखाता। मैं बात-बात पर अपनी नाराज़गी जाहिर करने लगा।

पर इसका प्रभाव रंजना के मन पर शीघ्रता से हुआ। वह लड़की समझदार थी। हर बात को वह झटसे भांप लेती थी। इस दौरान उसने मुझसे कई बार कहा - "सर! आप हमसे नाराज़ रहने लगे हैं। हमसे कोई भूल हो गई है क्या? यदि ऐसा हो तो हमें अवगत करना चाहिए सर!" उसने इस प्रकार की अनेक बातें अनेक बार की पर मैं अनसुना कर देता। फलस्वरूप वह बड़ी शालीनता और संयम से पेश आने लगी थी।

जब भी मैं ट्यूशन हेतु उसके घर आता, वह पहले से ही दरवाज़े पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वागत के लिए खड़ी होती। ट्यूशन समाप्त होते ही मैं जैसे घर जाने लगता, वह दरवाज़े तक छोड़ने आती। मेरे आने के साथ ही गुड इवनिंग सर कहना उसकी आदत सी बन गई। उसका आचरण व व्यवहार उसके सभ्य एवं आदर्शता का परिचय दे रहा था।

एक दिन वह बहुत ही भावुकता से बोली - "सर! हम आप के छत्रछाया में पढ़ रहे हैं। यदि हमसे कोई भूल हुई हो तो उसके लिए क्षमा कर दीजिएगा। रामदास और मैं एक परिवार के सदस्यों की तरह रह रहे हैं, यह शायद आप पसन्द नहीं कर रहे होंगे? पर हम दोनों एक दूसरे के बगैर रह नहीं पा रहे सर! पर जो भी हुआ अकस्मात् हुआ। कोई विश्वास नहीं कर सकता है। स्वय मैं भी सोच नहीं सकती थी।"

उसी स्वर में आगे बोली - "हम दोनों एक-दूसरे को कभी धोखा नहीं देंगे सर! हमारे जीवन का एक-एक पल हर्षोल्लास से गुजर रहा है।"

12

रंजना अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए न तो झिझक रही थी न ही उसे किसी प्रकार के डर का अनुभव हो रहा था। जैसे-जैसे भाव थे उसी भावों के साथ वह अपने मन का उबाल स्पष्ट कर रही थी।

एक दिन वह बोली - "हमने कोई अपराध नहीं किया है सर! लड़का-लड़की यदि एक दूसरे से प्यार करते हैं तो क्या यह अपराध है? तो फिर रोकने से रोका क्यों नहीं जाता? क्यों रात-दिन बेचैनी बढ़ती है? क्यों समय-समय पर उदासी छाई रहती है? बिखरा हुआ दैनिक जीवन किसी एक सूत्र में क्यों नहीं बंधा जाता? रामदास नाम के चार अक्षर क्यों स्थान ग्रहण कर गए जिनका मेरे साथ कभी कोई सम्बन्ध नहीं था? और अब यह अनर्थ क्यों? इस अनर्थ को हम दोनों के ही नाम मढ़ा जा रहा है?"

रंजना के अनेक प्रश्न एक-एक करके मेरे मानस पटल पर तीर से चुभने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लगे थे। वह जो कह रही थी, क्या वह ठीक नहीं था? उसके अरमानों को कुचलना क्या उचित था? मेरी स्तब्धता मेरे सम्मान का प्रतीक बन कर रह गई। मैंने उसे शांत स्वर में समझाया - "देखो रंजना, तुम क्या कर रही हो और क्या नहीं, इससे मुझे कोई दुख नहीं है। पर तुम दोनों का यह प्रेम-प्रसंग पर्दे में ही रहना चाहिए! मैं तुम्हें अनुमति नहीं देता हूं कि तुम इसे उचित कार्य समझो। साथ-साथ मैं तुम्हारी अबोधता को भी दबा नहीं सकता हूं। तुम दोनों एक-दूसरे को प्यार करते हो, यह यर्थाथ तुम दोनों तक ही सीमित रहना चाहिए। यदि इस विषय पर चर्चाए होने लगी तो इस गांव का हर व्यक्ति हम तीनों को अच्छा नही समझेगा।"

मेरे इस तरह कहते ही वह मेरे पैरों पर गिर पड़ी। मैंने उसे सांत्वना देते हुए खड़ा किया और क्षण भर के लिये उसकी आंखों में प्रगाढ़ प्रेम के उस प्रतिबिंब को देखता रहा जो रामदास के प्रति निर्भय होकर चमक रहा था।

दिन बीत रहे थे। वे दोनो अपने काल्पनिक जीवन को सपनों का पहाड़ बना रहे थे। उन्हें लगा कि मैंने उनको अपनी ओर से स्वीकृति दे दी है, यह सोचकर वे दोनों मुझे अपना ही समझ रहे थे।

पर मैंने उनको स्वतन्त्रता नहीं दी थी जैसा की वे दोनों समझ रहे थे। मैंने यह भी उन्हें नहीं कहा था कि जो तुम कर रहे हो बहुत अच्छा कर रहे हो।

मेरी मानसिकता और खराब हो रही थी। मेरा यह प्रयास था कि मैं उन दोनों को अलग कैसे करू? उन्हें जो मेरा डर था उससे भी छुटकारा मिल गया, यह उन्हें लग रहा था।

रविवार के दिन लगभग आठ बजे सुबह रामदास का नौकर मुझे बुलाने आया। कहने लगा - "मालकिन ने आप को बुलाया है।" रामदास की मां मुझे केवल उस समय बुलाती थी, जब कभी बहुत ही जरूरी काम हो। मैं उसी समय चल पड़ा। रामदास घर में नहीं था। मैंने उसकी मां से पूछा - "कहिए दीदी, कैसे याद किया?"

क्या कारण हो सकता है यह जानने के लिये मैंने उनको एक हल्का सा प्रश्न किया। वस्तुतः मुझे बुलाने का कोई कारण नहीं था। बस थोड़ा सा शक था अपने बेटे रामदास पर, जो उसकी मां जानना चाहती थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने कहा - "रामदास के हाव-भाव से ऐसा लगता है कि वह कुछ उदास-सा रहने लगा है। . . . वह रात भर सोता भी नहीं अध्यापकजी। नींद से जब उसकी आंखें खुल जाती हैं तो वह उठकर बैठ जाता है और सोचता रहता है। हमेशा उसका ध्यान सेठजी के घर की तरफ लगा रहता है।"

रामदास के प्रतिदिन की दिनचर्या उसकी मां ताड़ गई थी। मुझसे तो वह केवल अपनी आशंका को विश्वास में बदले के लिये पूछताछ कर रही थी। उन्हें एक बात का और डर था। वह मन ही मन आशंकित थी कि कहीं रामदास रंजना से ऐसी कोई बात न कर बैठे जो बदनामी का कारण बने। मुझसे पूछताछ करने से उनका अभिप्राय यह था कि वह अपने बेटे को सावधान कर सके।

उन्होंने कहा - "अध्यापकजी, आप रामदास का पूरा-पूरा ध्यान रखें। मैं चाहती हूं कि रामदास सेठजी की लड़की से दूर रहे। वह ऐसा दुःसाहस न करे कि सेठजी की लड़की अपने आप को अपमानित समझे व घर में शिकायत कर दे।"

आगे वह बोली - "कहां सेठजी की लड़की और कहां हमारा रामदास! उस लड़की के पैरों पर शायद धूल भी कभी देखी नहीं होगी। उस लड़की से रामदास का क्या मेल? . . . और अध्यापक जी रामदास यदि इस तरह से सोच रहा है तो यह उसकी भूल है। वह लड़की रामदास को कभी नहीं मिल सकती। मैं रामदास की मां हूं और मैं यह नहीं चाहती हूं कि मेरा बेटा कल्पनाओं में अपने भविष्य को संजोता रहे।" अपनी बात को जारी रखते हुए आगे उन्होंने कहा - "अध्यापकजी आप ने रामदास को बहुत कुछ बनाया और वह बहुत कुछ बना, परन्तु अब ऐसा अनुभव होता है कि वह अपना रास्ता भटक चुका है। मेरी आप से विनती है कि रामदास को इस विषय से दूर रखने का प्रयास करें। आपकी अति कृपा होगी।"

मैंने रामदास की मां की सारी बातें हृदय से सुनी और उनके साथ पूरी स्वीकृति देकर वहां से उठकर चला आया। उन्होंने जो कुछ भी कहा था उसमें सच्चाई थी और उनकी हर बात पर मेरी सहमति थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13

रामदास सचमुच एक स्वप्नलोक में रहने लगा था। एक-दो बार मैंने उसे समझाया भी, परन्तु उस पर कोई असर नहीं हुआ। उसे समझाने में मेरा व्यक्तिगत लाभ है, ऐसा वह सोचने लगा था। यह जानकर मुझे दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु उसे मैंने नादान बच्चा समझकर उसका मनोबल टूटने नहीं दिया।

गलती मेरी ही थी कि मैंने उन दोनों को अपनी मौन अनुमति दी थी। मुझे स्वप्न में भी यह एहसास नहीं था कि इतनी शीघ्रता से इसका परिणाम सामने आएगा।

रामदास की मां की तरह रंजना की मां को भी अपनी बेटी के हावभाव देखकर शक हो गया होगा। परन्तु मेरे पास उन दोनों की शंका-समाधान का उचित उत्तर नहीं था। उन्हें शायद ऐसा भी प्रतीत हो रहा होगा कि इसमें मेरी लापरवाही होगी। पर ऐसा यदि वे सोच रहे होंगे तो शायद यह मेरा दुर्भाग्य होगा।

जब से मुझे सन्देह हुआ तब से मैं भी सोचने लगा था कि उन दोनों को उनके घनिष्ठ प्रेम-प्रसंगों से अलग कैसे किया जाए। क्योंकि वे दोनों अनोखे आनंद लोक में विचरण कर रहे थे। उन्हें अपनी चारों ओर की दीन-दुनिया का कोई ध्यान नहीं था। वे प्रसन्नचित्त, खिले-खिले, बड़ी तेज़ी से अपने काल्पनिक संसार में साथ-साथ कदम बढ़ाए जा रहे थे।

ट्यूशन उन दोनों के लिये ऐसा एक नियम बन गया था कि वे उसे कभी टलने नहीं देते थे। सजधज कर आना, एक साथ बैठना एवं मौका पाते ही प्रेमालाप में खो जाना, यह उन दोनों की नियमावली बन गई थी।

इसमें कोई शक नहीं था कि भोला-भाला रादास रंजना जैसी चंचल युवती से पवित्र प्रेम कर रहा था। यदि उसकी प्रेम कहानी की जानकारी रंजना के परिवार वालों को हो गई तो उन पर कैसी विपत्तियां टूट पड़ेंगी, इससे वे दोनों अनभिज्ञ थे।

मेरे बहुत समझाने-बुझाने पर रामदास ने स्वयं को संभालना शुरू किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धीरे-धीरे वह अपने पर नियंत्रण करने लगा। परन्तु प्रेमरोग का इलाज किसी को पता नहीं है।

रामदास दिल-दिमाग से रंजना में रम चुका था। जब कभी रंजना को डांट-फटकार पड़ती, वह बुरा महसूस करता था। वह रंजना की बुराई नहीं सुन सकता था। यदि उससे कोई गलती हो जाती तो उसके सारे आरोप रामदास अपने ऊपर ले लेता। उनका पारस्परिक प्रेम प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होता जा रहा था।

ट्यूशन के बाद वे दोनों अध्ययन कक्ष में देर तक बैठे रहते थे। यह सिलसिला बहुत दिनों तक जारी रहा। अब वे दोनों ऐसी अवस्था में पहुंच गये थे कि एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। एक दिन रामदास ने कहा - "सर, मैं दो-चार दिनों के लिये मामा के गांव जा रहा हूं। इसलिये न तो स्कूल आऊंगा और न ही ट्यूशन।"

दो चार दिनों के लिये रामदास गायब हो गया। रंजना को वह पहले ही बता गया था। फलस्वरूप ट्यूशन के समय केवल मैं और रंजना ही होते थे।

रंजना का मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। वह बार-बार कलाई पर बंधी घड़ी देखती थी। कब समय खत्म हो और कब ट्यूशन का कक्ष त्याग दे। उसी दिन मैंने रंजना से पूछा - "रंजना, तुमने कभी हिन्दी फिल्म्स देखी हैं?"

प्रत्युत्तर में वह बोली - "सर, हमारे घर में फिल्मों का नाम लेना भी एक अपराध है। एक दिन मैं फिल्म का गीत गुनगुना रही थी। पिताजी बोले - "बेटा अच्छे घर के बच्चे फिल्मों के गीत नहीं गाया करते।" रंजना ने जिस ढंग से कहा, उस ढंग को देखकर मुझे बड़ी हंसी आई। मेरे मन की उत्सुकता बढ़ने लगी कि वह अपने पिता के सामने कौन-सा गीत गुनगुना रही थी।

मैंने पूछा - "तुम कौन सा गीत गुनगुना रहीं थी रंजना?" नाक व मुंह को सिकोड़ कर वह बोली - "आप भी, अब रहने दीजिए सर।" पर मैं अड़ा रहा। मैंने कहा - "अब तो मैं तुम्हारे मुंह से वही गाना सुनना चाहता हूं।" उसने अपनी गर्दन नीची कर ली और मन ही मन मुस्कुराने लगी।

मेरे बहुत बार कहने के बाद उसने गाने के बोल बिना गुनगुनाएं हल्के से सुनाए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत के बोल थे -

मेरे मेहबूब न जा,
आज की रात न जा
होने वाली है सहर,
थोड़ी देर और ठहर . . .

रंजना का गीत सुनते ही मुझे लगा कि वह इस गाने को बहुत ही लगन से अपने मन में बसा बैठी है। यह निश्चित था कि इस गीत के माध्यम से रंजना के मन में रामदास के प्रति छिपी हुई एक आराधना थी।

इस गीत को उसने कापी के एक पन्ने पर उतार रखा था। उसने उस् गीत को कठिन-कठिन शब्दों के नीचे रेखांकित किया हुआ था।

वह बोली - "सर, पिछले शुक्रवार को रात के दस बजे ऑल इन्डिया रेडियो पर सुप्रसिद्ध गायिका सुमन कल्याणपुर का कार्यक्रम प्रसारित हुआ था। उन्होंने सब से प्रिय गीतों में से यह गीत गाकर सुनाया था। यह गीत मुझे भी बहुत अच्छा लगा। सुमन कल्याणपुर गा रही थी और मैं अपनी कॉपी में उतार रही थी।" रंजना कॉपी पर उतारा हुआ पूरा गाना मुझे दिखाने लगी। वह संपूर्ण गीत सुवर्ण अक्षरों से लिखा हुआ सुप्रसिद्ध कवि सबा अफगानी के काव्य खण्ड से था।

14

गीत तो रेडियो पर सैकड़ों बजते रहते हैं, परन्तु कोई-कोई गीत ऐसी छाप छोड़ जाते हैं जो व्यक्ति के लिए अविस्मरणीय बन जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि रंजना की पसन्द अति सुन्दर थी। . . . फिर प्रस्तुत गीत को मन में बिठाकर तथा साथ-साथ गुनगुनाकर अपने दिल में छिपे हुए रामदास के प्रति प्रगाढ़ से प्रगाढ़ भावों को प्रकट कर रही थी।

जो रेडिओ कार्यक्रम रंजना ने सुना था उस कार्यक्रम को उस दिन मैंने भी मन लगाकर सुना था और यह गीत मुझे भी बहुत पसन्द था। शास्त्रीय संगीत पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आधारित कलावती राग में सुमन कल्याणपुर ने बहुत ही कर्णप्रिय ढंग से गाया था।

पर एक बात मुझे समझ में नही आ रही थी कि जो लड़की इस बात को समझ रही है कि उसे फिल्मों में रूचि रखने के लिए इजाज़त नहीं है, वह लड़की इस बात को क्यों नहीं समझ रही है कि उसे प्यार में सफलता कैसे मिलेगी? इस प्रश्न का उत्तर मेरी बुद्धि में उतर नहीं रहा था।

दूसरे दिन भी रंजना विद्यालय में सुस्त सी थी। मैं बच्चों को पढ़ा रहा था और एक-एक को निहार रहा था। रंजना बेचैन थी और बार-बार उस रिक्त स्थान को देख रही थी जहां रामदास की बैठने की जगह थी। पीरियड शुरू हुए लगभग बीस मिनट हो चुके थे। सभी बच्चे ध्यान लगाकर पढ़ रहे थे तथा साथ-साथ कॉपी पर लिख रहे थे। पर रंजना के हावभाव से ऐसा लग रहा था कि वह कहीं और खो चुकी है। पढ़ाते-पढ़ाते मैं उसके पास पहुंच गया। वह लिख तो नहीं रही थी पर लिखने का बहाना करते हुए रामदास के नाम को कॉपी पर लिखकर उस पर भिन्न-भिन्न रेखाएं बना रही थी। मुझे देखते ही उसने पन्ना पलट दिया। मैंने उसे कुछ नहीं कहा। पीरियड समाप्त हो गया। दूसरा पीरियड भी मुझे ही लेना था। क्योंकि उस पिरियड के अध्यापक छुट्टी पर थे। विषय था हिन्दी।

मैं हिन्दी पढ़ाऊं शायद बच्चे यह पसन्द न करते और यदि अपना ही विषय लगातार दो पिरियड पढ़ाता हूं तो बच्चों को बोरियत होती।

मैंने बच्चों से पूछा - "बोलो बच्चों, अब क्या पढ़ना चाहोगे?" एक बच्चा तुरन्त बोला - "सर जनरल नॉलेज बताइए।" उस बच्चे का अभिप्राय यह था कि कोई ऐसा विषय पढ़ाया जाए जिससे जानकारी भी बढ़े और मनोरंजन भी हो। मनोरंजन का वड़ा महत्व होता है।

मैंने बच्चों से कहा - "आज मैं तुम्हें यूनान देश की जानकारी दूंगा। जो बच्चा इसे लिखना चाहे लिख सकता है।" तत्पश्चात मैंने धारा प्रवाह बोलना शुरू किया - "बलकान प्रायदीप के दक्षिण क्षेत्र को यूनान कहा जाता है। यह प्रदेश भुमध्य सागर में स्थित है। इसे पहाड़ी देश भी कहा जाता है। दो हजार वर्षो पहले यूनान के लोग कबीले में रहते थे। प्रत्येक कबीले में सैकड़ों परिवार होते थे। सभ्यता की चर्चा करते हुए मैंने आगे कहा - "प्रारंभिक यूनानी लोगों में धर्म के प्रति सरल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वास था। वे लोग स्वर्ग-नर्क में विश्वास रखते थे। यूनानी लोगों की जनसंख्या बहुत कम है। और वह कभी अधिक नहीं रही। विश्व के इतिहासकार यूनानियों की इस बात पर हमेशा चर्चा करते हैं कि थोड़ी आबादी वाले लोग नवीन विचार करने में सबसे आगे क्यों हैं।"

उनके साहित्य की चर्चा करते हुए मैंने कहा - "यूनान के लोगों ने विश्व को कई महत्वपूर्ण काव्य, महाकाव्य एवं नाटक प्रदान किए हैं। यूनान का 'इलियट' और 'ओडिसी' संसार के श्रेष्ठतम काव्य खण्डों में गिने जाते हैं। महान कवियत्री सैफो ने प्रेम रस और प्रकृति सौन्दर्य की जो काव्य रचना की है वह अनमोल रत्नों में से एक है। दुःखांत और सुखान्त दोनों प्रकार के श्रेष्ठतम नाटक यूनानी नाटकरकारों ने विश्व के लोगों को प्रदान किए हैं।"

मेरी बात को सारे बच्चे ध्यान से सुन रहे थे। रंजना ही ऐसी छात्रा थी जो उसे कॉपी पर उतार रही थी। उसकी कलम कॉपी पर तीव्र गति से चल रही थी। विश्व प्रसिद्ध नाटककार की चर्चा के सन्दर्भ में मैंने कहा - "बच्चों, दुःखान्त नाटककारों में सर्वश्रेष्ठ नाटककार सोफोक्लीज़ थे। इन्होंने ईडिपसरेक्स, एण्टिगोण इल्केट्रा जैसी महान रचनाएं तैयार की। इन नाटकों की अभी भी विश्वभर के महाविद्यालयों में चर्चा होती रहती है।"

रंजना ने बीच में ही खड़ी होकर पूछा - "क्या यह नाटक पौराणिक है या ऐतिहासिक सर?" मैंने कहा - "इसे हम ऐतिहासिक कह सकते हैं और फिर एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि यूनान ही संसार में ऐसा एक क्षेत्र है जिसने इतिहास को सर्वप्रथम लिखना शुरू किया।" मेरे इतना कहने के साथ ही रंजना बैठ गई और लिखने लगी।

यूनान के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक की चर्चा करते हुये मैंने कहा - "मनुष्य के जीवन में सत्य क्या है? और वह कैसी आस्था रखता है? विश्व का वास्तविक स्वरूप, सत्य, जीवन का अर्थ एवं मानवीय उद्देश्यों का समाधान करने के लिए अनके दर्शनों का विकास यूनान में हुआ। यूनान के दार्शनिक सुकरात के विचारों को अभी भी विश्वभर के ग्रंथालयों में संग्रहित करके रखा गया है ताकि आगामी पीढ़ियां लाभान्वित हो सके।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुकरात ने कहा था - "युवा व वृद्ध सभी को इस सिद्धान्त के लिए प्रेरित करता हूं कि आप मात्र शरीर व सम्पत्ति के प्रति मत सोचो। सबसे पहले अपनी आत्मा को सुधारो। धन से पुण्य नहीं मिलता, पुण्य करने से धन मिलता है।"

सुकरात का सुप्रसिद्ध नाम बच्चों को प्रभावित करने लगा। सभी मन लगाकर मेरे व्याख्यान को सुन रहे थे।

15

बच्चों के सामने मैं किसी भी विषय को लेकर चर्चा करता रहूं, बच्चे ध्यान से सुनते थे। किसी भी अध्याय को पढ़ाते समय मेरी जो प्रस्तुति शैली थी वह विशिष्ट कला थी, ऐसा विद्यार्थियों का मानना था। बच्चों ने सुकरात के सम्बन्ध में ध्यान से सुना क्योंकि पाठयक्रम में सुकरात के जीवन पर अध्याय था। रंजना जैसी एक ही प्रतिभावान लड़की थी। उसने प्रश्न भी किया था कि क्या सुकरात को ज़हर दिया गया? इसका उत्तर मैंने दिया - "सुकरात को उन लोगों ने अच्छा नहीं समझ जिन लोगों को सुकरात के विचारों से हानि थी। जिन यूनानियों के हाथ में राजसत्ता थी उन लोगों ने सुकरात के विचारों को हानिकारक समझा और उन्हें ज़हर पिलाकर हमेशा के लिए सुला दिया।"

मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि पीरियड समाप्ति की घन्टी बजी और मुझे अपना व्याख्यान खत्म करना पड़ा। कभी-कभी जब भी मुझे मौका मिलता मैं बच्चों को ऐतिहासिक या पौराणिक विषय पढ़ाने लगता। बच्चे भी बड़े मनोयोग से मेरी बात सुनते थे। मेरी तरफ आतुरता से देखते थे। कक्षा में या कक्षा के बाहर मेरा सम्मान करते थे।

दो दिनों के बाद रामदास अपने मामा के गांव से लौट आया। आते ही वह रात-दिन अपना होमवर्क पूरा करने में जुट गया। जब भी मैं उसे देखता किसी न किसी पुस्तक में उलझा हुआ पाता। रामदास के जीवन को मैंने जो मोड़ दिया था वह मेरे लिए सुखद व एकाकी घटना थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास व रंजना मेरे जीवन में छात्र एवं छात्रा के जिस रूप में आए थे वह भी मेरे शिक्षक जीवन की पहल व एकाकी घटना थी। जिस आस्था और श्रद्धा से रामदास - रंजना ट्यूशन के लिए मेरे सामने बैठते थे उनकी वह आस्था और श्रद्धा मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी थी। मैं मन ही मन यह चाहने लगा था कि यह ट्यूशन जीवन भर इसी तरह चलती रहे और रामदास व रंजना मेरे सामने सदा ऐसे ही बैठते रहें।

तड़ेगांव दशासर में मैंने तीन महीने बिताए पर ऐसा नहीं लगा कि यह तीन महीने किसी कठिन समस्याओं से गुज़रें हों। गांव के लोगों का मुझ पर विश्वास बन गया था। वे मुझे श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते थे। जिधर से मैं निकलता लोग मुझे झुक कर नमस्कार करते। एक शिक्षक को ग्रामीण लोग इस सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, यह जानकर संपूर्ण शिक्षक समुदाय पर गर्व किया जा सकता था। संभवतः इन्हीं भावनाओं की तरह एक दिन रंजना की दादी मां ने ऐसे विषय को समक्ष रखा जिसकी मुझे कल्पना नहीं थी।

वह पिछले कुछ वर्षों से हरिद्वार जाकर गंगा स्नान की बात सोच रही थी। तड़ेगांव दशासर से हरिद्वार पन्द्रह सौ किलोमीटर दूर था। इतनी लम्बी दर्शन यात्रा वह अकेली नहीं कर सकती थी। इसलिए व एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में थी जो समझदार हो, दिल्ली, हरिद्वार, मथुरा की जानकारी रखता हो।

मेरे बारे में वह सुन चुकी थीं कि मैं दिल्ली, हरिद्वार दो बार घूम-फिरकर आ चुका हूं। रंजना के पिताजी अपनी मां के साथ स्वयं चलने के लिये वर्षों से कहते आ रहे थे, परन्तु काम की वजह से वे समय नहीं निकाल पाए। इसलिये उनका हरिद्वार जाना संभव नहीं हो पाया था। मुझे ज्ञात हो चुका था कि दादी-मां के साथ मुझे भेजने की चर्चा कई बार उनके घर में हो चुकी थी।

एक दिन सेठजी ने ये बात मेरे सामने रखी। मैं काफी देर तक सोचता रहा। मुझे सेठजी के स्वभाव की कुछ-कुछ जानकारी हो चुकी थी। उन्हें किसी का नकारात्मक दृष्टिकोण पसन्द नहीं था। वे अपनी बात ऐसा मौका देखकर कहते थे कि उनका वार कभी खाली नहीं जाता था। मुझे हां कहनी पड़ी। परन्तु मैंने उनको साफ-साफ बता दिया कि मेरा जाना दीपावली की छुट्टियों में ही संभव हो पाएगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्ततः यह तय हुआ कि उनकी बेटी रंजना और उनकी मां को हरिद्वार दिखाकर लाना है।

मेरे हां कहते ही वे दोनों बहुत खुश हुए। रंजना को खुशी हो रही थी कि उसे जीवन में पहली बार दिल्ली, आगरा, हरिद्वार देखने को मिलेगा। वह अपनी तैयारी में जुट गई। प्रवास में लगने वाले हर एक वस्तुओं की खरीद करने हेतु उसने सूची बनाकर पिताजी को दे दी।

मैं समय निकालकर एक दिन धामणगांव रेलवे स्टेशन गया और रेल टिकिट्स आरक्षण कर ले आया। और आरक्षण भी बिना विलम्ब, बिना कठिनाई से हुआ। मैंने नागपुर से ही जी. टी. एक्सप्रेस के लिए प्रस्थान तय किया। द्वारा

शुक्रवार की शाम को जब मैं ट्यूशन लेने पहुंचा तो रंजना और रामदास की आपस में कुछ बातचीत चल रही थी। उनकी बातचीत से ऐसा प्रतीत होता था कि रंजना ने ही रामदास को उकसाया है और रामदास टाल रहा था। पर जब रंजना ने मुझ से पूछा कि उसने टिकट आरक्षण के लिए जो चार नाम दिये थे क्या वे चारों भी टिकिट्स आरक्षित हो चुके हैं? मेरी स्वीकृति मिलते ही वह प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दी। ट्यूशन चलती रही। जब पढ़ाई होती थी तो सब भूलकर वे दोनों एकाग्रता से अध्ययन की तरफ ध्यान देते थे। निश्चित समय तक अध्ययन चलता रहा और समय होते ही रामदास उठकर चला गया। उसने जाते समय हास्य मुद्रा में रंजना की तरफ देखा। उसका उत्तर भी रंजना ने उसी हास्य मुद्रा में दिया। मैं उन दोनों के भावनात्मक दृष्टिकोण को देखता रह गया।

16

रंजना अपने पिता की भांति जिद्दी और हठीली थी। जिस बात पर वह अड़ी रहेगी उसे वह पूरा करके ही रहेगी। ऐसी वह जिद्दी लड़की थी। वह रामदास को हरिद्वार ले चलने के लिये कई दिनों से आग्रह कर रही थी। मेरी स्वीकृति के साथ ही वह चुप हो गई। अब हरिद्वार चलने वाले हम चार हो गये थे, रामदास, रंजना,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दादी मां और मैं। रामदास हमारे साथ चल रहा है यह सुनकर रंजना के घर वालों को और अच्छा लगा। पर मुझे ऐसा लगा कहीं वह लोग अपनी नाराज़गी न दिखा दें।

चार दिनों के बाद दशहरा का त्योहार आया। यह त्योहार हमने हर्षोल्लास के साथ मनाया। हम तीनों भी गांव के मंदिरों में घुमे फिरे। दशहरे के बाद दिल्ली जाने के लिये दो दिन बाकी रह गये थे। एक दुर्घटना घट गई। रंजना की दादी मां स्नान करने के पश्चात् पूजा करने जा रही थी कि उनका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ी। ज्यादा चोट तो नहीं आई थी, परन्तु दाहिने पैर में मोच आने से उनका चलता-फिरना बंद हो गया था।

इलाज जल्दी हो, इस हेतु गांव के ही चिकित्सक को दिखाया गया। चिकित्सक ने दस दिन आराम करने को कहा। चिकित्सक का आदेश सुनकर रंजना की दादी मां का हरिद्वार जाना लगभग रद्द हो गया था। इसी के साथ हमारी भी आशाएं टूट गई। पर दादी मां ने हम से कहा - "आप लोग अपनी यात्रा रद्द नही करना, आप अपनी मनोकामना पूरी कर आओ। मेरे तो भाग्य में ही नहीं है। पर आप लोग इस मौके को खोना नहीं।"

दादी मां का अनुग्रह रंजना के माता-पिता टाल नहीं सके और उन्होंने उनके स्थान पर अपनी नौकरानी को भेजना तय किया। निर्धारित तिथि को सवेरे आठ बजे रामदास और मैं तैयार होकर रंजना के घर पहुंचे। रंजना भी तैयार होकर हमारी ही प्रतीक्षा कर रही थी। उनके घर की नौकरानी भी तैयार होकर काम में जुटी हुई थी। स्त्री की समस्या स्त्री ही जान सकती है। इतनी दूर की यात्रा में रंजना के साथ किसी स्त्री का साथ होना अधिक आवश्यक था।

नारी की अपेक्षाओं को ध्यान रखकर दादी मां का टिकट रद्द न करते हुए रंजना की मां ने निजी नौकरानी को साथ भेजने का निर्णय लिया।

हम सब को दोपहर के बारह बजे तक धामगांव रेलवे स्टेशन पहुंचना था। नागपुर जाने के लिए बम्बई व्हाया धामणगांव-नागपुर जाने वाले हावड़ा मेल को धामणगांव से ही पकड़ना था। धामणगांव तक हम तांगे मैं बैठकर पहुंच गये। हमारे पास बहुत सामान था। चलते-समय सेठजी ने मुझे एक कागज का बन्डल दिया था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिसमें नोटो की गड्डियां थी। साथ में एक चिठ्ठी और उस चिठ्ठी में अलग से कुछ पैसे भी रखे थे। उन्होंने कहा - "अध्यापक जी, मैंने आपको इतने रूपये दिये हैं कि आप को धन की कमी नहीं होगी। साथ में जो चिठ्ठी दी है उसमें कुछ रूपये हैं और हरिद्वार के धर्मशाल का पता। उस धर्मशाला के प्रमुख श्री सितारामजी के सुपुर्द कर दीजिएगा। मैंने उनको पत्र लिखकर सूचित कर दिया है। आपको किसी प्रकार की असुविधा नहीं होगी। इतना कहकर उन्होंने मेरे कन्धे को थपथपाया था।"

तड़ेगांवसे धामणगांव लगभग 20 किलोमीटर दूर था। हम एक घन्टे में पहुंच गये थे। तांगा रेलवे स्टेशन तक पहुंचाकर वापस हो गया। हम लोग कुली द्वारा सामान लेकर प्लेटफार्म पहुंच गये। पश्चात गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। तब तक रंजना ने बैग से कैमरा निकाल कर प्लेटफार्म के चित्र खींच लिए।

ठीक दो बजे हावड़ा एक्सप्रेस धामणगांव रेलवे स्टेशन पहुंच गई। गाड़ी रूकते ही कुली ने सामान उठाया और बोगी में रिक्त स्थान देखकर वहां हमारा सामान पहुंचाया। हम गाड़ी में बैठ गये। रामदास व मैं एक साथ सामने की सीटों पर तथा रंजना माई के साथ बैठ गई। गाड़ी अधिक समय तक नहीं रुकी। सात-आठ मिनट के बाद इन्जन ने सीटी बजाना आरम्भ किया। गाड़ी के स्टेशन से रुकने से लेकर चलने तक माहौल एकदम बदल गया था। गाड़ी नागपुर स्टेशन पहुंच गयी। उस गाड़ी से हम लोग उतर गये तथा एक नम्बर प्लैटफार्म पर आकर दिल्ली जाने वाली गाड़ी में बैठ गये। हम ग्यारह नंबर के बोगी में बैठे थे। उस बोगी में जितनी सीटें थी उतने ही यात्री थे। यात्री अपना आरक्षित स्थान ढूंढने हेतु प्लेट फार्म पर इधर-उधर दौड़ रहे थे। खाने-पीने की वस्तुएं बेचने वाले वस्तुओं का नाम लेकर चिल्लाते हुए ग्राहकों को आर्कषित कर रहे थे। उन सबमें सबसे ऊंची आवाज चाय बेचने वालों की थी।

गाड़ी स्टेशन पर बीस-मिनट रुकी और चलने लगी। रंजना, रामदास तथा माई के चेहरे प्रफुल्लित थे। रंजना की उत्सुकता गंगाजी नदी को देखने तथा पर्वतीय क्षेत्र को अपने कैमरे में कैद करने की थी। हिमालय घाटी की चोटी को वास्तविक रूप में देखने के लिए रामदास का मन लालायित था। सौभाग्य से दादी मां की अनुपस्थिति का लाभ माई को मिला। उसका आनन्द अविस्मरणीय था। गंगा जी का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दर्शन किसको नसीब हो सकता है, शायद कभी नहीं।

गाड़ी ने तेज रफ्तार पकड़ ली और पटरी पर तेज रफ्तार से दौड़ने लगीं। स्टेशन पर लाऊडस्पीकर में उद्घोषणा हो रही थीं - "मद्रास से दिल्ली जाने वाली जी. टी. एक्सप्रेस निर्धारित समय पर प्रस्थान कर रही है।"

परन्तु गाड़ी तेज गति से स्टेशन पार हो गई थी। गाड़ी के पहीये लोहे की पटरी से घर्षण करके एक विशेष ध्वनि पैदा कर रहे थे।

कुछ ही क्षणों में गाड़ी नागपुर शहर से बाहर आ गई और तेज रफ्तार से अपने पीछे गांव, शहर, खेत-खलिहान, जंगल, पहाड़ आदि छोड़ती हुई अपनी मंजिल की ओर बढ़ रही थी।

रेलगाड़ी का सफर जीवन के मनोरंजन में एक मात्र था। इस मनोरंजन का आनंद हम लोग हर्षोल्लास के साथ उठा रहे थे।

17

हमारी गाड़ी ठीक ढाई घन्टे के बाद आमला स्टेशन पर रूकी। शाम की धुधिलिका देखते-देखते गहराने लगी। जब गाड़ी ने मध्यप्रदेश क्षेत्र की बैतुल घाटी में प्रवेश किया तो उसकी गति धीमी हो गई। कारण, आगे गोलाकार मोड़ था। पर्वतीय क्षेत्र का आकर्षक स्थान देखकर रंजना कैमरा निकालकर फोटो खींचने लगी।

बैतुल घाटी सतपूड़ा पर्वत का एक हिस्सा है। इस पर्वत श्रृंखला के एक ओर महाराष्ट्र प्रांत तथा दूसरी ओर मध्यप्रदेश है। गोलाकार क्षेत्र पार होते ही गाड़ी ने अपनी गति तेज कर दी। साफ आसमान में चांदनीयां छिटकी हुई थी। जिसकी दुधिया रोशनी में ऊंचे-ऊंचे पहाड़ प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोरम दृश्य दर्शा रहे थे।

समय तेजी से दौड़ रहा था और हम अपनी मंजिल तक पहुंच रहे थे। सवेरे-सवेरे हमारी गाड़ी नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुंच गई। माई को जो काम सौंपा था वह मनपूर्वक कर्तव्य का पालन कर रही थी। वह शायद रात भर सोई नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थी और उसका सारा ध्यान रंजना की ओर था। गाड़ी में रंजना जब भी घूमने-फिरने का प्रयास करती तो माई उसे मना कर देती। रंजना बाथरूम की तरफ जाती तो माई भी स्वयं उठकर उसके पीछे-पीछे जाती और उसके साथ ही लौटती। शायद माई के साथ रहने से रंजना अपने आप को स्वतंत्र अनुभव नहीं कर पा रही थी।

गाड़ी स्टेशन पर खड़ी होते ही यात्री उतरने लगे, साथ-साथ हम सब भी उतर गये। स्टेशन से बाहर आते ही हमने एक तांगा तय किया और तागे से पहाड़गंज स्थित महाराष्ट्र यात्री निवास पहुंच गये। वहां हम एक दिन रहे और रात्री के समय बस स्थानक पहुंचकर हरिद्वार की बस में बैठ गये। सवेरे-सवेरे हरिद्वार पहुंच गये।

हरिद्वार में जहाँ ठहरना था उसका पता रंजना के पिताजी ने लिखकर दिया था। हम वहाँ पहुँच गये। सेठजी ने एक चिठ्ठी व चिठ्ठी के साथ कुछ रूपये भी दिये थे जो धर्मशाला के दानपात्र में अर्पण करने थे। हम रिक्शे में बैठकर धर्मशाला पहुँचे। धर्मशाला के संचालक का नाम सीतारामजी था। वे धर्मशाला के चौथी मंजिल पर सह परिवार रहते थे।

हमने उनको कर्मचारी द्वारा संदेश भेजा। उन्हें सूचना मिलते ही लगभग पाँच मिनट के बाद वे हमारे पास आए। हमारे अपना संपूर्ण परिचय देने के बाद उन्होंने कहा - "आप लोगों के लिये दो कमरे आरक्षित रखे हुए हैं। आप के आने की सूचना सेठजी तार द्वारा चार दिन पहले ही दे चुके थे।" उन्होंने नौकर को आवाज लगाई। दो नौकर दौड़े-दौड़े आए। उन्होंने हमारा सामान उठाया और सीतारामजी के आदेशानुसार तीसरी मंजिल पर पहुंचाया। कमरे बड़े-बड़े और साफ सुथरे थे। सीताराम जी के परिवार में उनकी पत्नी और रंजना की उम्र की ही दो पुत्रियां थीं। वे रंजना व माई को अपने साथ ले गई। दोपहर के भोजन का प्रबन्ध भी उन्हीं के घर था। भोजन उपरान्त रंजना व माई उन्हीं के घर ठहरे तथा हम दोनों - रामदास व मैं कमरे में आराम करने लगे। उस समय हम दोनों गहरी नींद में सो गये। शाम को उठकर हमने हर की पौढ़ी पर स्नान कर आरती के लिए उपस्थित होना था।

पांच बजे हम दोनों को उठाया गया। रंजना और माई पहले ही तैयार हो चुके थे। सीताराम जी ने सारी बातें समझा दी थी। सावधान रहने के लिए कुछ हिदायतें भी दीं। डरने तथा घबराने की कोई बात नहीं थीं, परन्तु नये व्यक्ति के लिए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पराए स्थान पर सावधान रहना स्वयं के हित की बात थी।

हरिद्वार में गंगाजी स्नान महत्वपूर्ण विधि समझा जाता है। तो तीर्थयात्री हरिद्वार जाते हैं वे हर की पौढ़ी पर स्नान अवश्य करते हैं।

हम हर की पौढ़ी पर पहुंच गयें। रंजना, रामदास तथा माई ने अपनी-अपनी आंखे गंगाजी की तीव्र गति से बहती हुई जल-धारा की ओर गढ़ा दीं। दूर हिमालय पर्वत में गंगोत्री से जन्म लेकर पहाड़ों को चीरती हुई गंगा जी एक ही स्वर में तीव्र गति से दौड़ रही थी।

गंगाजी के तट पर जाते ही सबसे पहले रंजना ने जल को दोनों हाथों में लेकर प्रणाम किया। हरकी पौढ़ी पर असंख्य श्रद्धालु डुबकियाँ लगा रहे थे। महिलाओं के लिये नहाने का स्थान चार दिवारियों के ओट में था। रंजना माई को लेकर उधर चली गई। उन दोनों के जाने के बाद मैं नहाने लगा। तत्पश्चात् तौलियां से शरीर का पानी साफ करके कपड़े पहन लिए। इतनी ही देर में रंजना व माई भी नहाकर आ गईं।

मेरे नहाने तक रामदास मेरे कपड़े व सामान को देखता रहा। तत्पश्चात वह भी नहाने के लिये उठकर खड़ा हो गया।

रंजना ने अपने सिर के गीले बाल व्यवस्थित रूप में सिर के बीचों-बीच गोलाकार आकृति में बाँध रखे थे। उसका गोरा बदन कपूर की तरह चमक रहा था। उसके ढीले-ढाले सफेद ब्लाऊज और फ्राक उसके शरीर के रंग में मिल रहे थे। नौकरानी के साथ होने के कारण उसकी भौतिक विपुल परिस्थिति की उच्च झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

रंजना की आंखे कभी क्षितिज की ओर तो कभी खड़-खड़ करके बहने वाली गंगाजी की ओर, तो कभी असंख्य श्रद्धालुओं की ओर दौड़ रही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

18

वह क्यों देख रही थी? उसका रामदास उसे कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। वह चारों तरफ आंखे घुमाते हुए देख रही थी। वह कुछ-कुछ उग्र हो उठी थी।

पर रामदास नहाने के बहाने उस ऊंचे पुल पर पहुँच गया था जहाँ से यात्री नदी में छलांग लगाकर स्नान करना चाहते थे। रामदास पर रंजना की नज़र पड़ते हीं वह घबराकर बोली - "सर! देखिए! वे कहां पर चले गये हैं नहाने के लिए? आप उन्हें मना कर दीजिए सर?"

मैंने कहा - "डरो नहीं, रामदास निडर है यदि वह डरता तो इस तरह की छलांगे कभी नहीं लगता।"

हम दोनों रामदास की तरफ देख ही रहे थे कि उसने छलांग लगा दी और वह हवा में दिखाई देने लगा जो नीचे की ओर गिरता हुआ आ रहा था। झट से वह पानी में गिरकर डूब गया और उसी तेज़ी के साथ ऊपर आ गया। फिर वह पानी में तैरने लगा।

रंजना को हर की पौढ़ी से विशेष प्यार हो गया था। पर मैं जानता था कि वह इस प्यार को अपने सीने से लगाए रखेगी। वह कैमरा उठाकर हर की पौढ़ी पर की भिन्न-भिन्न तस्वीरें निकालने लगी। पर एक बहाना यह भी मिल गया कि गंगाजी में स्नान करते हुए रामदास की तस्वीरें भी वह खींचने लगी। रामदास सोच रहा था कि शायद उसे इसके बाद हरिद्वार आने का अवसर नहीं मिलेगा। वह मन लगाकर व आत्मसन्तुष्टि के साथ नहा रहा था। मैंने भी उसे टोका नहीं, पर रंजना ने नदी के किनारे उसके पास जाकर उसे कहा - "बस, हो गया है। अब निकल आइए। हम सब आप की प्रतीक्षा कर रहे हैं।" रंजना की आदेशात्मक वाक्यरचना सुनकर रामदास तुरन्त बाहर आ गया। माई ने उसे तौलिया व उसके कपड़े दे दिए। वह अपने कपड़े बदलने हेतु दीवार की ओट चला गया।

प्रार्थना का समय हो चुका था सात बजने वाले थे श्रद्धालुओं की भीड़ मंदिर की ओर बढ़ती जा रही थी। उस भीड़ को देखकर यह निश्चित कहा जा सकता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि हरिद्वार के दर्शन हरिदर्शन की आरती में ही हैं। रामदास कपड़े पहनकर आ गया। हम सब अन्य श्रद्धालुओं के साथ आरती के लिए खड़े हो गये।

सैकड़ों घंटियां बज रही थीं। साथ में नगाड़े की आवाज़ घंटियों के स्वर में मिलकर आसमान में गूंज रही थी। बीच-बीच में शंख की कर्कश आवाज़ कानों को भेद रही थी। यह सब आरती शुरू होने के संकेत थे।

आधा घन्टा पंडितो के स्वरों से आरती एवं गुनगान होता रहा। हमने मंदिर में प्रवेश कर ईश्वर के दर्शन किये और धर्मशाला लौट आए। दूसरे दिन का कार्यक्रम ऋषिकेश जाने का था। दूसरे दिन लगभग ग्यारह बजे हम ऋषिकेश की बस में बैठ गये। बस चल पड़ी। कुछ ही मिनटों बाद बस ने टेड़े-मेड़े रास्ते से विशालकाय पर्वत में प्रवेश किया। हम अपने समय पर ऋषिकेश पहुंच गये। मंदिरों के दर्शन लक्ष्मणझूला आदि स्थानों को मन भर कर देखने लगे। विशेषकर रंजना व माई को उस स्थान का वर्णन करना भा रहा था, जैसे कि उनके पास शब्द थे।

पश्चात् सदियों से अविचलित खड़ा चोटीवाला भोजनालय में हमने दोपहर का भोजन किया। कुछ समय विश्राम कर ऋषिकेश से हरिद्वार पहुंच गये।

तीसरे दिन हमने मनसा देवी का दर्शन किया। दर्शन करने के बाद हरिद्वार में खरीददारी करने लगे। अधिकतर पूजा का सामान खरीदा। पीतल की मूर्तियां, बंद गले के काशे के लोटे। उनमें गंगाजल भर कर उसी दिन हम दिल्ली के लिये रवाना हो गये।

दिल्ली पहुँचकर हम अपने यात्री निवास पहुंचे तथा आराम करने लगे। हरिद्वार के तीन दिन की यात्रा से हम थक चुके थे। रात्रि को हम अच्छी नींद सोये।

तीन दिन की हरिद्वार की यात्रा में कुछ घटनाएं ऐसी भी रही। रामदास व रंजना एक-दूसरे के बिल्कुल करीब आ चुके थे। उन दोनों को मैंने चुपके-चुपके कभी वार्तालाप करते नहीं देखा। पर आंखों-आंखों में बहुत कुछ हो रहा था। खाने-पीने की वस्तुओं का आदान-प्रदान एक सामान्य बात थी।

रामदास से रंजना क्या अपेक्षा कर रही थी? कुछ नहीं, पर असीम प्यार . . . ! उन दोनों को ऐसा लग रहा था कि जल्दी-जल्दी घर लौटकर हम अपने मधुर परिणय का प्रमाण बुजुर्गों के सामने रख दें। रामदास की विचारधाराएं इतनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रबल नहीं थी। परन्तु रंजना बिल्कुल निडर हो गई थी।

रंजना और रामदास की लुका-छिपि अभिव्यक्ति से मुझे अनुभव हो रहा था कि उनका पारस्परिक स्नेह संयम नहीं रख पा रहा है। क्योंकि माई ने मुझे एक दो बार पूछा - "अध्यापक जी, क्या आप इन दोनों को हरिद्वार इसलिये ले आये हैं कि इन दोनों की मनोकामना पूरी हो।"

पर मैंने उसके विचारों का खंडन करते हुए कहा - "ऐसा कुछ नहीं है। यह नादान बच्चे हैं।" तब वह बोली - "आप और हम समझ नहीं पा रहे हैं। पर यह दोनों एक-दूसरे के लिये मर मिटने को तैयार हैं।"

19

माई जो कह रही थी वह बिल्कुल सत्य था। पर अब उन दोनों की घनिष्ठता अधिक न बढ़े, इसके लिये और भी प्रयास किये जा सकते थे। पर इस शुभ यात्रा के आनन्द में यह विषय निकालना उचित नहीं था।

अब हम दिल्ली से प्रस्थान की ओर सोच रहे थे। दिन भर हमने दिल्ली दर्शन किया। राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, इन्डिया गेट, कनॉट प्लेस, निजामुद्दीन की दरगाह, राजघाट, शान्तिवन इत्यादि देखा।

दूसरे दिन दिल्ली से मथुरा पहुंचे। दिन भर मथुरा घूम-फिर कर उसी दिन आगरा पहुंचे। दिन में ताजमहल व फतेहपुर सीकरी देखा व शाम को आगरा रेलवे स्टेशन पहुंच कर भोपाल जाने वाली गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे।

सात दिन के बाद हम आनन्द-मंगल से तडेगांव दशासर वापस आ गए। इस तीर्थयात्रा का स्पष्ट लाभ रंजना-रामदास को हुआ। वे एक-दूसरे के बहुत निकट आ चुके थे। घटनाओं के निर्माण में देरी नहीं लगती है। उन दोनों का आत्मविश्वास अटूट था। वे दोनों एक दूसरे के इतने घनिष्ठ बन चुक थे कि किसी के भी नकारात्मक विचारों को स्वीकार नहीं कर सकते थे तथा एक दूसरे के लिए सब कुछ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करने को तैयार थे।

ऐसी ही एक घटना दीपावली के दिन सवेरे-सवेरे घटी जो मेरे आत्मविश्वास को चूर-चूर कर गई। उस दिन मैं विद्यालय के वाचनालय में बैठा था। मुझे ढूंढता हुआ रामदास वहां पहुंच गया। उसके हाथ में चमकीले पेपर में बन्डल बना हुआ एक पैकेट था और एक मिठाई का डिब्बा। रामदास स्वयं नये-नये वस्त्र पहने हुये था।

वह मेरे पास आया और उसने मुझे हंसकर नमस्कार किया। ऐसा लगा वह कुछ कहना चाहता है। परन्तु वह कह नहीं पा रहा था। हिम्मत बटोरकर वह बोला - "सर! यह उपहार आप के लिए रंजना ने भेजा है। आज दीपावली है न सर, . . और सर, हम आप को शुभ दीपावली के शुभ अवसर पर एक सुखद समाचार देना चाहते हैं।"

मैंने कहा - "वह क्या?"

वह घबराकर हल्के से कहने लगा - "सर! रंजना और मैं, हम दोनों ने विवाह करने का निर्णय लिया है।"

इतना सुनते ही मैं उसकी तरफ देखता ही रह गया। जो उसने कहा था यह बात ऐसी लगी कि बहुत पुरानी है। जैसे कि मैं कई बार रामदास के मुंह से सुन चुका हूं। मेरे लगातार देखने से वह घबरा गया और निडर होकर कहने लगा - "सर! यह फैसला रंजना का है कल उसने अपने विचारो से मुझे अवगत किया। और . . . और मैंने अपनी स्वीकृती उसे दे दी। मैं-मैं आप का आशीर्वाद लेने आया हूं। जब तक आपका आशीर्वाद नहीं होगा तब तक मैं इस विवाह विधि कार्य में मैं सफल नहीं हो सकता।"

मैं उठकर खड़ा हो गया। मेरी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। एक तरफ तो मेरे मन में आग लग रही थी और दूसरी तरफ मैं उस सत्य को याद कर रहा था जिसका परिणाम मैं पहले ही निकाल चुका था। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था कि मैं रामदास को क्या उत्तर दूं। वह लगातार मेरी ओर देखते हुए उत्तर की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

मैंने उसके हाथों में से उपहार लेने हेतु अपने हाथ बढ़ाए। उपहार स्वीकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करते हुए मैंने कहा - "बधाई हो रामदास! दीपावली की बधाई हो। रंजना ने तुम्हें अपने योग्य समझा, इसके लिए भी तुम्हें बधाई हो! मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं। स्वागत करता हूं। तुम उस धरातल तक भी पहुंच गये जिसे न तुम्हें और न तुम्हारे परिचितो को अपेक्षा थी।"

मेरी बात का धन्यवाद करते हुए रामदास मेरे चरण छूने लगा। मैंने उसे पकड़कर अपने सीने से लगाया और उसकी पीठ थपथपाई। मेरे बैठने का आदेश सुनकर वह साथ में ही कुर्सी पर बैठ गया। मैंने उससे पूछा - "रामदास यह तुम सच कह रहे हो कि रंजना ने तुम्हारे साथ विवाह करने का निर्णय लिया है?"

बोला - "जी सर! क्या आप को विश्वास नहीं हो रहा है?"

मैंने कहा - "विश्वास तो मुझे हो रहा है। पर विवाह जैसे जीवन प्रिय प्रसंग की परिभाषा शायद रंजना नहीं समझ पा रही है। जानते हो विवाह का अर्थ क्या होता है? विवाह का अर्थ होता है कि उसने अपनी सम्मति से सब कुछ तुम्हारे सुपुर्द कर दिया है और तुम्हारे लिए रंजना जैसी लड़की को पाना अर्थात साक्षात स्वर्ग का भाग्य लाभ है।" कहते-कहते मैं मन ही मन बहुत दूर तक सोचने लगा। फिर बोला - "रामदास क्या तुमने अपनी मां को बता दिया?" रामदास बोला - "नहीं सर! और मां को बताने की आवश्यकता भी क्या है? क्या वह मना कर देगी। क्या वह मेरी खुशियों को अच्छा नही समझेगी? पर मैं समयानुसार मां को सब कुछ बता दूंगा।"

मैंने कहा - "यदि वह मना कर देती है तो?" वह बोला - "ऐसा तो नहीं होगा सर! मेरी मां, मेरा भविष्य, सम्मान व प्रतिष्ठा से देख रही है।"

मैंने कहा - "हो सकता है जिसे तुम सम्मान व प्रतिष्ठा समझ रहे हो उसे तुम्हारी मां अपमान व अप्रतिष्ठा समझे?"

आगे वह बोला - "सर! मैं अपनी मां को मना लूंगा।"

मैंने कहा - "रंजना के माता-पिता विरोध करने लगे तब क्या होगा?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20

रामदास की जबान बंद हो गई थी। उसके पास कोई उत्तर नहीं था। पर उसे गर्व था कि रंजना अपने माता-पिता के विरोध को संभाल लेगी। इसलिये वह तटस्थ बैठा था। वह मेरे प्रश्नों का ऐसे उत्तर दे रहा था जैसे कि उस की पूर्व तैयारी थी। वह कुर्सी से उठकर खड़ा होते हुए बोला - "आज शाम को रंजना ने भोजन के लिये आप को निमंत्रण दिया है।" मैंने कहा - "रंजना का निमंत्रण मुझे स्वीकार है, मैं समय पर पहुंच जाऊंगा। पर क्या तुम्हें भी निमंत्रण है?"

इस प्रश्न का उसने कोई उत्तर नही दिया। गर्दन नीचे करके वह मुस्कुराने लगा। फिर वह आज्ञा लेकर चला गया।

परन्तु एक बात मुझे बहुत चुभ रही थी। मैंने सोचा भी नहीं था कि रंजना व रामदास आसमान छूने का प्रयास करेंगे। और देखो तो रंजना कितनी चतुर थी। वह अपने सभी कार्य रामदास द्वारा पूर्ण करवा रही थी। विवाह का प्रस्ताव उसने मेरे सामने ऐसे दिन भेजा कि मैं आना-कानी न कर सकूं। मुझे बीच में डालकर वह निर्दोष भी रहना चाहती थी और लक्ष्य को प्राप्त करना भी। वाचनालय में मेरा मन नहीं लग रहा था। दीपावली के त्यौहार के उपलक्ष्य में गांव के नागरिक अपने-अपने घरों को सजाने में व्यस्त थे। हमारे विद्यालय के पीछे पुलिस थाना था। वहां के सिपाही थाने के भवन को सजा रहे थे। मैं खिड़की में से देख रहा था कि कितने स्वतंत्र मन से वे लोग अपने काम में संलग्न थे और साथ-साथ गुनगुना भी रहे थे। मेरा मन ऐसा हो रहा था जैसे किसी पिंजरे में पक्षी को बंद कर रखा हो और वह पिंजरे के बाहर निकलने के लिये चिल्ला रहा था। ठीक मेरी दशा ऐसी ही थी परन्तु मैं चिल्ला नहीं सकता था। मैं अपनी वेदना को किसी के समक्ष बयान नहीं कर सकता था।

रामदास और रंजना के प्रेम सम्बन्धों से मुझे कोई हानि नहीं थी पर मेरे हृदय में जलन क्यों हो रही थी? वे दोनों एक समान, एक उम्र के, एक कक्षा के छात्र-छात्रा थे। उन दोनों के अटूट सम्बन्धों से मेरा क्या संबन्ध था? मैं दुविधा में पड़ गया था। कभी-कभी सोचता था आखिर इस गांव में मैं क्यों आया? सोचते-सोचते दो घन्टे हो गये। मैं वाचनालय को ताला लगाकर अपने कमरे की तरफ जाने लगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वहां देखा तो विद्यालय का चपरासी आंगन में पानी छिड़क रहा था। मुझ पर नजर पड़ते ही कहने लगा - "आप कहां चले गये थे अध्यापकजी? आज तो हर्षोल्लास का दिन है। दीपक जलाने हैं आंगन में रंगोलियां बनानी हैं और आप जो है कि कक्ष का ताला लगाये पता नहीं कहां चले गये। संध्या हो रही है। दरवाजा खोलिए।"

मैंने कहा - "हां भाई! आंगन को साफ करते हुये देख कर ऐसा लगा कि शायद तुम मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

विद्यालय का चपरासी मेरा विशेष शुभ-चिन्तक था। मेरा घर सजाने में उसे अधिक रूची थी। मैंने कक्ष का ताला खोलते ही वह साफ-सफाई में लग गया। मैं कुर्सी डालकर आंगन में बैठा था। सफाई करते वह मेरी मुद्रा का परिक्षण कर रहा था उससे रहा नहीं गया। बोला - "क्या बात है सर, आज आप बहुत उदास लग रहे हैं?"

मैंने कहा - "नहीं-नहीं अविनाश ऐसा कुछ नहीं है।" इतना कहते ही वह हंसने लगा। अविनाश की उम्र मेरे से अधिक थी। सामाजिक दृष्टिकोण एवं जीवन के हाव-भाव से वह अधिक परिचित था। सारी सफाई के बाद वह मिट्टी के दिये जलाने लगा तब तक अंधेरा हो चुका था। पश्चात जैसे ही वह अपने घर जाने लगा तो बक्शीस के रूप में मैं उसे कुछ रूपये देने लगा। वह मना करने लगा पर जबरदस्ती मैंने रूपये उसकी जेब में डाल दिये। जब वह जाने लगा तो मैंने कहा - "अविनाश मुझे आठ बजे कहीं जाना है। इन दीयों की रखवाली तुम्हें ही करनी है।"

कहने लगा - "जी सर! मैं आठ बजे तक पहुॅंच जाऊॅंगा।" अविनाश चला गया और समय के अनुसार आठ बजे पहुॅंच गया। तब तक मैं रंजना के घर जाने के लिए तैयार हो गया था।

अविनाश फिर मिट्टी कि दीयों में तेल डालने लगा। और मैं उसकी उपस्थिति में रंजना के घर की ओर जाने लगा। जब मैं रंजना के घर पहुंचा उस समय उनके घर लक्ष्मी पूजा हो रही थी। चालीस पचास निमंत्रित लोग बैठे हुए थे। पंडित जी के श्लोक एवं मंत्रों के उच्चारणों की जोर-जोर से आवाज आ रही थी।

सेठ जी ने मेरी तरफ देखते ही मुझे इशारों से बैठने को कहा जबकि वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूजा-पाठ के साथ ही बैठे हुये थे। लक्ष्मी देवी की मूर्तियां एवं वर्ष भर के बही खाते इसकी विशेष रूप से पूजा की जा रही थी। सेठजी ने अपना घर चारों तरफ रंग रोगन एवं रोशनी से चमका रखा था। मानो धनवर्षा सेठजी के ही प्रागंण में होगी ऐसा ही कहा जा सकता था।

21

दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर घर, आंगन, द्वार चारों तरफ लक्ष्मी ही लक्ष्मी नज़र आ रही थी। आंगन में ही मैंने चप्पलें उतारीं और रंजना के कक्ष में प्रवेश किया। प्रवेश करते ही मैंने पाया कि कक्ष जगमगा रहा था। प्रत्येक वस्तु में नई-नई चमक थी। कक्ष में कोई नहीं था। मैं कुर्सी पर बैठ गया। कमरे के चारों तरफ से अवलोकन करते हुए मैं रंजना की प्रतीक्षा करने लगा।

मेरी दृष्टि एक पुस्तक पर पड़ी जो टेबल लैम्प के पास रखी थी। उस पुस्तक को उठाकर देखने लगा। पुस्तक का नाम था 'मलिक मोहम्मद जायसी का पदमावत काव्य खण्ड' उस पुस्तक की बाइन्डिंग बहुत सुन्दर थी। मैं उस पुस्तक के पन्ने पलटने लगा।

जैसे ही मैंने पुस्तक के आठ-दस पन्ने पलटे वैसे ही पुस्तक से चार-पांच फोटो नीचे गिर पड़े। मैं उन फोटो को उठाकर देखने लगा। वह सारी फोटो रामदास की थीं। जो रंजना ने खींची थी।

एक नागपुर रेलवे स्टेशन पर की, एक आगरा के मुमताजमहल के सामने की, एक दिल्ली के कुतुबमीनार की और एक गंगाजी के किनारे लक्ष्मण झूले पर की। मैं काफी देर तक उन फोटो को देखता रहा। फोटो रामदास की थीं, परन्तु फोटो के रूप में सम्पत्ति रंजना की थी। पूर्ववत उन चित्रों को जहा-जैसी थी वैसी रखकर वह पुस्तक भी बंद कर दी और टेबल पर रख दी।

उसी समय रंजना आई और दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगी, साथ-साथ उसने मुझे दीपावली की शुभकामनाएं दी। पर इस समय वह कुछ घबराई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुई थी। मेरी आंखों से आंखे नहीं मिला पा रही थी। मैं भी बहुत देर तक उसी तरफ देखता रहा। कभी वह दरवाजे के बाहर देखती, कभी दीपावली के शुभअवसर पर रोशनी पैदा करने वाले मिट्‌टी के दिये की तरफ . . .

मैंने उसके मन की आशा की किरणों का अंदाजा लगाते हुए कहा - "इस शुभ दीपावली की आप को बहुत-बहुत शुभ कामनाएं और रामदास को भी।"

मैंने जैसे ही रामदास का नाम लिया, वह झेप सी गई। मैंने आगे कहा - "मैं आशा करता हूं ईश्वर आप दोनों की मनोकामनाएं पूरी करें।"

रंजना ने प्रत्युत्तर में इतना ही कहा - "धन्यवाद सर!" उसी समय उसने अपनी मां की पुकार सुनी और 'आई मां' कहकर दौड़ती सी चली गई। थोड़ी देर के बाद रामदास आया और हम दोनों ने मिलकर भोजन किया। उस भोजन में अनुग्रह था, कुछ ऐसी भावनाऍं थीं जो रिश्तों को और सुदृढ़ बनाने का प्रयास कर रही थी।

रामदास जीत गया था। उसकी जीत एक अविस्मरणीय सफलता की थी। भविष्य में क्या परिणाम निकलेंगे यह कह पाना असंभव था। पर रामदास व रंजना ऐसे एक धरातल पर खड़े थे कि जिस दौर में उस उम्र के किशोर-किशोरी सफल नहीं हो पाते। उन दोनों की मधुर-मुस्कुराहट एक दूसरे के प्रति मान-सम्मान बढ़ा रही थी। इसका उन्होंने कभी किसी को पता नहीं चलने दिया।

भोजन उपरान्त हम दोनों कुछ देर तक बैठे रहे तथा सेठजी को दीपावली की शुभकामनाऍं देकर उठकर बाहर आए। रामदास मुझे अपने घर चलने के लिये ज़िद करने लगा। परन्तु रात्रि का समय अधिक हो चुका था इस कारण 'फिर कभी' कहकर मैंने उसे विश्वास दिलाया। वह अपने घर चला गया! मैं अपने घर की तरफ आने लगा। जब एकान्त में मैं अकेला रह गया तो प्रत्येक क्षण मुझे चुभने लगा था। दीपावली का शुभ पर्व मेरे मन में ज्वाला पैदा कर रहा था।

रामदास और रंजना ने प्रेम में सफलता पाकर उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया था। मुझे तो ऐसा स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि शायद या संभवतः उन दोनों ने चुपके-चुपके अपना विवाह भी कर लिया हो? यदि यह सत्य हुआ और इसकी भनक सेठजी को लग गई तो मेरी क्या गति होगी? सेठ जी यही कहेंगे - "अध्यापक जी यह क्या कर दिया आपने? मैंने अपनी बेटी आप के सुपुर्द इसीलिए की थी?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आप देखते रहे और लड़की के साथ पढ़ने वाला विद्यार्थी उसके साथ प्रेम विवाह के सपने देखता रहा।"

बार-बार यही विचार मेरे मन में आ रहे थे। रात के बारह बजे तक मैं सोया नहीं और कमरे में से उठकर बाहर आ गया। विद्यालय के भवन के सामने एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ था उस पेड़ के नीचे आकर मैं खड़ा हो गया। रात्रि के समय पेड़ के नीचे खड़ा होना उचित नहीं था। परन्तु मन भटक रहा था। अविश्वसनीय घटनाओं ने मन को छलनी करके रख दिया था।

उसी रात्रि को मैंने निर्णय लिया कि चलो अब नागपुर चलते हैं। नागपुर जाकर अपने माता-पिता से मिलते हैं। वैसे भी दो दिन के बाद भैय्या दूज के लिये जाना ही था। मैं अपने मन को संक्षिप्त रूप में दिलासा दे रहा था। जब से मैंने तड़ेगांव-दशासर में पैर रखा था तब से ही मेरा जीवन संतप्त घटनाओं से ही गुजर रहा था। आगे भी इसी तरह आग में झुलसते रहेंगे ऐसी ही संभावनाए थी। सबसे बड़ा डर अपने अध्यापक के पद को सुरक्षित रख पाने का था।

22

मैं पेड़ के पास बहुत देर तक खड़ा रहा। इतने में ही सामने से धड़-धड़ करती हुई बुलेट मोटर साईकिल आई और मेरे पास रुक गई। मैंने अन्दाज़ा तो लगा लिया था कि वह मोटर साईकिल सवार पुलिस थाने के साहब ही होंगे। थे भी वही। वे बोले - "शुभकामनाएं अध्यापक जी, दीपावली की शुभकामनाएं।" मैंने भी शुभकामनाओं का उत्तर अभिनन्दन के साथ दिया। आगे वे बोले - "क्या समस्या है? कैसे खड़े हैं आप इस तरह आधी रात को।"

मैंने उनको अपनी समस्या बताते हुए कहा - "महोदयजी! आज त्योहार का दिन है और अचानक ही आज अपने घर की याद हो आई। सोने के लिये मैंने बहुत प्रयास किया पर नींद नहीं आ पाई। मैंने तय किया कि इसी समय नागपुर चला जाऊं, . . . पर इतनी रात तो किसी प्रकार का साधन भी तो नहीं होगा।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने मोटर साईकिल का इंजन बंद करते हुये कहा - "देखिए, मास्टर साहब, चिन्ता की कोई बात नहीं। धामणगांव से साढ़े तीन बजे बॉम्बे मेल का समय है। वह गाड़ी आपको तीन घन्टे में नागपुर पहुँचा देगी। आप कहे तो मैं आप को मोटर साईकिल से छोड़ आता हूं।" उनके इतना कहते ही मैं तैयार हो गया। वे पांच मिनट के लिये थाने गये और लौट आए। उतने ही समय में मैं अपने कक्ष में जाकर आवश्यक सामान व एक दो पुस्तके बैग में डालकर विद्यालय के मेन गेट के पास खड़ा हो गया। पश्चात उनके मोटर साईकिल पर बैठकर हम धामणगांव की तरफ चल पड़े। आधे घन्टे में ही हम लोग पहुँच गये। एक चाय के ढाबे पर खड़े होकर चाय पीने लगे।

कितने भद्र पुरूष थे वे। उनके दो बच्चे हमारे विद्यालय में पढ़ते थे। लड़का आठवीं में व लड़की नौंवी में। उन दो बच्चों के ट्यूशन हेतु उन्होंने मुझे कई बार कहा, पर मैं समय के अभाव के कारण उनके बच्चों को नहीं पढ़ा सका। परन्तु उनके मन में मेरे प्रति सद्भावना ही थी। मैंने रेलवे स्टेशन पर टिकट खरीदा और प्लेटफार्म के बेंच पर बैठ गया। स्टेशन पर कोई भीड़ नहीं थी। मैं तो यह भी भूल रहा था कि आज दीपावली है। परन्तु जब भी एकान्त होता तो मेरे सामने या तो रंजना की आकृति खड़ी हो जाती या रामदास की।

समय पर ट्रेन आई और मैं उसमें जा बैठा। सवेरे-सवेरे मैं अपने घर पहुँच गया। मेरे माता-पिता भी मेरे बारे में सोचने लगे कि यह इस तरह अचानक कैसे आया। वे दोनों भी मेरी परेशानी का कारण पूछने लगे।

मेरी मानसिक अवस्था ठीक नहीं थी। दो दिन आराम से बिताए। भइया दूज त्यौहार आया। मेरी दोनों बहनें घर आईं और भैयादूज त्यौहार के बाद वापस चली गई। मुझे तड़ेगांव दशासर की याद आने लगी। रामदास बार-बार मेरे निवास स्थान आकर देख रहा होगा . . . और वापस चला जाता होगा। अपने मन ही मन प्रश्न करता होगा, कहाँ चले गये होंगे सर? गये तो बताकर क्यों नहीं गए, आदि-आदि।

वैसे देखा जाए तो यह मेरी बहुत बड़ी भूल थी। फिर उन दोनो का दोष भी क्या था? और मैं जो उन्हें दोषी ठहरा रहा था वह कोई प्रमाणित भी तो नहीं था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे दोनों अपनी जिज्ञासा एक दूसरे को समर्पित कर बैठे थे। फिर यह तो स्वाभाविक है, जब दोनों कई महिनों से एक साथ बैठ रहे थे, सोच रहे थे, एक दूसरे पर निर्भर हो रहे थे। ऐसा होना तो वास्तविकता थी।

क्या दो युवा दिल मिल नहीं सकते? क्या उन दोनों की उम्र में दस-बीस वर्षों का अन्तर था? क्या रंजना नाबालिग थी? क्या रामदास कुरूप या अपंग था? यह सारे प्रश्न मेरे मन को विभाजित करने लगे थे।

मुझे दोनों की याद आने लगी, रामदास और रंजना की। मेरी आंखों के सामने वे दोनों घूमने लगे। उन दोनो ने मुझपर क्या जादू किया था? कक्षा के किसी बच्चे को मैं याद नहीं कर रहा था। फिर यह दोनों ही क्यों मेरे लिये इतने प्रिय थे? मैं उन दोनों को निरन्तर भूलने का प्रयास कर रहा था, परन्तु भुलाने से भुलाया नही जा रहा था।

लगातार पांच दिन मैं नागपुर में रहा। अपने कालेज के दिनों को याद करते हुये। नागपुर विद्यापीठ, सेंट्रल लाइब्रेरी, हॉकी ग्राउन्ड, सेमिनरी हिल्स आदि स्थान पर शाम सवेरे घुमने जाता रहा। पर एकान्त में अचानक मेरे सामने एक छोटा सा गांव तड़ेगांव दशासर खड़ा होता था और उस समय रात भर नींद नहीं आती थी।

छह महीने तड़ेगांव में ऐसे बिताए जैसे सुवर्ण अक्षरों से लिखे जाएं। कभी-कभी सोचता था उस गांव के विद्यालय अंग्रेज़ी विषय पढ़ाने वाले अध्यापक टिक क्यों नहीं पाये? क्या वे अध्यापक असमर्थ थे या बच्चों को समझ नहीं पाये? या ग्रामीण जन जीवन को तुच्छ समझने लगे? रंजना जैसी लड़की पूरे नागपुर शहर में नहीं होगी। उसकी सभ्यता, उसके संस्कार, उसके आचार-विचार और उसका सुन्दर रूप आदि-आदि।

23

जिस तरह से मैं आधी रात को तड़ेगांव से नागपुर के लिये चल पड़ा था उसी तरह से आधी रात को नागपुर से तड़ेगांव के लिये चल पड़ा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तड़ेगांव जाने के बाद जो कुछ भी मुझे पता लगा उसे मैं अपनी भूल प्रकट करने लगा। सारी कहानी विद्यालय के चपरासी ने बताई। कहने लगा - "रामदास ने दिन भर कई चक्कर काटे। एक दो बार वह रंजना को भी अपने साथ ले आया। उसने बार-बार पूछा 'सर कहां चले गये होंगे? और सर को जहां भी जाना था वे एक बार हमें बता देते।"

रामदास और रंजना मेरे लिये बेचैन होगें यह मैं अच्छी तरह जानता था। पर उनके लिये मैं कितना निराश व असमर्थ था। इसकी जानकारी उन दोनों को नहीं थी। परन्तु यह सत्य था कि उन दोनों को मेरी बहुत फ्रिक थी। हम तीनों बिल्कुल एक थे, हम तीनों के मन अखंड थे। जीवन से जुड़ी हुई यादें कभी मिट नहीं सकती। हमारी यादे हमेशा-हमेशा के लिये भावनाओं के साथ जुड़ी हुई थी।

मैं विद्यालय के पुस्तकालय में सायक्लोपेडिकल वेबस्टिर्स शब्द कोष का अध्ययन कर रहा था। अचानक रामदास मेरे सामने खड़ा हो गया। सवेंरे दस बजे का समय था और विद्यालय की छुट्टी थी। वह घबराकर पुछताछ करने लगा - "सर आप कहां चले गये थे? आप बताकर तो चले जाते सर? मैं कितना परेशान था . . और . . . और रंजना भी कितनी चिन्तित थी। यदि आप आज यहीं दिखाई नहीं देते तो फिर मैं आप की जानकारी लेने नागपुर आने वाला था।"

मैंने कहा - "घबराओं नहीं, घबराओ नहीं रामदास। इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं। मैं बच्चा तो हूँ नहीं। मुझे अपने घर की याद आई और मैं नागपुर चला गया। जब तुम दोनों की याद सताने लगी तो मैं तुरन्त लौट आया।"

वह मेरा हाथ पकड़ कर बोला - "चलिये सर, रंजना के घर चलिये। वह आपसे मिलने के लिये व्याकुल हो रही है।"

मैंने उसे समझाया - "देखो रामदास, अब मेरी इच्छा अध्ययन के लिये कर रही है। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि आज शाम से ट्यूशन शुरू करना है। अब तुम दोनों पढ़ाई के लिये तैयार हो जाओ। आज शाम को मैं जल्दी आऊँगा। रंजना को कहो कि चिन्ता की कोई बात नहीं है।"

मेरे समझाने से रामदास समझ गया और वह "ठीक है सर" कहकर चला गया। मैं लगातार तीन घन्टे अध्ययन करता रहा। निर्धारित समय के अनुसार पूरा दिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिताया। जिसके पीछे थोड़ा हर्षोल्लास तो थोड़ा संकोच भी था। निर्धारित समय के अनुसार शाम को सात बजे ट्यूशन लेने पहुँचा। ट्यूशन कक्ष में जैसे ही मैं पहुंचा वे दोनों मेरे पहले ही आकर बैठे हुए थे। काफी दिनों के बाद पहली बार ट्यूशन ले रहा था। दस दिन ऐसे बीते जैसे वर्षो बीत गये हों। मैं देख रहा था कि फिर वही मुस्कुराहट उन दोनों के चेहरे पर उमड़ रही थी। उन दोनों के चेहरे खिले-खिले थे। अधिकतर रामदास का चेहरा और ही प्रफुल्लित दिख रहा था।

उन दोनों को मैंने पूछा - "दीपावली की छुट्टियां कैसे बीती?" कहने लगे "अच्छी"। रंजना ने कहा - "हर वर्ष से यह वर्ष अधिक आनंदमय रहा।" मैंने कहा - "इसका कोई कारण?" रंजना ने संक्षिप्त में उत्तर दिया - "अच्छा अनुभव हो रहा था सर।" मैंने कहा - "अब आप की उम्र धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है और समय तथा उम्र के साथ-साथ व्यक्तिगत समझ भी बढ़ती जाती है। ऐसी अवस्था में जीवन को परखने का विशेष अवसर प्राप्त होता है। यही आप के साथ हो रहा है।" हम तीनों का वार्तालाप होता रहा। साथ-साथ पढ़ाई भी चलती रही। वे दोनों अध्ययन में बहुत आगे निकल चुके थे जब कि कक्षा के अन्य बच्चे रामदास व रंजना के सामने हल्के प्रदर्शित होते थे। रामदास ने शैक्षणिक दृष्टिकोण से बहुत प्रगति की थी। यह साफ साफ दिखाई दे रहा था। और इसका सारा श्रेय रंजना को जा रहा था। रंजना ने रामदास को अपने ही तरह सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जिसका उचित प्रतिफल रामदास को मिला। दिशाहीन स्वभाव का लड़का रामदास, रंजना के दिशा-निर्देश पर चल रहा था ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता था। क्योंकि गांव वालों ने रामदास को कभी अच्छा नहीं समझा पर अब उसको बदलते हुए स्वभाव व आचरण को देखकर रामदास ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था।

ट्यूशन का समय समाप्त हो रहा था। चलते-चलते रंजना बोली - "सर आप चार-पांच दिन कहां चले गये थे। हमारा तो बिल्कुल मन नहीं लग रहा था। आप की कोई समस्या हो तो बता दिया करें सर! संभव हो कि हम उसे हल करें। आप से हमें बहुत कुछ सीखना है सर! आप जैसे अध्यापक को पाना हम छात्र-छात्राओं को भाग्योदय समझना चाहिये।"

मैंने कहा - "ठीक है, मैं भी अपने आप को आप दोनों को पाकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाग्यशाली समझ रहा हूं।" इतना कहकर मैं उठ कर खड़ा हो गया।

24

रामदास और रंजना दोनो ही अपने जीवन से जुड़ी हुई घटनात्मक वार्तालाप की चर्चा करते हुए मेरा मन जीतने का प्रयास कर रहे थे। उन में वह बातें भी थी, कभी दिल्ली की, कभी आगरे की, कभी हरिद्वार की। इसमें और एक आकर्षण था। रंजना ने खीचे हुई फोटो का अलबम! उसमें उसने प्रमुखता से रामदास को नायक के रूप में प्रस्तुत किया था।

एक घटना का मुझे और पता चला। जब मैं नागपुर गया था उस दौरान वे दोनों एक बहुत बड़ी गलती कर बैठे थे। इसकी जानकारी मुझे रामदास की माँ से मिली। रामदास की माँ ने मुझे बुलवाया था। उन्होंने दो बार अपने घर में नौकर को बुलाने भेजा था पर मेरा कोई अता-पता नहीं था। ऐसा मुझे नौकर ने बताया। मैं उसी वक्त उसके साथ चल पड़ा। शाम को छः बज रहे थे। रविवार का दिन था और रामदास घर में नहीं था। मैं जब पहुंचा तो रामदास की माँ बिस्तर पर लेटी हुई थीं। वह शरीर स्वास्थ्य से अधिक कमजोर हो गई थी। उन्होंने मुझे पास ही कुर्सी पर बैठने को कहा और उन्होंने जो एक सत्य परन्तु आश्चर्यजनक संक्षिप्त कहानी का वर्णन किया उसे सुनकर मैं सोचता ही रहा गया। वह बताने लगी। मजाक के तौर पर रामदास की मां ने एकदिन उससे कहा - "बेटे, तुम बार-बार कहते हो कि मेरा विवाह सेठजी की लड़की से होगा। तुम एक दिन उस लड़की को मेरे पास लेकर मुझसे तो मिलवाओ।"

दीपावली के दूसरे दिन रामदास ने तिजोरी में से अपनी मां के जेवरात निकाले और रंजना को देते हुए कहा - "इन गहनो को पहनकर शाम को मेरे घर आ जाओ। मेरी माँ तुमसे मिलना चाहती है।" रामदास ने रंजना को जैसा कहा उसने वैसा ही किया।

दूसरे दिन आभूषणों का डिब्बा रामदास ने अपनी माँ के सुपुर्द करते हुए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहा - "यह लो माँ अपने गहने! अब तो प्रमाणित हो चुका है न कि सेठ जी की लड़की आप की बहू बनना चाहती है? उसके घर में गहने एवं आभूषणों की कमी नहीं है माँ पर वह प्रमाणित करने के लिये आप के गले की माला पहन कर आप के सामने उपस्थित होना चाहती थी।"

रामदास के इस संवाद पर उसकी मां की आंखों में करूणा के आंसू उमड़ आए थे। रामदास की मां डर रही थी कि लड़की के माता-पिता को यदि पता चल गया था तो उत्तर देना कठिन हो जाएगा और रामदास का चरित्र गांववालों के सामने पहले से ही चरित्रहीन था जो और उजागर हो जाएगा। वह यह भी समझ रही थी कि रंजना का हाथ रामदास के लिये मांगना इतना आसान नहीं है। उससे अच्छा तो यही है कि यह बात मुंह से कभी निकाले ही नहीं। रामदास की मां मुझसे कहने लगी - "देखिए अध्यापक जी, इन बच्चों को आप ने नादान समझ लिया होगा। परन्तु देखिए यह दोनों कितना बड़ा अपराध कर रहे हैं। मैं कई दिनों से समझ रही थी कि यह दोनों अपने माता पिताओं के साथ-साथ एक सज्जन अध्यापक की आंखों में भी धूल झोंक रहे हैं। रामदास अच्छा नहीं कर रहा है, किसी की लड़की को बहकाकर उसे अपने माता-पिता के विरूद्ध चलने के लिये राजी करना ठीक नहीं है। गांव का मामला है। ऐसी घटनाओं को गांव के लोग खानदान पर कीचड़ उछालना समझते हैं।"

मैंने कहा - "आप ठीक कह रही हैं।"

आगे वह बोली - "आप सबसे पहले रामदास को समझाइए। ऐसे प्यार के किस्से व कहानियां चित्रपटों में होते हैं वस्तुस्थिति में नहीं। वह आप की बात समझ जायेगा। मैं नहीं चाहती कि मेरा बेटा समाज में बदनामी का कारण बने। मैं अपने बेटे की आकांक्षाओं पर पानी नहीं फेरना चाहती। पर मैं एक विधवा होने के नाते समाज के विपरित परिस्थितियों में सेठजी जैसे व्यक्ति के घर जाकर उनकी बेटी का हाथ अपने बेटे के लिए माँगू यह सर्वथा असंभव होगा।"

रामदास के मां के विचार सुनकर मैं उन्हें उचित आश्वासन देकर वहां से चला आया। वह बिल्कुल ठीक कह रही थी। साथ-साथ उनके दिमाग में यह भी डर भर गया था कि गांव वाले उन्हें पागल न समझे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने उनको कहा - "मैं रामदास को समझाने का प्रयत्न करूंगा। मैंने उन्हें अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने की बात कही और कहा कि वे अधिक चिन्ता न करें। रामदास वही करेगा जो वे चाहेंगी।"

रात्री के दस बजे रामदास मेरे निवास स्थान पहुंच गया। उसे पता लग गया था कि मैं उसके घर गया था और उसके व रंजना के विषय में उसकी मां के साथ मेरी चर्चा हुई थी। वह इस विषय पर सारी बातें जानना चाहता था जो उसकी मां से हुई थी। मैंने उसे समझाते हुए कहा - "यह तुमने ठीक नहीं किया रामदास। मैं तुम्हें बार-बार कहता रहा कि तुम प्रेम-सम्बन्धों की कोई भी बातें अपनी मां तक मत पहुंचने देना पर तुमने तो अपनी मां के सामने रंजना को अपनी दुल्हन के रूप में पेश किया। यह सब करने की क्या आवश्यकता थी? तुम अभी छात्र हो, पढ़े लिखे नौजवान नहीं। ना रंजना की ही इतनी उम्र है कि वह न्याय विधि के आधार पर तुम्हारा साथ दे सके।"

25

मैं रामदास को काफी देर तक समझाता रहा। साथ-साथ उसे यह भी कहा कि "इसी कारण तुम्हारी मां का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। तुम्हारी मां को यह सब पसन्द नहीं है। इसी कारण उन्होंने अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया है।"

रामदास अपनी सफाई देते हुए बोला - "मैं अपनी मां के स्वास्थ्य की ओर पूरा ध्यान दे रहा हूं सर पर मुझे क्या पता था कि मेरी मां मेरी परीक्षा ले रही है। जिस दिन मैं रंजना को अपने घर ले गया था उस दिन वह खूब रोई। मुझसे वह बार-बार कहती रही, कल से तुम उसके घर पढ़ने नहीं जाओगे। तुम्हारा पढ़ाई का एक बहाना है रात-दिन उसी लड़की के बारे में सोचते रहते हो।" मैंने उन्हें बहुत समझाया। पर अब रंजना और मेरे आपसी सम्बंधों के प्रति वह अपने मन में विपरीत सोच बना चुकी हैं।

रामदास को बिठाकर मैंने उसे अच्छी तरह समझाया कि वह रंजना का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्यान छोड़ दे कुछ दिनों के लिये वह रंजना के घर ट्यूशन के लिये न आए। वह अपने ही घर मन लगाकर पढ़े। मां के लिये विश्वास बनाकर रखे कि वह समझे उन्हीं का कहना मान रहा है। यदि उसके पास रंजना की दी हुई वस्तुएं हो तो वह छिपाकर रखे या रंजना को लौटा दे।

रामदास ने ऐसा ही किया जैसा मैंने कहा। उसने रंजना की दी हुई अनेक वस्तुऐं छिपाकर रख दी। वस्तुओं का वर्णन करना उचित नहीं है। बस प्यार अन्धा होता है। रंजना की एक मात्र फोटो कागज में लपेट कर अपनी जेब में रखने लगा।

पर चार-पांच दिनों से रामदास ट्यूशन के लिए नही आया तो रंजना बेचैन होने लगी। उसके न आने के कारणों को मैंने रंजना को बता दिया था। पर वह अस्वीकार करने लगी। कहने लगी - "ऐसी छोटी-छोटी बातों पर अन्धविश्वास करना उन्हें कौन सिखाता है सर! जो प्रमाणित है क्या वह यर्थाथ नहीं है?" मैं उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। रंजना के लिए रामदास को भुलाना असंभव था। स्वयं मुझे भी रामदास की कमी अखरने लगी थी। पर मैं भी क्या करता। मैं स्वयं मजबूर था। उन दोनों को आपस में न मिलने से रामदास से अधिक रंजना संतप्त दिखाई देती थी। क्योंकि ट्यूशन के समय पर उन दोनों का मिलना, अकेले में बैठकर वार्तालाप करना, यह उन दोनों के लिए सुवर्ण अवसर था।

रामदास प्रति दिन विद्यालय तो आ रहा था। पर अनावश्यक मजबूरी का तनाव उसके भी सिर पर मंडरा रहा था। वह भी रंजना से बातचीत करने के लिए आतुर रहता था। पर कक्षा में सभी बच्चों के सामने वे दोनों स्वतंत्र रूप से बातचीत नहीं कर सकते थे। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र का परिसर था। फिर भी संक्षिप्त शब्दों में मैंने उन दोनों को कभी-कभी बातचीत करते हुए देखा।

दो-चार दिनों के बाद रामदास ने विद्यालय आना बंद कर दिया। इस बीच रंजना का अस्वस्थ बैठना जारी था। एक दिन जैसे ही मैं ट्यूशन लेने रंजना के घर जाने लगा उसी समय रामदास मेरे निवास स्थान पहुंचा। बोला - "सर, मेरे साथ चलिये, मां की स्थिति बहुत खराब हो गई है। उन्हें आज अमरावती शहर के महिला चिकित्सालय में भर्ती कराने जा रहा हूं।" मैंने कहा - "चलो! मैं रंजना को ट्यूशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के लिये मना कर आता हूं क्योंकि वह मेरी प्रतीक्षा न करे। तुम तब तक अपने घर चलो।" वह तेजी से अपने घर की तरफ निकल गया। मैं रंजना के घर जाकर उसे सूचित करके रामदास के घर पहुंचा। जब उसके घर पहुंचा तो बहुत सारी महिलाएं एकत्रित हुई थी। रामदास ने सरकारी अस्पताल से एम्बूलेन्स गाड़ी भी मंगवा ली थी। मेरे पहुंचने के पहले रामदास की मां को पहले ही एम्बूलेंस में चढ़ा दिया गया था। वे अशक्तता के कारण बेहोश पड़ी हुई थीं। हम तत्काल अस्पताल के लिये चल पड़े। इसके पहले मैंने रामदास से रूपये-पैसो की चर्चा की ताकि मैं भी अपने पर्स में कुछ रखूं। बोला - "इसकी चिन्ता मत करिये सर!"

एम्बूलेन्स जैसे ही गांव के बाहर आ गई वाहन चालक तेजी से भगाने लगा। साथ-साथ वह आवश्यक तथा अनावश्यक समय पर भी आपातकालीन हार्न का प्रयोग करने लगा। समय शाम का था और करीब-करीब अंधेरा हो चुका था। वाहन चालक गाड़ी बहुत संतुलित ढंग से चला रहा था। जहां आवश्यकता होती वहां वह गति धीमी कर देता और समतल मार्ग पर तेज चलाता। जगह-जगह वह भीड़ को काटता हुआ आगे बढ़ता।

तड़ेगांव से अमरावती शहर पचास किलोमीटर अन्तर का था। लगभग एक घन्टे में एम्बूलेन्स अस्पताल के आपातकालीन वार्ड के सामने खड़ी हो गई। रामदास की मां को स्ट्रेचर द्वारा गाड़ी से उतारकर वार्ड में ले जाया गया। डाक्टर्स ने तुरन्त उपचार शुरु किया। हम प्रतीक्षा कक्ष में बैठे रहे। दस-बीस मिनट के बाद हमें समाचार मिला कि मरीज को होश आ गया है। इतना सुनते ही हमें राहत मिल गई। साथ-साथ हमें यह भी सुनने को मिला कि मरीज व मरीज के रिश्तेदारों ने मरीज के प्रति लापरवाही दिखाई।

26

दो दिन हम अमरावती में ही रहे। तीसरे दिन सवेरे डाक्टर्स ने अनुमति दी कि मरीज को घर ले जा सकते हैं। उसी दिन दोपहर को हम एम्बूलैन्स से तड़ेगांव दशासर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लौट आए।

रामदास ने अपनी मां के इलाज में काफी खर्च किया जबकि सरकारी अस्पताल में इलाज हो रहा था। दूसरी बात वह बार-बार यही कहता था कि मां को यदि बचा नहीं पाए तो मेरा जीवन बेसहारा बन जायेगा। अस्पताल में ही वह रात-दिन प्रमुखतः से चिन्तित दिखाई देता था। शायद वह दो दिनों से ढंग से सोया भी नहीं।

समय के साथ-साथ धीरे-धीरे रामदास की मां का स्वास्थ्य सुधरने लगा था। रामदास को मैंने विशेष सलाह दी कि जब तक उसकी मां चलने फिरने लायक नहीं होती तब तक उसे विद्यालय व ट्यूशन के लिए आने की आवश्यकता नहीं है। रामदास अपेक्षित रूप से मान गया।

वह वैसा ही करने लगा जैसा हमने उसे कहा। पर दस दिन में उसका भी स्वास्थ्य गिर गया था। वह कमजोर दिखाई देने लगा। वह जब देखो तब चिन्ता में खोया-खोया रहता था। मैं रोज-प्रतिदिन शाम सवेरे उसे मिलने जाता। साथ-साथ उसकी मां को भी मिलता था। उसकी मां चलने-फिरने लगी थी। थोड़ा-थोड़ा बोलती थी पर शरीर में कमजोरी अवश्य दिखाई देती थी। रामदास ने न कभी ट्यूशन का जिक्र किया न ही उसने रंजना के प्रति पूछताछ की। परन्तु वह मन ही मन अवश्य सोच रहा था कि रंजना का हाल-चाल पता करू। पर उसने न तो पूछताछ की और न ही रंजना से मिलने का जिक्र किया।

उधर रंजना मुझसे बार-बार कहती थी कि "सर! मैं रामदास की मां से मिलना चाहती हूं।" रंजना की यह बातें मुझे अच्छी नहीं लगी। उसे पता नहीं था कि रामदास की मां उन दोनों के प्रेम-प्रसंगो का विरोध कर रही हैं। और रंजना रामदास की मां को मिलकर भविष्य के रिश्ते को मजबूत कर रही है। यह सिद्ध करना उचित नहीं था। अच्छा हुआ कि रामदास ने अपनी मां के विचार रंजना के सामने स्पष्ट नहीं किये थे। ऐसी अवस्था में रंजना इस स्थिति को और आगे बढ़ा सकती थी। क्योंकि यह प्रमाणित था कि रंजना जिद्दी स्वभाव की लड़की थी।

इस तरह एक सप्ताह और बढ़ गया। मीठी-मीठी ठंड आरम्भ हो गई थी। एक दिन मैं देर रात तक अध्ययन करता रहा। अचानक दरवाजे पर ठक-ठक की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवाज हुई। मैंने दरवाजा खोला। देखा रामदास का नौकर खड़ा था। मैंने पूछा - "कहो कैसे आना हुआ। सब ठीक-ठाक तो है?" बहुत देर तक वह मेरे चेहरे पर देखता रहा और फिर वह हल्के से बोला - "अध्यापक जी! आपको रामदास ने बुलाया है। अभी-अभी उसकी मां का निधन हो गया।" मैं फटी आंखों से उसे देखता रहा। मेरे पैर कांपने लगे। मेरे शरीर में शक्ति नहीं रही। उस समय रात्री के दो बज रहे थे। मैंने नौकर से कहा - "चलो तुम, मैं आ रहा हूं।" रामदास का नौकर दुखद समाचार सुनाकर चला गया। मेरे मुंह से अचानक निकला - "हे भगवान रामदास के साथ क्या हो रहा है? . . . क्या होगा रामदास का?" मैंनें अपने घर का दरवाजा बंद किया और रामदास के घर की तरफ चल पड़ा। जब रामदास के घर पहुंचा तब उसके घर का वातावरण क्षुब्ध था। सर्वत्र आंसू ही आंसू दिखाई दे रहे थे। कुत्तों के रोने और रात्री में पक्षी एवं पशुओं की मनहुस ध्वनी वातावरण को और बोझिल बना रही थी। घर के भीतर मोहल्ला एवं पड़ोस की बहुत सारी महिलाएं संतप्त अवस्था में बैठी हुई थीं। उन्हीं के बीच में जमीन पर रामदास की मां का शव रखा था। पार्थिव शरीर पर चादर ओढ़ा रखी थी। मां के शव के पास थोड़ी दूर रामदास माथे पर हाथ रखे बैठा हुआ था। दोनों हाथ जोड़कर मैंने शव को प्रणाम किया। फिर रामदास का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले आया। बाहर आते ही वह फफककर रो पड़ा।

दुःख को बाहर निकालने के कितने सशक्त माध्यम है ये आंसू। थोड़ी देर तक वह आंसू बहाता रहा। पर वह हिम्मत का पक्का था। उसके घर आने वाले व्यक्ति को वह बराबर पहचान कर जो उन्हें सांत्वना दे रहे थे उनके वह गले मिलता। कभी कोई महिला रामदास को देखकर बिलख कर रोने लगती। रामदास स्वयं संभल जाता और देखने वालो को यह साबित करता मैं अकेला नहीं हूं आप लोग भी मेरे साथ हैं। ऐसे दृश्य आत्मा को छू जाते। ऐसी अवस्था में रामदास समझदारी दिखाता एवं उन्हें धीरज बंधाता।

जब कुछ समय के बाद अर्थात एक घन्टे तक जब उसे मेरा साथ मिला तो वह कुछ बोलने भी लगा। उसकी जबान खुलने लगी। कुछ भावनाओं में भी आने लगा। वह मुझसे बोला - "सर! क्या ऐसा लगता था कि मेरी मां मर जायेगी? वह बीमार थी। उसे सरकारी अस्पताल ले जाकर इलाज भी कराया। वह ठीक भी हो गई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर अब क्या रह गया था? मात्र हम दोनों ही जानते हैं कि उन्होंने एक छोटी सी बात को दिल में बिठाया और हमेशा-हमेशा के लिये चली गई।"

वह बोलता गया - "मैं अब इस धन सम्पत्ति और वैभव का क्या करूंगा सर? अनाजों से गोदम भरे पड़े हैं। पचास गाय-बैल खूंटे से बंधे हैं। उनकी सेवा के लिये नौकर रात दिन काम कर रहे हैं। और सौ एकड़ जमीन में गेहूं-धान-कपास खूब पैदा हो रहे हैं। क्या करूंगा मैं इन सब का सर?" रामदास अपने मन की रही सही बात स्पष्ट करता गया। जिसे कहने से उसका मन हल्का हो रहा था। उसे मैं रात भर दिलासा देता रहा। समय तेजी से भाग रहा था।

27

धीरे-धीरे रात बीतती गई। रातभर लोगो के आने-जाने का तांता लगा रहा। सवेरे-सवेरे मैंने रंजना को अपनी मां के साथ अन्य महिलाओं के बीच में बैठे देखा।

रामदास ने अपने रिश्तेदारों को समाचार देने हेतु निजी कर्मचारियों को भेज दिया था। रामदास को अपने मामा के आने की प्रतिक्षा थी। शव को श्मशान ले जाने का समय सवेरे दस बजे का रखा गया। रामदास के मामा साढ़े नौ बजे पहुंच गये। पूर्व निर्धारित समय पर अर्थी उठी। अर्थी को लोगों ने हाथ लगाकर कन्ध े पर रखा। रामदास की आंखों से जैसे लगातार आंसू बह रहे थे। इसके पश्चात् भी वह अपना सन्तुलन बनाए हुए था।

श्मशान भूमि गांव के बाहर ही थी। अर्थी के पीछे गांव के बहुत लोग थे। उनमें सभी थे, किसान मजदूर एवं जमींदार भी। श्मशान भूमि पर पहुंचते ही संस्कार विधि के अनुसार अर्थी सजाई गई। रामदास ने चिता को आग लगाई। चिता धू-धू कर जलने लगी। आवश्यक समय के पश्चात हम सब श्मशान भूमि से लौट आए।

दस दिनों तक रामदास कहीं पर भी आ-जा नहीं सकता था। दस दिन तथा तेरहवीं क्रिया कर्म समाप्त होने के बाद शोकाकित दिनों का समापन माना गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पश्चात् धार्मिक विधि के अनुसार रामदास मंदिर या अन्य किसी के निवास स्थान में आवागमन कर रहा था। अब रामदास का स्वास्थ्य गिर गया था। सिर के बाल व मूंछे मुंडवाने के कारण वह और भी कृषकाय लग रहा था। वह सिर पर लाल अंगोछा बांधने लगा था।

लगभग एक महीने बाद वह विद्यालय आने लगा और जी-जान से दिन रात मेहनत करने लगा। पर फिर भी उसका जीवन अस्तव्यस्त हो गया था। खाना बनाना, घर को सुसज्जित रखना, यह काम उसकी मां के थे। पर अब नौकरों के भरोसे पर आ गया था। अधिकतर अब वह मेरे साथ ही शाम का भोजन भोजनालय में करने लगा था। वह ट्यूशन भी नियमित रूप से आने लगा था। उसी मां का सपना था कि रामदास पढ़-लिखकर उच्च अधिकारी बने। शायद रामदास अपनी मां का सपना पूरा करने में जुटा हुआ था। वह छुट्टी के दिन मुझे अलग से घर बुलाकर दो घन्टे पढ़ाने को कहता था और मैं ऐसा ही कर रहा था क्योंकि रामदास की लगन और पढ़ाई के प्रति रूचि ही उसकी प्राथमिकता थी। और मुझे यह पूरी अपेक्षा थी कि वह मैट्रिक की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास कर लेगा।

धीरे-धीरे रामदास शोकाकुल दिनों को अपनी आंखों से ओझिल करता जा रहा था। उसके स्वास्थ्य में परिवर्तन दिखाई दे रहा था। सिर और मूछो के बाल उगने लगे थे। वह जो प्रतिदिन वर्जिस करता आ रहा था उसमें पिछले कुछ दिनों से विराम लगा हुआ था। अब रामदास ने पुनः वर्जिस करना आरम्भ किया था। उसका शरीर फिर सुडोल दिखाई देने लगा। वह अपनी मां के मरने का गम भूलकर अपने वास्तविक जीवन में उतरने लगा था।

पर मैं पिछले कुछ दिनों से यह अनुभव कर रहा था कि उसकी प्रेम-प्रसंग में रूचि घट गई थी। बार-बार उसके मुंह से रंजना-रंजना निकलता था, वह कुछ दिनों के लिए बंद हो गया था। वह ट्यूशन के समय जिस उत्साह से रंजना के सामने बैठता था वह उत्साह अब दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था रामदास की रूचि अब रंजना के प्रति उतनी नहीं है। जब तक मां जीवित थी तब तक रामदास का मन इस प्रेम-प्रसंग के लिए प्रफुल्लित रहता था, पर अब घट गया था। वह अचानक या एकाएक रंजना से कम बोल रहा था। उसे कम उत्तर दे रहा था। उसने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंजना से दूरियां भी बना ली थी। रंजना को रामदास की मां के मरने का दुःख था। परन्तु रामदास के सामने प्रकट नहीं कर सकती थी।

रंजना जब देखो तब रामदास के चेहरे पर के दुःख भरे भावों को निहारती थी। पर उसकी वह विवेचना नहीं कर सकती थी। वह हरसंभव रामदास को मदद करना चाहती थी पर उसके लिए बहुत कुछ संभव नहीं था। रामदास के उदासी को वह समझ रही थी। इसलिये वह उसके साथ अधिक बोलना भी उचित नहीं समझ रही थी।

मैं उन दोनों को ऐसी अवस्था में भली प्रकार से समझ पा रहा था। रामदास भले ही रंजना के प्रति निरूत्साह दिखा रहा था पर उसके दिल में रंजना के लिए अधिक जगह थी। वह रंजना के लिए कुछ भी करने को तैयार था।

समस्या उन दोनों की एक जैसी थी। और अब रामदास की मां का चले जाना उन दोनों के लिये कठिन समस्या बन गई। रामदास जो भी निर्णय लेना चाहता उसके लिये मां का आशीर्वाद बहुत था। भले ही उसे नकारात्मक दृष्टिकोण का सामना करना पड़े। पर उसके ऊपर रामदास के लिये और कोई छत नहीं थी। इसलिये रामदास को सन्तुष्टि मार्ग नहीं रहा।

अब धीरे-धीरे वह समय बीत रहा था जहां रामदास को अब अपने पैरों पर खड़ा रहने के लिये बाध्य होना था। और हो भी ऐसा ही रहा था। रामदास ने हर काम पर नियत्रंण कर लिया था। घर, खेती, पशु, सामाजिक कार्य एवं साथ-साथ रंजना के रूप में भावी प्रेम की अभिलाषा भी। रामदास का चेहरा प्रति दिन खिलता हुआ दिखाई दे रहा था।

28

रामदास के घर बैठे-बैठे मैंने उसे टटोलना चाहा। मैंने कहा - "रामदास अब बहुत हो चुका है रंजना को अपनाना, उससे प्रेम वार्तालाप करना, उससे अपनापन दिखाना, . . . क्या तुम उसे भूल नहीं सकते हो। जैसे कि मैं कुछ दिनों से देख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहा हूं कि तुम दोनो में अब वह उत्साह दिख रहा है?"

वह मन ही मन मुस्कुराने लगा। आगे बोला - "जो प्रश्न आप मुझसे कर रहे हैं यह प्रश्न आप रंजना से करके देखिए न सर।"

मैंने कहा - "रंजना पर मेरा इतना अधिकार नहीं है जितना तुम पर है।"

"ऐसा क्यों सर! जैसे मैं आप का छात्र हूं वैसे ही रंजना आप की छात्रा है। अधिकार तो उस पर भी है आप का।"

मैंने कहा - "ऐसा नहीं है रामदास। उसके दिल में तुम्हारे लिये जो जगह बनी है उसको मैं आज तक समझ नहीं पाया, पर तुम्हारे तरफ से जो कुछ हो रहा है इसे मैं तुम्हारी जिद्द समझ रहा हूं।"

"यह मेरी जिद्द नहीं है सर! अब ऐसा है कि हम दोनों कभी एक-दूसरे से जुदा नहीं हो सकते।"

"मैं तुम्हें यही सलाह देना चाहता हूं रामदास। यह जिद्द तुम छोड़ दो, कल उसके माता-पिता को पता चला तो वे क्या समझेंगे? फिर एक दिन गली-मोहल्ले में भी चर्चा होगी ऐसी अवस्था में रंजना के दिल पर क्या गुजरेगी? हो सकता है वह भी तुम से नाता तोड़ दे।"

"जैसा भी हो सर! मैं यह भी स्वीकार कर लूंगा। यदि भविष्य में मेरे जीवन में दुःखान्त दिन आने लगे तो मुझे परीक्षा देने के लिये तैयार रहना होगा।"

"इसमें तुम्हारा भविष्य खराब हो जायेगा रामदास। "

"तो फिर पर्याय भी तो नहीं है सर! मेरे जीवन में दो व्यक्ति थे। मेरी मां और रंजना। मां तो चली गई अब जो भी है वह सब कुछ रंजना है। मेरे लिये वह, और मैं उसके लिये जी रहा हूं।"

"और मेरी भी तो कोई भूमिका होगी रामदास, तुम्हारे मन में।"

"सर, आप हमारे लिये आदरणीय हैं, पूज्यनीय हैं।" इतना कहकर वह मेरे पैर छूने लगा।

रंजना के विरूद्ध रामदास से वार्तालाप करना उचित नहीं था। फिर उसकी अपनी इच्छा या उसका निर्णय एक मात्र रंजना पर ही निर्भर करता था। रंजना रामदास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के लिये कांच की गुड़िया का काम कर रही थी। यह या तो मैं जान रहा था या फिर रामदास की मां।

रामदास को जैसे कहा गया कि इस प्रेम सम्बन्धों को समाप्त कर दो। इस तरह रंजना से नहीं कहा जा सकता था। इसके अनेक कारण थे।

रामदास को सुधारने का कार्य मैंने अपने हाथ में लिया क्योंकि गांव में उसका नाम हवा की तरह मेरे कानों में गुंज रहा था। हर कोई उसका नाम लेकर मेरे मन में विवाद भरने का काम किया करता था। इसलिए मैं चाहता था कि मैं देखूं यह रामदास कौन है? वस्तुतः रामदास सबके लिए डर का माध्यम था। परन्तु पहली ही नजर में उसने मुझे पहचाना और मैंने एक हीरे को परखा। कक्षा के सारे छात्र एवं छात्राएं रामदास की तरह अपनी जगह मेरे दिल में नहीं बना सके। परन्तु रामदास लाख कोशिश करने के पश्चात् भी वह मेरी नजरों से हट नहीं रहा था।

दूसरी बात, रंजना और रामदास में भयंकर अन्तर था। वह दोनों साथ-साथ बैठकर एक दूसरे को दिल दे बैठेंगे, यह तो न मैंने सोचा था न ही इनके माता-पिता ने। पर अब बहुत देर हो चुकी थी। मेरा सोचना सार्थक नहीं था। मैं प्रयास कर रहा था कि रामदास बिना किसी क्षति के मैट्रिक पास कर ले तो फिर मैं उसके शिक्षा की गति को रूकने नहीं दूंगा। एक दिन वह बहुत बड़ा आदमी बनेगा और गांव तथा समाज में प्रतिष्ठा स्थापित करेगा।

कभी-कभी व्यक्ति की स्वाभाविकता बहुत मंहगी पड़ जाती है। रामदास के प्रति मेरा सोचना शायद ऐसा ही हो रहा था। पर एक बात और सम्मान की थी कि वह करीब-करीब मेरा कहा अवश्य मानता। मेरे आगे वह संक्षिप्त तथा सोचकर बोलता। यही उसके संस्कार में बदलाव था।

नवम्बर महीने के अन्तिम सप्ताह की बात थी। मैं दोनों को रंजना के घर पढ़ा रहा था। अभी दस मिनट भी नहीं हुये थे कि माई मुझे बुलाने आई। बोली - "सेठ जी आप से बात करना चाहते हैं।" सेठ जी का बुलाना कुछ अनहोना सा लगा। मैं दोनों को पढ़ते रहने का कहकर सेठजी से मिलने चला गया।

सेठजी अतिथि कक्ष में मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे। पहुंचते ही मैंनें उनको नमस्ते किया और उन के सामने सोफासेट पर बैठ गया। उनके चेहरे पर बेचैनी के भाव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थे पर अपनी गंभीरता बनाए हुए थे। मुझे सम्बोधित करते हुए वे बोले - "कैसी चल रही है पढ़ाई। अब हमारी लड़की तो अंग्रेजी विषय में बहुत सुधार कर गई है। यह उसके पढ़ने-लिखने व बोलने से पता चलता है।"

मैंने कहा - "जी, वैसे भी वह बहुत होशियार है। वह समझदार भी है।" बीच में बात काटते हुए उन्होंने कहा - "समझदारी तो संस्कार से आती है अध्यापक जी। घर परिवार के संस्कार से वह बहुत अभ्यस्त है। पर अंग्रेजी विषय का जो आपने उसे ज्ञान सिखाया, यह उसकी रूचि थी। आप की वह बहुत प्रशंसा करती रहती है। उसके हस्ताक्षर व लिखावट मोतियों की तरह देखकर मन प्रसन्न होता है।"

29

बहुत समय तक रंजना की प्रशंसा होती रही। थोड़ी देर में पानी आया, चाय आई। पश्चात सेठ जी ने जिस उद्देश्य से मुझे बुलाया था वह बात स्पष्ट करने लगे। कहने लगे - "अध्यापक जी, तीन दिनों के लिए मैं कल नासिक जा रहा हूं। लौटने के बाद शायद मुझे आप की जरूरत पड़ें। आपको मेरे साथ कलकत्ता चलता होगा। तब आप क्या एक सप्ताह की छुट्टी ले पायेगें?"

मैंने कहा - "जी बिल्कुल, आप के लिये हर काम को मैं यथासंभव उपस्थित रहूंगा। पर क्या आप बतायेंगे ऐसा क्या आवश्यक काम आ गया है जो मुझे आप के साथ कलकत्ता चलना होगा? फिर आप के चहेरे के हाव-भाव कुछ चिन्तित दिखाई दे रहे हैं!"

उन्होंने जेब में से एक पत्र निकाला और मुझे पढ़ने को दिया। कहने लगे - "आप इस पत्र को पढ़िए।" पत्र नासिक से उनके मौसेरे भाई ने लिखा था। पत्र का निष्कर्ष यह था - "आदरणीय भाई साहब, नमस्कार, आप को सुचित करने में हर्ष हो रहा है कि दो दिन पहले मैं कलकत्ता से वापस आ गया हूं। मेरी भेंट अचानक चाचा अग्रवाल जी से हुई। उन्होंने बेटी रंजना के विवाह की चर्चा की।

श्री रामजी का कलकत्ता में जूट का कारखाना है। उनके द्वितीय पुत्र आदित्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एम. कॉम. की परीक्षा पास करके कारखाना संभालते हैं। व्यक्तिगत रूप से लड़का विद्वान व धनी है। इस परिवार को आप भलीभांति जानते हैं। मैं चाहता हूं हमारी बेटी रंजना का शुभ विवाह श्री आदित्य के साथ हो। यदि आप इस शुभ अवसर को खोना नहीं चाहते हैं तो आप पत्र मिलते ही नासिक पहुंचने का कष्ट करें। बाकी वार्तालाप स्वयं मिलकर होगा।

धन्यवाद!

आपका छोटा भाई

घनश्याम।"

पत्र को पढ़ते ही मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। वह पत्र मैंने सेठ जी को लौटा दिया। वे मेरे बदलते हाव-भाव को देखने लगे। मेरी ओर देखकर उन्होंने कहा - "अध्यापक जी पत्र को पढ़कर आपने तो खुश होना चाहिए पर आपके चेहरे पर निराशा क्यों दिखाई दे रही है।" (को)

मैंने कहा - "जी सेठ जी, पत्र पढ़कर मुझे ऐसा लग रहा है कि आप बेटी के विवाह के लिए जल्दबाजी कर रहे हैं। अभी तो उसकी पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई है, और उसकी उम्र भी बहुत कम है।"

वे बोले - "अध्यापक जी, बेटी हमेशा पराई होती है। हर परिवार में यही सोचा जाता है कि जल्दी से जल्दी बेटी का विवाह हो और वह अपने घर चली जाए। समय के पहले बेटी का विवाह होना बहुत बड़ी बात है।"

मैंने कहा - "पर आप रंजना के लिये एक-दो वर्ष रुक सकते हैं। मेरा मानना यह है कि जब वह विश्वविद्यालय जाने लगेगी तो उसके लिये और भी ऊंचे-ऊंचे रिश्ते आयेंगे?"

"रिश्ते तो उसके लिये आज भी बराबर आ रहे हैं। किससे मना किया जाये और किसे नहीं। फिर विवाह टालने का कारण भी क्या कहा जाए। बेटी होशियार है हम अपने सिर का बोझ उतारे यह मैं भी चाह रहा हूं और बेटी की मां भी।"

मैंनें पुनः निवेदन किया - "कम से कम परीक्षा तक रुक जाइए। लड़की के विचार जानने का प्रयास तो कीजिए?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुझे टोकते हुये उन्होंने कहा - "अध्यापक जी! विवाह के लिये बेटी की सलाह लेना मूर्खता है। यह शहर नहीं गांव का मामला है। फिर मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी बेटी ने आज तक मेरे कहने को कभी टाला नहीं। उसकी मां उसे सारी जानकारी दे देगी। उस के बाद वह अपना उत्तरदायित्व समझेगी।"

सेठजी को अपनी बेटी पर बहुत भरोसा था। परन्तु मुझे ऐसा लग रहा था कि रंजना इस समाचार को सुनते ही पूरा घर सिर पर उठा लेगी। विस्तार से सेठजी को सुनने के बाद मैं चला गया। ट्यूशन लेने को मन नहीं किया। उन दोनों के सामने बैठने की मेरी इच्छा नहीं हुई। जबकि मेरे आदेशानुसार वे दोनों भी ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहे थे।

मैने कहा - "चलो छुट्टी करो, कल क्लास होगी।" इतना कहकर मैं बाहर आ गया। रामदास भी उठकर बाहर आया तथा अपने घर की ओर जाने लगा। मैंने उन दोनों को कुछ नहीं बताया। परन्तु रंजना के विवाह की बात मेरे सीने को चीर गई। मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे मेरे साथ का कोई व्यक्ति अचानक ही दूर चला जा रहा है। दूसरी चिन्ता यह थी कि यदि ऐसा हुआ तो रामदास पर क्या गुजरेगी? वह किस-किसको माफ करेगा और किस किस को नहीं? रंजना के विवाह की खुशी सब को होगी। पर रामदास क्या स्वीकार करेगा कि रंजना की शादी किसी और के साथ हो जाये? वास्तव में रामदास बरबाद हो जायेगा। रंजना का विश्वास मुझपर से उठ जायेगा।

स्वयं पर जो गर्व था वह मिट्टी का ढेर बन गया। कभी-कभी विचार आता था कि रामदास के लिये और क्या किया जाए? इस द्वन्द्व से उभरने के लिये और क्या प्रयास करने चाहिए? पर जो मैं सोच रहा था वह निरर्थक था। रामदास और रंजना अब यह दोनों भी बिछड़ जाऐगें। वह दोनों त्याग की भावना शायद ही अपनाएंगें। इस त्याग को स्वीकार करना असंभव होगा। इसी कारण मैं आरम्भ से ही उन दोनों को समझाता रहा। उन दोनों को पहले से ही सावधान करता रहा। पर वे दोनों भी मान नहीं रहे थे।

संभवतः यह बात अब खुलकर सामने आयेगी कि वह दोनों साथ-साथ ट्यूशन पढ़ते थे। साथ-साथ घन्टों तक बैठते थे और नतीजा यह निकला कि दोनों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपस में प्रेम कर बैठे और अब दोनों को एक-दूसरे से शंक होने से जुदा नहीं पा रहे हैं।

30

मुझे अपने सम्मान व इज्जत का डर था। यदि उन दोनों का प्रेम-प्रसंग गांव में उजागर हो गया तो दोषी मुझे ही ठहराया जायेगा। गांव के समझदार लोग यही कहेंगे कि अध्यापकजी को पता नहीं था क्या? क्या अध्यापक जी विरोध नहीं कर सकते थे? क्या ऐसा हो सकता है कि अध्यापक जी को जरा सी भी भनक नहीं थी? इस तरह चर्चा होगी। समाज यही कहेगा कि अध्यापक जी सब जानते थे। रामदास से उन्हें अवश्य कोई प्रलोभन था। उनकी यह शरारत थी। अध्यापक जी ने ही रामदास को उकसाया है।

मैं एक दिन कक्षा में बच्चों को पढ़ा रहा था। सभी बच्चे उपस्थित थे पर उनमें से रामदास व रंजना नदारत थे। दोनों का अनुपस्थित रहना मुझे अजीब सा लगा। दोनों कभी भी एक साथ गायब नहीं रहे। पर उस दिन दोनों गायब थे। क्या उन दोनों को पता चल गया होगा? यदि रंजना को उसकी मां ने बताया होगा कि तुम्हारे लिये लड़का ढूंढा जा रहा है तो उसने रामदास को बता दिया। और हुआ भी ऐसा ही। रंजना की मां ने उसे बताया और समझाया कि विरोध नहीं करना। पर रंजना पर तो पहाड़ टूट पड़ा था। उसने रामदास को अपने घर बुलाकर सब कुछ बता दिया तथा आगे की रणनीति तैयार होने लगी। अपने विवाह की बात सुनकर रंजना न तो रात को सोई और न ही खाना खाया। दूसरे दिन उसने अपनी नौकरानी द्वारा रामदास को अपने घर बुला लिया। उन दोनों की चर्चा होती रही। रंजना के माता-पिता तो अब तक यही सोचते आ रहे थे कि उन दोनों का मिलना साथ-साथ बैठना पढ़ाई का माध्यम है।

शाम को मैं ट्यूशन के लिये रंजना के घर पहुंच गया। वे दोनों मेरे सामने आकर बैठ गये। जबकि रामदास इसके पहले मेरे घर आया था और उसने विद्यालय न आने का कारण बता दिया था। मेरे सामने वे दोनों बड़े मग्न अवस्था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में बैठे थे। मासूम चेहरे, मासूम आवाज, मासूम हरकतें। बहुत देर तक वे दोनों मेरे सामने खामोश बैठे रहे। मैं भी खामोश था। चार महीनों से वे दोनों जिस रूपहली चांदनी के उजाले में सपना देख रहे थे यह सब उन दोनों के आंखों के सामने खटक रहा था। सब कुछ धुंधला-धुंधला सा हो रहा था। अब उन दोनों की खामोशियां बढ़ती जा रही थी।

हमेशा की तरह माई आई और चाय का ट्रे रखकर जाने लगी। रंजना ने माई को आवाज दी। वैसे भी वह गुस्से में बोली - "माई जी! इस चाय को ले जाओ। उठाओ यहां से। बिना कहे मत लाया करो।" माई खड़ी की खड़ी रह गई। मैंने उसे इशारे से चले जाने को कहा। उसके जाने के बाद मैंने रंजना को कहा - "ऐसा गुस्सा नहीं करते रंजना। जैसा चल रहा है चलने दो। कहीं ऐसा न हो कि कोई नई समस्या खड़ी हो जाए।" तत्पश्चात मैंने रामदास को चाय उठाने को कहा। वह एक-एक करके सब को देता गया। मैंने अपना कप उठाया। रंजना ने बहुत देर तक अपने कप को हाथ नहीं लगाया पर मेरे एक-दो बार कहने पर वह कप उठाकर चाय पीने लगी। चाय एक बहाना था। चाय का साथ-साथ पीना, एक साथ संघटित होना यही चाय का संकेत था। वे दोनों किसी की बात को, किसी भी घटना को समझने के लिए आनाकानी करते थे।

मैंने उन दोनों को समझाते हुए कहा - "देखो, मैं तुम्हें पहले से ही समझाता आ रहा हूं कि तुम अपने लक्ष्य से भटक रहे हो और संभव हो कि इसे शीघ्रता से सुधार लो, पर तुम दोनों नहीं माने। अब यह बात तुम दोनों अपनी तरफ से प्रचार में ला रहे हो। इसमें ऐसा करने से तुम्हें सफलता नहीं मिल पायेगी।"

रंजना बीच में ही बोली - "सर! आप कुछ मदद कीजिए, हम आप से ही अपेक्षा करते हैं। मैंने इस तरह आप को कभी कहा नहीं पर मैं अब आप से निवेदन करती हूं कि आप हमारे आशा और आकांक्षाओं को बनाने में मदद करे।"

मैंने कहा - "मैं इस विषय में कुछ नहीं कर सकता हूं। एक अध्यापक होने के नाते इस कार्य में तुम दोनों को मदद करना अपराध माना जायेगा। क्योंकि यह तुम दोनों द्वारा अनावश्यक रूप से बनायी गई व्यक्तिगत समस्या है। इस में रूचि रखना भी मेरे लिये अशोभनीय है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बीच में ही रामदास बोला - "परन्तु सर आप हमें सलाह भी तो दे सकते हैं। आप का परामर्श शायद हम दोनों के जीवन का धरातल बना सके।"

रामदास ने कितना मीठा प्रश्न किया। उसके इस मधुर प्रश्न का उत्तर देते हुए मैंने कहा - "मैं तुम दोनों को सलाह अवश्य दे सकता हूं। परन्तु परिणाम तुम दोनों के पक्ष में नहीं होगा। भलाई तो इसी में ही है कि तुम दोनों इसे भूल जाओ। कभी सोचो भी नहीं कि तुम दोनों एक दूसरे से प्रेम करते थे।"

रामदास ने उत्तर दिया - "भूलने वाली बात होती हो हम दोनों कब के एक-दूसरे को भूल जाते। यहां तो समस्या यह है कि हम दोनों एक दूसरे बिना रह नहीं सकते। मां के चले जाने के बाद अब तो मैं यह सोच रहा हूं कि रंजना को अपने घर ले जाने का सुअवसर कैसे प्राप्त करूं।"

"भूल कर भी तुम ऐसा कभी मत करना रामदास! भले ही रंजना तुम्हारे साथ चलने को तैयार हो। कल यदि सेठ जी को पता चल गया तो तुम्हारा इस घर में प्रवेश भी नहीं हो पायेगा। और न ही तुम रंजना का चेहरा देख पाओगे।"

31

मेरी चेतावनी पर वे दोनों भी घबराकर मेरी तरफ देखने लगे। उन्हें विश्वास हो गया था कि जो मैं कह रहा हूं वह कभी सत्य भी हो सकता है। रामदास उत्सुकता से बोला - "सर! बताईए मैं अब क्या करू, यदि रंजना का विवाह और कहीं हो जाता है तब मैं तो बरबाद हो जाऊंगा।"

तुम्हारे बरबादी का कोई भी कारण नहीं है रामदास। छह महीने पहले तुम दोनो का स्थान बिल्कुल अलग-अलग था। इसलिए तुम दोनों छह महीने के पहले की स्थिति को याद करो। और एक दूसरे को भूल जाओ।

रंजना एक गहरा श्वास छोड़ते हुए बोली - "यह कैसा जीवन है सर! मन चाहकर भी हम जी नहीं सकते और स्वतंत्र जीवन को दूसरो पर आश्रित रहकर जीना पड़ रहा है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"यह जो तुम सोच रही हो यह तुम्हारी भावना है रंजना। विशेषतः तो यह है कि मन को स्थिर और शांत रखो।" मेरे इस विचार पर रंजना बोली - "आप हमारे लिए क्या कर सकते हैं सर! अपेक्षा तो हमें बहुत है आप से।"

दोनों को दिलासा देते हुए मैंने कहा - "मैं तुम्हारे लिए एक काम कर सकता हूं।" वे मेरी ओर उत्सुकता से देखने लगे। रंजना बोली - "बोलिए सर! आप हमारे लिए क्या कर सकते हैं?" मैंने कहा - "तुम्हारा यह विवाह परीक्षा के दिनों तक रोक सकता हूं। परन्तु तुम अपनी मां से यह कहोगी कि जब तक परीक्षा नहीं होती है तब तक विवाह की तिथि तय न करें।"

रामदास बोला - "फिर उसके बाद क्या होगा सर?" मैंने कहा - "उसके बाद सोचा जाएगा। परीक्षा समाप्त होने के बाद मैं तुम दोनों के लिये उज्ज्वल भविष्य की कामना करूंगा। पर मैं यह नहीं कह सकता हूं कि तुम दोनों का विवाह पक्का करा दूंगा।"

आशा भरे शब्दों में रंजना ने कहा - "ठीक है सर! आप तीन महीनों के लिए विवाह रुकवा दीजिए।" फिर मैंने उन दोनों को चेतावनी दी - "लेकिन तुम दोनों ने यह भी ध्यान रखना है कि तुम्हारे से ऐसी कोई हरकत न हो जिससे पूरा गांव बदनामी की चर्चा करता रहे।"

उन दोनों ने मुझे वचन दिया कि वे ऐसी कोई हरकत नहीं करेंगे। रंजना को विशेष तौर पर मैंने समझाते हुए कहा - "तुम्हारे रूठ जाने से तुम पर शक किया जाएगा। इसलिए तुम अपने माता-पिता से अच्छा बर्ताव करोगी। तुम उनसे कभी किसी बात पर लड़ना नहीं चाहोगी। और जब कभी तुम्हारे सामने विवाह की चर्चा होती है उसके लिए तुम विरोध नहीं करोगी।"

रंजना ने अस्वीकारात्मक ढंग से एक दो बार गर्दन हिलाई। जैसे कि मन मारकर उत्तर दे रही थी। तत्पश्चात् मैंने रामदास से भी कहा - "तुम देर रात तक रंजना के साथ नहीं बैठोगे और न ही बार-बार रंजना से मिलने का प्रयास करोगे। क्योंकि इसके परिणाम विपरीत होंगे।"

रामदास भी "ठीक है सर, ठीक है सर, कहता रहा। मैं बहुत देर तक पढ़ाई छोड़कर उन दोनों को समझाता रहा। पर वे समझते कम और बोलते अधिक थे। मैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ट्यूशन समाप्त करते हुये उठकर चला आया।"

उन्होंने अपने रिश्ते को अन्तिम रूप दे दिया था। पर इसे मान्यता नहीं थी। वे दोनों अपनी नादानी को गहराई तक ले जाने के बजाय मनोरंजन का साधन बना बैठे थे। मैं दुविधा में पड़ गया था। बहुत ही कठिन समस्याओं का सामना कर रहा हूं, ऐसा मुझे अनुभव हो रहा था। जबकि बात कुछ भी नहीं थी। इन प्रेम-प्रसंगों को रंजना ही अधिक से अधिक प्रोत्साहित कर रही थी जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए था। यदि वह पल भर में कह दे कि - "मुझे अपने माता-पिता का ही कहना मानना पड़ेगा।" तब रामदास उसके आगे एक शब्द भी बोल नहीं सकता था। और मैं यह ट्यूशन समाप्त कर दोनों को अलग कर देता। पर रंजना किसी भी पहलू को समझने को तैयार नहीं थी।

यही एक आकर्षण रामदास के लिये सर्वश्रेष्ठ सद्गुण बन गया था। वह यदि प्रेम कर रहा था तो रंजना के समर्थन पर कर रहा था। रामदास की मां मरने के बाद रंजना उसके लिए अधिक समर्पित हो गयी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि रामदास चौबीस घन्टे रंजना के इशारों पर चल रहा है।

पूरे गांव में रामदास की छवि एक आवारा लड़के के रूप में थी। पर उसे आदर्श विद्यार्थी बनाने वाली रंजना ही थी। कितना भी बलवान पुरूष स्त्री के सामने झुक जाता है। वह जैसा चाहेगी वैसा ही वह आदेशों का पालन करता है। यही स्थिति रामदास की बन गई थी।

जिस लड़के को मैट्रिक परीक्षा पास करना असंभव था। न तो वह ढंग से लिख पाता, न वह पढ़ पाता था। पर अब वह रंजना के बराबर अर्थात् समकक्ष चल रहा था। इसका सारा श्रेय मुझे नहीं, रंजना को ही जा रहा था।

जो दिशा-निर्देश रामदास को रंजना करती गई उसका लाभ भी रामदास उठाता गया। पर क्या यह उन दोनों का एक सौभाग्य था कि वे एक साथ आ गये थे। वे कैसे आये, क्यों आए? यह मेरे लिये एक आश्चर्य था और इस विषय पर मैं अनेक बार सोचता रहा जिसका माकूल उत्तर मुझे ही मिल नहीं रहा था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

32

दो विद्यार्थियों की आपाधापी में मैं विद्यालय की कक्षाओं से न जुड़कर दो परिवारों का पारिवारिक सदस्य बन गया था। रंजना के पिता सेठजी मुझ पर इतना विश्वास करने लगे थे कि उनका जो भी व्यक्तिगत कार्य हो, और उस कार्य की जिम्मेदारी सौंपना हो, तो उनके सामने सबसे पहले मेरा चेहरा सामने आ जाता था। कुछ दिन पहले उन्होंने मुझे अपनी बेटी को दिल्ली और हरिद्वार दिखाने के लिए भेजा था और कहने लगे जब मुझे कलकत्ता जाना होगा तब आप को भी साथ ले चलूंगा।

वे अभी नासिक गये थे और लौटकर नहीं आए थे। पर आते ही उनके साथ कलकत्ता जाने के लिए भी तैयार रहना होगा। यह उनका आदेश था। साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर विकल्प में छुट्टियों का निवेदन पत्र भी देना होगा।

दो दिनों के बाद सेठ जी नासिक से लौट आए। उनके साथ दो अन्य मेहमान भी आए थे। एक थे घनशाम जी, जिन्होंने पत्र द्वारा सेठ जी को सूचना दी और दूसरे थे एक बुजुर्ग। सेठजी ने मेरा उनसे परिचय कराया और मुझे कलकत्ता चलने के लिये तैयार होने को कहा। दूसरे दिन सवेरे धामणगांव से हावड़ा मेल से कलकत्ता जाना था।

जैसा सेठजी ने कहा वैसे ही मैंने उनके आदेशो का पालन करते हुए तैयार हो गया।

शाम को मैंने ट्यूशन के समय रंजना व रामदास के साथ इस विषय पर कोई चर्चा नहीं की। पर रंजना ने अपने मन से ही बात छेड़ दी। कहने लगी - "क्या कल आप कलकत्ता जा रहे हैं सर?" मैंने कहा- "हां, शायद आप को सब पता है।"

कहने लगी - "पता तो आप को भी है कि आप किस विषय के सम्बन्ध में जा रहे हैं। पर सर! आप यह भी तो सोचिए कि यह मेरे मन के विरूद्ध हो रहा है।"

मैनें कहा - "इस विषय पर सोचना मेरे लिये आवश्यक होने के पश्चात्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी मैं बोल नहीं सकता। हां, आप अपने माता-पिता से अवश्य बात कर सकती हो और उन्हें अपनी समस्या बता सकती हो।" तब रंजना ने कहा कि उसकी मां ने उसकी कोई बात नहीं मानी और यह कहकर टाल दिया कि "शुभ कार्य में विघ्न नहीं डाला करते।" कहने के साथ ही उसकी आंखों से दो चार बुंदे टपक पड़ी।

मैंने उसे समझाते हुए कहा - "धीरज रखो रंजना, सब कुछ ठीक हो जाएगा। अभी तो शुरूआत है। कोई भी विवाह इतनी जल्दी थोड़ा पक्का हो सकता है। घर देखने, लड़का पसन्द करने और विवाह पक्का करने तक चार महीने निकल जायेंगें। तब तक हम इस कार्य में और भी शोध कर सकते हैं।"

रामदास को इतनी चिन्ता दिखाई नहीं दे रही थी जितनी की रंजना अनुभव कर रही थी। धीरे-धीरे उसके मन के बांध टूटते जा रहे थे। मैंने रंजना को समझाया। मैंने कहा - "मैं आपके पिता की कृतज्ञता का पालन कर रहा हूँ। पर सब से अधिक जिज्ञासा तुम्हारे साथ है। भविष्य में जो भी अच्छा दिखाई देता हो उसका मैं समर्थन करूंगा। रही बात आपके इस मनोकामना की, यह कार्य समाज में अपराध जनक समझा जाता है। इसलिये मैं चुप हूँ . . . बहुत चुप हूँ, अपितु तुम दोनों की इच्छाए कभी मैं मिटने नहीं देता।" इतना कहकर मैंने उन दोनों को समझाते हुए कहा - "जब तक कलकत्तां से मैं लौटकर नहीं आता हूं तब तक ट्यूशन बंद रहेगी। आप दोनों अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना। इतना कहकर मैं बाहर आ गया।"

दूसरे दिन सवेरे सात बजे कलकत्ता जाने के लिये मैं सेठजी के घर पहुंच गया। पर मेरा मन खुश नहीं था। दो बच्चों का दिल तोड़कर सेठ जी के पसन्द को प्रमुखता दी जा रही थी, यही सबसे बड़ा अपराध मेरे तरफ से उन दो बच्चों के लिये था। जो कुछ घट गया था वह सत्य था और जो कुछ घटेगा वह उससे भी बड़ा सत्य था।

सुबह का नाश्ता करके हम चार लोग तड़ेगांव दशासर से धामणगांव के रेलवे स्टेशन पहुंच गये। गाड़ी ठीक समय पर आई। हम प्रथम श्रेणी के कम्पार्टमेन्ट में बैठ गये। सेठजी को अपनी बेटी का विवाह धूमधाम से करना था। इसलिये शुरूआत भी वे वैसी ही करना चाह रहे थे। हावड़ा एक्सप्रेस का विशेष नाम था। वह अपने नाम की तरह तेज गति से भाग रही थी। दोपहर का भोजन गाड़ी के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भोजनालय कक्ष से ही मंगवा लिया था। हम सब ने मिलकर भोजन किया। पश्चात् बातचीत होती रहीं। दोपहर तीन बजे के आस-पास मुझे नींद आने लगी। मैं बर्थ पर लेट गया। बाकी लोग आपस में बातें करते रहे। मुझे नींद तो आ रही थी पर जैसे ही रंजना के भविष्य का ख्याल आता निंद्रा टूट जाती, ऐसा दो चार बार हुआ।

मेरे सामने कठिन समस्या थी। एक ओर मैं सेठजी के भावी कार्य में संलग्न था तो दूसरी ओर उनकी बेटी रंजना की कोमल भावनाओं को कुचलता हुआ देख रहा था। मैं यदि चाहता तो सेठजी को मनवा सकता था। पर मैं स्वयं को बेबस अनुभव कर रहा था।

मैंने एक-दो बार ऐसा भी सोचा कि रंजना को सलाह दी जाए कि वह अपनी मां को सब कुछ बता दे। पर मेरे तरफ से सलाह देना उचित नहीं था। भविष्य में बहुत कुछ हो सकता था। आठ-दस दिनों से रंजना का खिलता हुआ चेहरा सूख गया था। वह सोचती रहती थी। कक्षा में भी मैंने उसे हमेशा सोचते हुए देखा था। आखिर प्यार में ऐसा क्या दु:खात प्रसंगों का अंबार होता है जो रंजना का पूरा मन निर्जिव बनकर रह जाता था।

33

हमारी गाड़ी तेज गति से भाग रही थी। गाड़ी में बैठे-बैठे कई घन्टे हो गये थे और आगे भी कई घन्टों का प्रवास था। मेरा मन कलकत्ते की ओर दौड़ने लगा था जो मैंने कभी देखा नहीं था। मुझे सेठजी अपने साथ इसीलिये ले जो रहे थे कि मैं उस लड़के की पहचान करूं जो रंजना के लिये पसन्द किया जा रहा है। उस लड़के का नाम आदित्य था। उससे मैं क्या-क्या बात करूंगा? क्या-क्या प्रश्न करूंगा? इस तरह के विचार मेरे मन में आ रहे थे पर सेठजी ने एक दो बार बातचीत में यह दर्शाया था कि हमारी लड़की के लिये आदित्य जैसे बढ़कर और कोई वर नहीं मिल सकेगा।

समय के अनुसार हमारी गाड़ी दूसरे दिन सवेरे आठ बजे हावड़ा स्टेशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर खड़ी हो गई। आदित्य के घरवाले हमारे स्वागत के लिए स्टेशन पर उपस्थिति थे। वे भी चार-पांच व्यक्ति थे। उन्होंने हम सबको गुलदस्ते भेंट करके हमारा स्वागत किया। उनमें आदित्य नहीं थे यह मैंने अनुमान लगाया। क्योंकि सबसे अधिक आतुरता मेरे लिये आदित्य को देखने की थी। क्योंकि आदित्य और रामदास इन दोनों की तुलना में क्या प्रमाणित होगा? मैं यह निष्कर्ष निकालना चाह रहा था।

आदित्य का घर कलकत्ता की धनी आबादी वाले पुराने इलाके में था। हम सब स्टेशन के बाहर आकर कारों में बैठकर घर की तरफ चलने लगे। हम उस स्थान पहुंच गये जहां सभी मकान पुराने व बड़े-बड़े थे। वे उनमें रहनेवालो की धनाढ्यता को स्वयंमेव उजागर कर रहे थे। कार रुकते ही नौकर भागे-भागे आए और सामान उठाने लगे। मैं आदित्य के घर को निहारने लगा। रंजना के पिता के घर से दुगना बड़ा घर था। फिर हम घर में प्रवेश करने लगे। घर का भीतरी भाग सुन्दर सजा हुआ एवं साफ-सुथरा था।

हमारी आवभगत और सेवा होने लगी। पर अब तक मुझे आदित्य को देखने की आतुरता थी, वह अधुरी ही रह गई थी। बात-बात पर यह सुनने में आ रहा था कि आदित्य फैक्टरी गये हुए। . . . तथा दो घन्टों के बाद लौट आएगें। आदित्य की एक बड़ी बहन तथा एक छोटा भाई था। बहन का विवाह हो चुका था तथा छोटा भाई विद्यालय में पढ़ रहा था। कुल मिलाकर परिवार सुखी एवं समृद्धि था। आदित्य के माता-पिता के संस्कार बहुत अच्छे है ऐसा घर को देखकर कहा जा सकता था।

मेहमानों का स्वागत खान-पान एवं व्यवस्था बहुत अच्छी हो रही थी। पर अब मुझे प्रतिक्षा थी आदित्य की। यदि आदित्य की जोड़ी रंजना के साथ अच्छी बन गई तो यह निश्चित था कि विवाह पक्का करके तिथि तय की जायेगी।

दोपहर के भोजन के बाद हम लोग आराम करने लगे। तब दोपहर के दो बज रहे थे। समाचार मिला कि आदित्य कारखाने से आ गये है। उनको देखने की उत्सुकता बढ़ने लगी। लगभग एक घन्टे के बाद आदित्य जी हमारे सामने उपस्थित हो गये। मैं उन्हें देखता ही रह गया।

कितने सुदर्शन है आदित्यजी। रंजना के साथ बहुत सुन्दर जोड़ी बन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाएगी। ठीक रंजना की तरह छरहरा बदन, गेहुंआ रंग। उन्होंने मेहमानों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया उनके साथ उनके पिता भी थे। पश्चात वे हमारे साथ बैठ गये। मेरी ओर सेठ जी ने इशारा करते हुए कहा कि मैं बातचीत शुरू करू। मैंने आदित्य से अनेक प्रश्न किए और उन्होंने मेरे हर प्रश्न का माकूल एवं संक्षिप्त उत्तर दिया। अर्थात उन्होंने दिये हुए प्रत्येक प्रश्न के उत्तर से मैं संतुष्ट हुआ। क्योंकि उनके नपे-तुले शब्द में उत्तर देना एक आदर्शवाद दिखाई दिया। मेरे चेहरे पर संतोष के भाव देखकर सेठजी ने मुझे अलग ले जाकर अपने विचारो का खुलासा किया तथा आदित्य के पिताजी को लड़की देखने के लिये तड़ेगांव दशासर आने का प्रस्ताव रखा।

उन्होंने सेठ जी का निमंत्रण स्वीकार किया तथा परिवार के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करके लड़की देखने का कार्यक्रम तय करेगें, इस प्रकार का आश्वासन दिया। कुल मिलाकर हमारा कलकत्ता आना और जिस कार्य को पूरा करना था वह कार्य पूरा हो चुका था। ऐसा सेठजी के चेहरे के खिलते हुए हावभाव, प्रसन्न मुद्रा एवं बातचीत करने का आकलन देखकर कहा जा सकता था। सेठजी ने अन्तिम निर्णय ले लिया। सेठजी की तरह आदित्य के पिता ने भी सेठजी के विचारों को समर्थन दिया।

मेहमान बनकर कलकत्ता में ठहरना हमें अच्छा नहीं लग रहा था। रात्रि का भोजन करके सब से विदा लेकर हम स्टेशन पहुंच गये। अब बम्बई जानेवाली गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी है ऐसा अनाउन्समेन्ट हो रहा था। हम टिकिट निकालकर गाड़ी में बैठ गये। हम चारों व्यक्ति प्रसन्न मुद्रा में थे।

समयानुसार गाड़ी चल पड़ी। हमें तड़ेगांव दशासर पहुंचने के लिए दो दिन लग गये। सवेरे-सवेरे घर पहुंचने के बाद मैं विद्यालय जाने की तैयारी करने लगा। विद्यालय गया और कक्षा में खड़ा होकर बच्चों को पढ़ाने लगा। मेरी नजर रंजना पर पड़ी। वह गौर से देख रही थी। रंजना के पीछे चार बेंच छोड़कर रामदास बैठा था वह मुझे देखने लगा। उन दोनों के जीवन का भविष्य एक सुन्दर परिकल्पना थी। किन्तु उनके भविष्य का परिणाम क्या होगा? यह मैं जान रहा था और उसे सुनने के लिए वे दोनों आतुर थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

34

कक्षा में पीरियड समाप्त होते ही घन्टी बजी। उसके बाद मैं कक्षा के बाहर आ गया। मेरे पीछे-पीछे ही रामदास आने लगा। वह जानने का प्रयास करने लगा। कलकत्ते के विषय में क्या परिणाम रहा। इस पर वह चर्चा करने लगा। जब मैंने उसे बताया कि अधिक से अधिक यही संभावना है कि रंजना का विवाह उसी स्थान पर पक्का होने वाला है। तब वह खिन्न सा हो गया। कुछ उसकी आंखे भीग सी गई। ऐसी स्वाभाविकता एवं संयम रामदास में कभी देख नहीं गया। क्षण भर में ही आग बबुला होने वाला रामदास दयनीय अवस्था का आभास कर रहा था।

आगे वे पूछने लगा - "क्या करना चाहिए सर? अब क्या हो सकता है?" मैंने उसे उत्तर दिया - "धीरज रखो रामदास, वही होगा जो भविष्य में होना है। तुम्हारे सोचने से या रंजना के हो हल्ला करने से कुछ नहीं होगा।" आगे मैंने उसे यह भी कहा - "कभी कोई गलत कदम नहीं उठाना। रंजना के लिये बहुत अच्छा घर ढूढा गया है। यह रंजना के पिता कई बार कह चुके हैं। इसलिये मुझे यही अपेक्षा हो रही है कि शायद यह रिश्ता तय होकर रहेगा।"

पांच मिनट के बाद फिर पीरियड के लिये घन्टी बजी तो मैंने रामदास को कहा - "जाओ कक्षा में बैठो। आज शाम को ट्यूशन होगी तब हम खुलकर बात करेंगे।" मेरे आदेशानुसार वह "जी सर!" कहकर चला गया। उसका मुर्झाया हुआ चेहरा यह स्पष्ट कर रहा था कि जीवन में उसे कहीं न कहीं अपनी हार दिखाई दे रही है।

कभी-कभी मुझे ऐसा अनुभव होता था कि कहीं रामदास को सुधारने में मेरे से कहीं भूल तो नहीं हुई? रामदास सुधर तो गया था पर साथ-साथ भटक भी गया था। उस का यह भटक जाना क्षणिक आकर्षण का परिणाम था। अब उसे नये रास्ते पर लाना मेरे लिये भी कठिन हो गया था। क्योंकि अब समय नहीं था। पर रामदास के इस प्रेम-प्रसंग से मुझे शिक्षा मिल गई थी कि पढ़ाते समय लड़का- लड़की को कभी साथ नहीं बिठाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास को सुधारने वाला मैं कौन होता? उसे तो रंजना ने ही सुधारा था। इतना सुधार दिया था कि उसे वह सर्वश्रेष्ठ छात्र के रूप में देखने लगी। रामदास ने कभी प्रेम को समझा नहीं था प्रेम क्या होता है? और प्रेम की क्या परिभाषा है? इसीलिए वह इतना उतावला हो गया था। नव किशोर ने किसी किशोरी की मित्रता को अपने मन में नहीं बिठाना चाहिए। ऐसा होता है कि सारी असंभावना दूर हो जाती है।

यह निश्चित था कि रंजना का विवाह कलकत्ता में ही तय होगा। परन्तु इस सत्य को परीक्षा होने तक रामदास रंजना को पता नहीं चलता चाहिए इसलिये मेरी यह विचारधारा थी कि एक दूसरे को एक दूसरे से अलग करना है। रामदास समझदारी से काम लेता रहे और रंजना विवाह के लिये रजामंदी करे। यह सोच मैंने तब से ही बना रखी थी जब से मैं कलकत्ता से लौटते समय ट्रेन में बैठा था।

मुझे यह भी पता था कि रामदास धीरे-धीरे मेरा कहना मानता रहे और उसके दिमाग में रंजना का जो फितूर भरा हुआ है वह दूर होता जायेगा।

शाम को जब मैं उन दोनों की ट्यूशन लेने पहुंचा तो अकेली रंजना बैठी थी रामदास आया नहीं था। जब कि दस मिनट मैं देरी से पहुंचा था। मेरे पहुंचते ही वह एक के बाद एक मुझसे प्रश्न करने लगी। उसके उत्तर मैं देता रहा पर जब मेरे उत्तर उसके मन् के विरूद्ध होते थे तो वह अविश्वसनीय प्रश्न करती थी। उसका आशय समझकर मुझे उसके मन जैसे उत्तर देने पड़ते थे। बीच-बीच में मैंने रंजना से दो बार पूछा - "आज रामदास क्यों नहीं आया?" इसे सुनकर भी वह टाल मटोल करती गई। इसमें क्या भेद है इसे वह स्वयं जान रही थी पर बताना नहीं चाह रही थी। वह कलकत्ता व अपने विवाह के सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना चाह रही थी। मैंने उसे सब कुछ बता दिया - "कलकत्ता शहर मुझे बहुत अच्छा लगा। लड़का भी बहुत सुन्दर है। उनका घर-परिवार, संस्कार मुझे बहुत अच्छे लगे। वे लोग अपने परिवार के मुख्य सदस्यों से बातचीत करके तड़ेगांव दशासर आने का शुभ समाचार देंगें। साथ-साथ उनकी पूरी तैयारी होगी कि वे बीस-पच्चीस लोग आयेंगे और मंगनी का कार्यक्रम सम्पन्न करके जायेंगे।" बीच में ही वह बोली - "क्या लड़की के साथ विवाह के लिए सम्मति लेना नहीं चाहेंगे या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जबरदस्ती से मनमानी करते रहेंगे?"

मैंने कहा - "यह तो समय बतायेगा रंजना। यह बात तो आप के माता-पिता पर निर्भर है। पर वे आप की स्वीकृति लेना ही उचित नहीं समझेंगे फिर क्या होगा, आप को तो राजी होना ही पड़ेगा।"

"नहीं-नहीं सर, ऐसा नहीं होना चाहिए! ऐसा यदि होगा तो मैं अपने माता-'पिता को क्या समझूंगी। मैं ईश्वर को क्या समझूंगी। मुझे धनवान घर में जन्म नहीं लेना चाहिए था। यदि मेरे साथ ऐसा अन्याय हुआ तो मैं सिर पटक-पटक कर मर जाऊंगी।" कहने के साथ ही उसकी आंखे आंसुओं से भर आई।

मैंने उसे समझाते हुये कहा - "ऐसी अविचारिक बातें मत किया करो रंजना! आखिर तुम एक समझदार लड़की हो! तुम्हारे माता-पिता तुम्हें महलों की रानी बनाना चाहते हैं और तुम छोटी-छोटी बातें कर रही हो। यह तुम जैसे समझदार व पढ़ी लिखी लड़की के मुंह से सुनना अच्छा नहीं लगता है। पता नहीं रामदास ने ऐसा क्या रिश्ता बनाकर रखा है जो तुम उसके लिये माता-पिता घर, धन, सम्पत्ति, संस्कार सब भूल गई हो! ऐसा मत करो! "

35

बहुत ही समझाबूझाकर मैने उसे शांत किया और वह किसी भी प्रकार का गलत कदम नहीं उठाएगी ऐसा उसने मुझे वचन दिया। वचन भी लेते समय उसने रामदास को स्मरण किया। कहने लगी - "जीने के लिये जी रही हूँ। उनका ही आदेश लेकर मरूँगी।" उसके पश्चात् वह उठकर चली गई। मैं भी बाहर आ गया। और उसी समय रामदास के घर गया। वह पलंग पर लेटा हुआ था। आंखे खुली थी। सोच रहा था। सामने दीवार पर घड़ी टंगी हुई थी, वह उसकी तरफ देख रहा था। मेरा आने का उसे आभास भी नहीं था। मैनें कहा - "रामदास!" वह एकदम उठकर खड़ा हो गया। "सर, सर, सर, आइए सर!"

मैंने कहा - "आज ट्यूशन क्यों नहीं आए।" दो बार पूछने पर भी उसने जबाव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं दिया। तीसरी बार जब पूछा तब वह बोला - "सर! रंजना का आदेश था। कहने लगी आज मुझे सर से वार्तालाप करनी है। मेरे उपस्थित रहने से न तो मैं कुछ पूछ पाऊंगी न ही सर उत्तर दे पायेंगें।"

"इसका मतलब पढ़ाई का क्या होगा?"

"पढ़ाई को फुल स्टॉप लग गया सर! मेरी तरफ से और रंजना की भी तरफ से।"

"क्या मतलब! जब तुम दोनों ऐसा सोच रहे हो तो ट्यूशन एक बहाना है। इसे बन्द कर देते हैं। क्यों मैं अपना समय बरबाद करूं।"

"सर! जब तक हम दोनों का मन लग रहा था हम खूब पढ़ रहे थे। रात-दिन अध्ययन कर रहे थे और अब हम दोनों का मन उखड़ गया है। पुस्तकें हमारे लिये क्या हैं सर! पढ़ाई, अध्ययन और पुस्तकें इन्होने हमें एक साथ बिठाया, एक साथ जोड़ा, एक साथ प्रेम की भाषा को सिखाया। पर अब हमें हमारे रिश्ते पर खतरा दिखाई दे रहा है। अब अन्य किसी साधनों पर हमारा मन नहीं लग रहा है सर।"

"यह तुम्हारी सारी बाते नादान हैं रामदास! मुझे ऐसी अपेक्षा नहीं थी तुमसे! आज भी कुछ नहीं बिगड़ा है। प्रेम क्या होता है इसको अभी भी तुम समझे नहीं हो। रंजना को भूल जाओ। उसे तुम प्रेमिका नहीं पत्नी के रूप में देख रहे हो। यह तुम्हारी भूल है। इसे मैं अपराध समझता हूं। यदि तुम मेरे छात्र हो तो तुम्हें अपने विचारों को बदलना होगा। कल से तुम विद्या को प्राथमिकता दोगे, रंजना को नहीं।"

उसी आवेश में मैं वहां से चला आया। रामदास मुझे आवाज देकर बुलाता रहा। पर मैं रुका नहीं। मै भोजनालय गया। मैने भोजन किया और अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े बहुत सोचता रहा।

दूसरे दिन से मुझे उन दोनों में परिवर्तन दिखाई देने लगा। वे कक्षा में प्रतिदिन आते और पढ़ाई में अधिक ध्यान देते। इसी तरह से ट्यूशन भी मन लगाकर पढ़ते। पढ़ाई के अतिरिक्त और कोई प्रश्न नहीं करते। मात्र पढ़ाई के सम्बन्ध में पूछताछ करते। मैंने भी उन दोनों का कक्षा के सभी बच्चों के साथ ध्यान बंटा लिया। सभी बच्चों को मैंने कह दिया था कि कक्षा में सबसे होशियार रंजना है। रंजना मैट्रिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की परीक्षा में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके पास होगी। इसलिये आप सब रंजना का अनुकरण करें। पढ़ाई के सम्बन्ध में जो कुछ भी पूछताछ करना हो आप रंजना से जानकारी हासिल करे। वह आप के हर प्रश्न का उत्तर दे सकती है।

यह सब मैंने रंजना के सामने कहा और बच्चों ने तथा रंजना ने भी स्वीकार किया।

मैट्रिक के पेपर्स मार्च महीने में थे और मार्च महीने को चार महीने बाकी थे। अब बेफिज़ूल की बातें छोड़कर रंजना व रामदास अध्ययन के तरफ अधिक से अधिक ध्यान दे रहे थे। परन्तु दूसरी तरफ उन दोनों के आपसी रिश्ते और मजबूत होते हुए दिखाई दे रहे थे। कुछ-कुछ उन्हें मुझ से डर भी लगने लगा था। इसके कारण भी अनेक थे।

एक दिन मुझे सेठ जी ने बुलाकर यह कहा कि "दो-चार दिनों के लिए ट्यूशन बंद रखें, क्योंकि मकान में तोड़फोड़ एवं मरम्मत का कुछ काम करना है। जिससे परेशानी न हो।" पर उसी समय रंजना की मां ने मना कर दिया कि "नहीं! ट्यूशन बंद न की जाए।"

ट्यूशन लेना जारी रहा पर इससे मुझे यह सन्देश मिला की शायद रंजना के विवाह के लिए मकान को सुशोभित करने का कार्य किया जा रहा है। वैसे दीपावली को ही मकान की रंगाई-पुताई हो चुकी थी। फिर भी मकान के डेकोरेशन कार्य शुरू हुआ और पन्द्रह दिनों तक चलता रहा। उसके कुछ ही दिनों के बाद रंजना मुझसे पूछताछ करने लगी। कहने लगी - "सर आप को कोई हमारे घर का समाचार मिला है?" मैंने कहा - "नहीं!" तब वह कहने लगी - "कलकत्ता से पत्र आया है कि वे लोग विवाह पक्का करने आ रहे हैं। उनके आने में अभी पन्द्रह दिन बाकी है। वे लोग इसी माह के 26 तारीख को आने वाले हैं। और दिन रविवार होगा।" रंजना ने बहुत ही व्याकुलता से यह समाचार दिया। मैंने कहा - "आप क्या चाहती है।" बोली - "मैं अपनी पढ़ाई पूरी होने तक विवाह नहीं करना चाहती हूं। इस विवाह को रोक लीजिए सर! आप की बहुत मेहरबानी होगी। मेरे माता-पिता आप का कहना मान जायेंगे। क्योंकि वे आप पर बहुत विश्वास करते हैं।"

मैं सोचता रहा। मैं यही सोचता रहा कि कम से कम परिक्षाएं समाप्त होने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक तो विवाह टल जाए। क्योंकि धनी लोग, संस्कार के आगे शिक्षा व क्षति को अधिक महत्व नहीं देते हैं। मैंने रंजना से कहा - "मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहता हूं।" वह बड़ी उत्सुकता से बोली "कहिए सर!"

मैंने कहा - "जब कोई तुम्हें विवाह के लिये जोर दे तो केवल इतना ही कहना है कि मेरा मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मैं एक सप्ताह बाद निर्णय दूंगी।"

वह बोली - "यदि इससे काम नहीं चला तो सर?"

मैंने कहा - "इतने से ही तुम्हें काम चलाना होगा और किसी के किसी भी प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देना है।" रंजना मेरा कहना मान गई और जैसा कहा वैसा ही करने को तैयार हो गई।

36

कलकत्ता से जो मेहमान आ रहे थे उनकी वजह से रंजना के घर में जोर-शोर से तैयारियां शुरू हो गई थी। रंजना रामदास के लिए दिन-रात चिन्तित रहने लगी। क्योंकि वह समझ रही थी कि समय आने पर उसकी एक भी नहीं चलेगी। मेहमान, रिश्तेदार एवं सगे सम्बन्धी जब हावी हो जायेंगे तो रंजना बोल भी नहीं पायेगी। इसलिए वह अधिक दुःखान्त समय काट रही थी।

रामदास को उसने अपनी नजरो से इतना नजदीक से परख लिया था कि उसके आगे किसी युवक का नाम उसे अच्छा नहीं लग रहा था। 'रामदास, रामदास, रामदास।

एक दिन ट्यूशन के समय मैंने उन्हें समझाते हुये कहा - "अब तुम दोनों अधिक से अधिक सावधान हो जाओ। अपने रिश्तो को उजागर करने का प्रयास मत करो। अब तुम दोनों की कठिन परीक्षा है। तुम्हारी भावनाओं को मात्र मैं ही समझ सकता हूं। अब तुम दोनों ने उचित-अनुचित का ध्यान रखते हुए कदम उठाना है।"

रंजना बोली - "मेरा निर्णय अटल है सर, आगे आनेवाली किसी भी कठिन समस्या का हम सामना कर लेंगे। मैं साफ-साफ बता दूंगी, कलकत्ता काफी दूर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतने दूर मैं जाना नहीं चाहती।"

मैंने कहा - "अधिक बोलकर अपनी मूर्खता दिखाना ठीक नहीं है। कम बोलकर समय का लाभ उठाना यही व्यक्ति की समझदारी होती है। और शायद तुम्हें आज तक मैंने बताया नहीं, मैं अपने मन में क्या सोच रहा हूं।"

कहने लगी - "कहिए सर! आप के मन में क्या है?"

मैंने कहा - "कहीं ऐसा न हो कि कुछ दिनों के लिए रामदास का यहां आना बंद कर दूं।"

कहने लगी - "नहीं-नहीं सर, ऐसा मत सोचिए। मेरे लिये तो ये मेहमानो से बढ़कर है।" उसने एक बार रामदास की तरफ तिरछी नजर डालते हुए कहा।

"मैं इसीलिए चुप हूं कि तुम दोनों की मित्रता, मित्रता की तरह बनी रहे और किसी को इससे हानि न पहुंचे।"

आगे वह बोली - "सर! हम आपके हर आदेशों का पालन कर रहे है और करते रहेगें। पर किसी कारण हम दोनों में दूरी नहीं आनी चाहिए।"

मैनें उसे कहा - "हमारा यहां ट्यूशन के समय तक बैठना उचित है। पर उसके बाद हम जो एक-डेढ़ घन्टा बातचीत में व्यर्थ गवा देते है वह इसलिए कि हम अपने मनो की अभिव्यक्ति व्यक्त करके मन को हल्का करें। पर इन बातों से नया विषय तैयार करना ठीक नहीं है। मैंने घड़ी की तरफ देखा और मैं उठकर खड़ा हो गया। मेरे साथ वे दोनों भी उठकर खड़े हो गये। इसी तरह से हमारा समय व्यतीत हो रहा था।"

मैं बहुत सोचता था कि एक अध्यापक का कार्य विद्यालय से सम्बन्धित हो तो बहुत अच्छा। परन्तु जब कोई अध्यापक किसी परिवार से घरेलू सम्बन्ध जोड़ लेता है तो उसे बहुत भारी हो जाता है। यही समस्या मेरी थी। पर मै घरेलु समस्या का शिकार नहीं था जब कि मेरी अपनी ही गलतियों का मुझे पश्चाताप था।

कलकत्ता से अब यह सुदृढ़ समाचार मिला था कि तय की गई तिथि को मेहमान लोग तड़ेगांव दशासर निश्चित आ रहे हैं। आते समय उनके साथ पच्चीस-तीस व्यक्ति भी साथ होगें। यदि सुअवसर ऐसा मिला तो मंगनी का कार्यक्रम उसी समय आयोजित करेंगे। इस प्रकार का समाचार सेठजी ने मुझे कक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में बुलाकर दिया। मेहमानों की खातिरदारी के लिए मैं विद्यालय से छुट्टी ले लूं ऐसा उन्होंने मुझे निवेदन भी किया।

सेठजी बहुत विद्वान व्यक्ति थे। कौन सा काम किसको सौपना चाहिए यह वे बहुत अच्छी तरह से जानते थे। अमरावती से हलवाई मंडली को भी उन्होंने अग्रीम राशि देकर आरक्षित कर लिया था।

मेहमानों के आने की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आ रही थी वैसे-वैसे उनके घर में रौनक और तेज दिखाई देने लगी थी। सेठजी का स्वभाव बहुत ही सुन्दर एवं संस्कारिक था। वे ज़मीन-ज़ायजाद से धनी अवश्य थे, परन्तु उन्हें किसी प्रकार का घमण्ड नहीं था।

जैसे ही उन्हें समाचार मिला कि कलकत्ता से मेहमान लोग आज गाड़ी में बैठकर दूसरे दिन धामणगांव रेलवे स्टेशन पहुंचने वाले हैं तो उन्होने मुझे उसी समय धामणगांव भेजकर जिस गाड़ी से वे लोग आने वाले हैं उस गाड़ी का समय एवं अन्य जानकारी लाने के लिये भेज दिया। मैं सम्बन्धित जानकारी लेकर लौट आया।

उसके बाद मेहमान के स्वागत की तैयारी आरम्भ हो गई। रंजना के माता-पिता बहुत खुश थे। बस उदास लग रही थी तो मात्र रंजना! जबकि यह सारी तैयारियां उसके उज्जवल भविष्य की कामना के लिए की जा रही थी। निर्धारित दिन एवं समय हम एक बस को लेकर धामणगांव रेलवे स्टेशन पहुंच गये। गाड़ी ठीक समय पर आने की सूचना रेलवे के प्लेटफार्म पर लाऊडस्पीकर द्वारा घोषित की गई। हमें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। सुपरफास्ट ट्रेन कलकत्ता से दौड़ी हुई आई और धामणगांव रेलवे स्टेशन पर खड़ी हो गई। गाड़ी रूकते ही प्रवासी गाड़ी में से उतरने लगे। पर चढ़ने-उतरने वालों की भीड़ में हम अपने मेहमानों को पहचान नहीं पा रहे थे। किन्तु कुछ ही क्षणों के बाद सेठजी ने मेहमानों को ढूंढ निकाला। हम सब उनके डिब्बे के पास पहुंच गये। हमारे साथ आठ-दस नौकर एवं इतने ही सेठजी के रिश्तेदार भी थे। हम सबने मेहमानों का सामान उठाने में मदद की। इतने में ही गाड़ी ने सीटी बजाई और तेज गति से निकल गई। प्लेटफार्म खाली हो गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

37

नौकर एवं कुलियों ने मेहमानों का सामान उठाकर स्टेशन के बाहर ले आए। मेहमान लोग भी पीछे-पीछे आते रहे। वे तीस लोग थे। मेहमानों में आदित्य उनके माता-पिता, आदित्य की विवाहित बहन, बहन के दो बच्चे, मामी-मामा, बुआजी अर्थात करीब के सभी रिश्तेदार थे। सबसे पहले उन्हें बस के पास ले जाकर जलपान कराया। उस समय सवेरे के साढ़े दस बज रहे थे। जलपान के बाद सभी लोग बस में बैठ गये। बस धामणगांव से तड़ेगांव दशासर चल पड़ी। आधे घन्टे में बस सेठजी के घर के सामने खड़ी हो गई।

एक-एक करके मेहमान लोग बस से उतरने लगे। उनके मस्तक पर चंदन मिश्रित अष्टधातु तिलक लगाकर स्वागत किया गया। घर में प्रवेश करते समय मेहमानों ने घर देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। घर में बनाए जा रहे स्वादिष्ट भोजन की भीनी-भीनी खुशबू चारों तरफ महक रही थी। सभी मेहमानों के लिये स्नान करने की व्यवस्था की गई। नहाने धोने के बाद बड़े हॉल में ठहरने का प्रबन्ध किया गया। एक घन्टे के बाद भोजन का प्रबन्ध किया। भोजन के बाद आपस में बातचीत होने लगी। उसी समय लडकी को दिखाने की मांग की गई। उस समय शाम के छह बज रहे थे। कुछ लोगों ने कहा सवेरे का समय अच्छा होता है। लड़की देखने का कार्यक्रम सवेरे रखा जाए। परन्तु कलकत्ता के मेहमानो की लड़की देखने की इच्छा हो रही थी। इसीलिए उन की तरफ से शीघ्रता की जा रही थी।

इसी दौरान आदित्य की बहन ने रंजना को देख लिया था और देखते ही वह प्रसन्न हो गई थी। उसने अपनी पसन्द को जाहिर करते हुए मेहमानों में खबर फैला दी कि "लड़की तो बहुत सुन्दर है।" तब लड़की देखने की सब की इच्छा प्रबल होने लगी। लड़की दिखाई के लिए सभी मेहमानों का ज़ोर पड़ने लगा।

अब परिस्थितियां रंजना के विपरीत होने लगी। उसी समय सेठजी ने रंजना की मां से रंजना को तैयार करने को कहा। इतना कहकर वे मेहमानों के बीच में आकर बैठ गए। इसके कुछ ही समय बाद घर की नौकरानी जिन्हें माई कहा जाता था वह मेरे पास आई और मुझे अलग से बुलाकर बोली - "अध्यापकजी, आप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को सेठानी जी ने बुलाया है।" मैं माई के पीछे-पीछे पहुंचा। सेठानी जी रंजना के कमरे के बाहर खड़ी थीं पर वहां अन्य महिलाएं नहीं थी। सेठानी जी कहने लगी - "अध्यापक जी, आप ज़रा लड़की को समझाइए वह अपने कक्ष में बैठकर रो रही है।" तब तक सेठ जी भी वहां पहुंच गये।

मैं रंजना के कमरे में गया। वह पलंग पर बैठे रो रही थी। मेरे पीछे-पीछे उसके माता-पिता भी आ गए। मां ने दरवाजा लगाकर कुन्डी भी लगा दी। पश्चात् रंजना की मां बोली - "देखिए अध्यापक जी, इस लड़की को क्या समझाएं। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है कहकर मेहमानों के सामने उपस्थित होना टाल रही है। सब कुछ जानकर भी लड़की दो दिन से हमारे साथ बात नहीं कर रही है। पता नहीं इसे क्या हो गया है।"

इस पर मैं कुछ बोलू कि रंजना रोते-रोते ऊंची आवाज में बोली - "देखिए मां आप बेकार की बातें न करें। आज तक आप ने मेरे विवाह के सम्बन्ध में मुझ से कोई बात नहीं की और न ही मेरे से कोई अनुमति ली। आप अपने मन से मनमानी कर रही हैं। मैं अपने लिए स्वतंत्र हूं। आप मुझ पर दबाव नहीं डाल सकती।"

बीच में ही सेठजी बोले - "देखिए अध्यापक जी! क्या कह रही है बेटी।"

प्रत्युत्तर में मेरे बोलने के पहले रंजना बोलने लगी। उसने कहा - "हां पिताजी, मैं ठीक कह रही हूं। जब आप नासिक जाकर लौट आए थे और आपने सर को कलकत्ता चलने का अनुरोध किया था तब मैंने आप से कहा था कि पिताजी आप की यह विवाह के लिए जल्दबाजी क्यों और किस लिए है? तब आपने उत्तर दिया था कि बेटी अच्छे कार्य में विघ्न नहीं डाला करते और यही बात मां ने कही थी।"

मैंने कहा - "रंजना अब थोड़ा शांत हो जाओ और आराम से बोलो। यह घर आज तुम्हारे विवाह के सम्बन्ध में चर्चा करने हेतु उत्साहित है और ऐसी अवस्था में आप के द्वारा माता-पिता से वाद-विवाद करना ठीक नहीं है।"

"सर! वाद-विवाद का प्रश्न नहीं है। यह मेरे जीवन का प्रश्न है। विवाह करने के लिए मेरी कोई रूचि नहीं है।" गिड़गिड़ाते हुए रंजना की मां बोली - "नहीं बेटी, नहीं ऐसा मत कहो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं। यदि मेहमानों ने सुन लिया और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूठ कर चले गये तो ज़हर खाने की नौबत आ जायेगी।"

"मां यह आप दोनों की गलती है। मुझ से विचार-विमर्श करते। पश्चात् ही इतना बड़ा कदम उठाते।"

सेठ जी ने बीच में ही कहा - "बेटी हम जो कर रहे हैं आप के भविष्य के लिए कर रहे हैं। हमने कभी आपके बारे में नकारात्मक बातें नहीं सोची हैं। आप ने आज तक हम दोनों को हां में ही जवाब दिया। ना में कभी नहीं दिया। हमने हमारी बात मनवाने के लिये कभी भी आप से दबाव में काम नहीं लिया और आज भी हमें आपसे स्वीकारात्मक उत्तर की आशा है।"

बीच में ही रंजना की मां बोली - "बेटी! आज तक आप को हमने कभी दुःख और संकट में नहीं देखा और आप तो हमारी कन्या हैं।"

"मां, यह सब कल्पना है। मैं रो-रो कर दिन काट रही हूं। कभी रोने का कारण पूछा आपने? आप को तो अचार-मुरब्बे बनाने और मकान में लगे हुए मकड़ी के जाले उतारने से ही फुर्सत नहीं है। न कभी बेटी की पढ़ाई के बारे में पूछा, न कभी उसकी इच्छा के बारे में। मैंने आप दोनो को साफ-साफ कह दिया है कि यह विवाह का प्रायोजन मेरी पसन्द का नहीं है। मैं इसे स्वीकार नहीं करती।"

सेठजी ने दोनों हाथ रंजना के सामने जोड़े और बोले - "बेटी, मैं हाथ जोड़कर मांफी मांगता हूं। आप सिर्फ लड़की दिखाई के कार्यक्रम को पूरा कर लो। बाकी आप जो कहोगी वही होगा।" पिता का बार-बार हाथ जोड़कर निवेदन करना रंजना को चुभ रहा था। पर दूसरी तरफ उसकी अपनी महत्वाकांक्षा पर पानी फेरा जा रहा था।

38

रंजना की समझ में नहीं आ रहा था। क्योंकि उसने जो आकांक्षाओं का नक्शा तैयार किया हुआ था, वह पूरा होने से पहले ही टूटता जा रहा था। वह अपने पिता को आक्रोश भरे शब्दों में बोली - " क्या आप मुझे वचन दे रहे हैं पिताजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि जो मैं कहूंगी वही होगा? तभी मैं आप का कहना मानती हूं।"

सेठजी बोले - "वही होगा बेटी जो आप चाहोगी। हम अपनी भूल पर पश्चाताप् कर रहे हैं कि हमने अपनी बेटी के विचारों से सहमत होकर काम नहीं किया।"

रंजना आंसू पोछते हुए एवं रोना बंद करते हुए बोली - "एक पिता होने के नाते मैं आप की मनोभावनाओं का सम्मान करती हूं। यही सोचकर मैं मेहमानों के सामने उपस्थित हो रही हूं। परन्तु कल सवेरे यह मेहमान यहां से चले जाने चाहिए। यह कैसे भी जाए, रेलगाड़ी से या विमान से, आप अपनी दौलत इन मेहमानों पर फूंक दीजिए।"

रंजना के गुस्से से हम तीनों दंग रह गए। माता-पिता की आंखें भीग आई। क्योंकि उन के सिर पर इज्ज़त और सम्मान की छत खड़ी थी। सेठ जी तो अंगोछे से अपनी आंखे पोछ रहे थे। उनके बीच में मेरा बोलना उचित नहीं था। रंजना ने अपने को संभालते हुए शांत स्वर में कहा - "मैं रात-दिन रो-रोकर समय निकाल रही हूं। पर आप दोनों ने मुझे समझने की कभी कोशिश नहीं की। लोग अपनी बेटियों का विवाह आस-पास के शहर और कस्बों में करते हैं। परन्तु आपने अपनी बेटी के लिए सोलह सौ किलोमीटर दूर कलकत्ते को चुना, ऐसी क्या बात है। यदि भविष्य में मुझे कुछ हो जाए तो क्या आप कलकत्ता आकर मेरी सूरत देख भी सकोगे? क्या यह सब आप मेरे हित में कर रहे हैं? पर मेरा इसमें सुख और आनंद नहीं है पिताजी। आज तक आपने मुझे स्वतंत्र रखा है, आगे भी मुझे स्वतंत्र रहने दीजिए।"

रंजना बोलती ही जा रही थी और उनके माता-पिता अपराधियों की तरह खड़े-खड़े अपनी बेटी के मन से निकलती हुई सच्चाई को सुनते जा रहे थे। उसे समझाने के अन्दाज से मैंने कहा - "अब बस करो रंजना, यह समय उलझने का नहीं है। उधर मेहमान लोग तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठे हैं। मुंह धोकर जल्दी तैयार हो जाओ।" उसे इस तरह कहकर दरवाजा खोलते हुए मैं बाहर आ गया। सेठजी भी मेरे पीछे-पीछे बाहर आने लगे। तब रंजना की मां ने अपनी बेटी को बाहों में भर लिया। साथ-साथ उनकी रोने की भी आवाज आई।

दस-पन्द्रह मिनिट बाद पता चला कि रंजना सज-धज कर तैयार हो गई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। थोड़ी ही देर के बाद चार-पांच महिलाएं रंजना को अपने साथ लेकर आने लगी। जैसे ही मेहमानों के कक्ष में रंजना का प्रवेश हुआ वैसे ही मेहमानों में एकदम शान्ति छा गई। सबकी नजर रंजना पर टिकी थी। उसने कोई भी सौन्दर्य प्रसाधन वस्तु का प्रयोग नहीं किया था। फिर भी उसका प्राकृतिक सौन्दर्य नयनाभिराम था। उसका गोरा रंग हल्की आसमानी रंग की साड़ी में निखर-निखर गया था।

उसने कोई आभूषण धारण नहीं किए थे। मात्र गले में एक पतली सोने की चेन, दो छोटी-छोटी अंगूठियां और कानों में गोल-गोल परन्तु छोटी-छोटी बालियां पहन रखी थीं। ऐसा लग रहा था कि मेहमानों के सामने आसमान से कोई अप्सरा उतर आई है। वहां बैठे सभी लोगों को रंजना भा गई। रोने और बार-बार आंसू पोछने के कारण उसकी आंखे और कपोल सुर्ख हो गए थे। आदित्य घूर-घूर कर रंजना को देख रहे थे जिनकी भावी पत्नी उनके सामने जमीन पर आंखे गड़ाए खड़ी थी। आदित्य के साथ ही उनके मामा बैठे हुए थे। मामा के पीछे आदित्य के पिताजी बैठे थे। उन्होंने मामा के पीठ पर हाथ रख कर संकेत किया कि लड़की से प्रश्न करे। मामा ने रंजना से पूछा - "क्या नाम है बेटी आपका?" उनके इस प्रश्न पर रंजना ने बहुत देर तक जबाव नहीं दिया। फिर उन्होंने कहा - "बेटी मैंने आपका नाम पूछा है?" इतने में ही रंजना शुरू हो गई - "जी मेरा नाम रंजना है, गोत्र क्षत्रिय, मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूं। मेरा जन्म सोलह वर्ष पहले सात जून को अपने ही गांव तड़ेगांव-दशासर में हुआ था। मेरी मां का नाम सावित्री है। पिता का नाम माहेश्वरी जी। मेरे विद्यालय का नाम गवर्नमेन्ट स्कूल और मैं कला साहित्य का अध्ययन कर रही हूं।"

इतनी सारी बातें रंजना ने बिना पूछे ही बता दी। आदित्य के पिता ने अपने साले से कहा - "और कुछ पूछना है आपको? आप तो लड़के के मामा हैं।" सभी हंस पड़े। मामा ने खड़े होकर रंजना के हाथ में एक कागज का लिफाफा देते हुए कहा - "लो बेटी, जीती रहो।" रंजना ने वह लिफाफा अपने हाथ में लेकर साथ में खड़ी महिला के सुपुर्द किया तथा तत्क्षण मामा के पैर छूने लगी। उसी वक्त उसने आदित्य के पिता कै पैर छुए। साथ खड़ी महिला और भी रिश्तेदारों के पैर छूने के लिए इशारा करने लगी। पर मामा ने कहा - "आप बेटी को ले जाइए, बहुत हो गया।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेहमानों के हाव-भाव और चेहरे को देखकर ऐसा लग रहा था कि रंजना को सबने पसन्द कर लिया है। वे समूह बना-बनाकर आपस में बातचीत करने लगे। आदित्य उठकर खड़े हो गये तथा अपने दो-चार मित्रों के साथ बाहर चले गये। उनके बाहर जाते समय उनके एक मित्र ने उनके कान में हल्के से कहा - "आदित्य, रंजना को दुल्हन बनाकर कलकत्ता ले चलना है।" कुछ देर के बाद मेहमानों में आपस में ही गहमागहमी शुरू हो गई। मामा ने कहा - "इसी वक्त विवाह पक्का करके मंगनी का कार्यक्रम कल के घड़ी मुहूर्त पर आयोजित कर लो।" आदित्य के पिता ने कहा - "तो क्या हम इतनी दूर से खाली हाथ लौटने के लिए आए हैं।" मेहमानों के लिये चाय के ट्रे आने लगे तथा सेठजी को मेहमानों के बीच में से उठने का सुअवसर नहीं दिया जा रहा था। सारे के सारे विवाह पक्का करने के लिये प्रयत्नशील थे।

39

लड़की को सब ने पसन्द करने के बाद अग्रिम कार्यवाही आरम्भ हुई। कलकत्ता वालो का पूरा का पूरा आयोजन यह हो रहा था कि विवाह पक्का करके दूसरे दिन मंगनी का कार्यक्रम रखा जाए। आदित्य की बड़ी बहन ने उन्हें अपने पास बुलाकर पूछा - "बोल भाई क्या इरादा है तेरा? लड़की तो पसन्द आ गई न तुझे?" आदित्य बोले - "दीदी! क्यों मजाक कर रही हो। उसे तो अभी साथ ले चलेंगे। पिताजी से कहो कि धन, पैसा और दहेज की बात न करें। यदि लड़की वाले विवाह पक्का करने के लिए आनाकानी करते हैं तो विवाह का सारा खर्चा हम उठा लेगे। सारा माहौल रंजना को अपने साथ ले जाने को तैयार था।"

रात्रि के आठ बज रहे थे। रात्रि भोज की व्यवस्था की जा रही थी। सेठजी ने अपने खास सम्बन्धियों को भी बुला लिया था। कुछ गांव के जात-बिरादरी के लोग थे। कुल मिलाकर सौ लोगों के आस-पास पुरूष, महिलाएं एवं बच्चों से घर में चहल-पहल बनी हुई थी। रात्रि का भोजन आरम्भ हो गया। इसी बीच में समय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निकाल कर सेठजी व उनकी पत्नी मेरे पास आई और कहा - "आप से कुछ बात करनी है हम उस कक्ष में चलकर बैठते हैं जहां आप बच्चों की ट्यूशन लेते हैं।" वह कक्ष पहली मंजिल पर था। हम तीनों वहां जाकर बैठ गये। रंजना की मां बोली - "अब आप बताईए अध्यापक जी। लड़की को कैसे मनाया जाएगा। आखिर वह विवाह के लिए क्यों मना कर रही है?" मैंने उन्हें समझाते हुए कहा - "आप पहले लड़की के विचारों को समझने का प्रयास कीजिए कि वह चाहती क्या है? पश्चात् आपने वही करना है जो आप चाहेंगे।"

सेठजी बोले - "हमारे ख्याल से इतना सुन्दर रिश्ता मिला है कि हम अपने को सौभाग्यशाली समझ रहे हैं, पर लड़की नहीं समझ रही है। फिर यह जो कुछ भी हो रहा है लड़की के ही सौजन्य से हो रहा है। ईश्वर ने हमें रत्न की तरह कन्या दी है। उसी वजह से हम माता-पिता का सम्मान हो रहा है। हम नहीं चाहते कि यह खानदानी, करोड़पति रिश्ता हम खो बैठें।"

मां बोली - "आप थोड़ा लड़की को समझाइए अध्यापक जी! वह ऐसे सुअवसर पर नादानी न दिखाए।"

मैंने कहा - "एक बार आप लड़की के साथ बैठकर उसकी सलाह लीजिए वह क्या चाहती है?"

वह दोनों भी कहने लगे - "बोले हमने उससे बात की है। वह मना कर रही है। कहने लगी - "जब तक मैं दसवीं की परीक्षा नहीं दूंगी तब तक कुछ नहीं हो सकता।"

मैंने कहा - "ठीक तो कह रही है वह विवाह पक्का करके मार्च के बाद की विवाह की तिथि निकाल लीजिए।"

रंजना की मां बोली - "वह बिल्कुल नहीं मान रही है। कह रही है मैं इतने दूर जाकर क्या करूंगी, मेरा मन नहीं लगेगा।"

मैंने कहा - "फिर आप अपने अधिकार का प्रयोग करिए। माता-पिता का भी तो अधिकार है।"

सेठ जी बोले - "पर कहीं ऐसा न हो, लड़की गलत कदम न उठाए।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने कहा - "नहीं ऐसा नहीं हो सकता। वह संस्कार को जानती है, अच्छे-बुरे को जानती है। आप पहले अपने कार्य को देखिए, वह जो बोल रही है उसे प्राथमिकता देने की आवश्यकता नहीं है।"

वे दोनों मान तो गये पर उनके दिल में उतना ही डर भरा हुआ था। मैंनें कहा - "अभी रंजना कहां है।" "अपने कक्ष में लड़कियों के साथ बैठी हुई है।" मैने कहा - "थोड़ा शान्ति से काम लीजिए। मेहमानों के साथ जो महिलाएं आई है उनके साथ बातचीत करने का उसे मौका दीजि़ए। इसलिए की उस का दिल खुल जाए।" इतने में ही एक महिला उन दोनों को बुलाने आई। दोनों उठकर जाने लगे। मैं भी उनके पीछे-पीछे पहली मंजिल से उतर कर आ गया।

कलकत्ता से आये मेहमानो में से एक महिला पर मेरी अधिक नजर थी। वह बहुत चालाक लग रही थी। वह थी आदित्य की बहन। दिखने में वह भी काफी सुन्दर थी। वह रंजना की तरह ही दिखाई देती थी। उसकी उम्र होगी कोई तीस वर्ष के आसपास। उसकी नजर रंजना पर अधिक थी। वह एकांत में बैठकर रंजना से बातचीत करने का अवसर ढूंढ रही थी। परन्तु अब तक उसे ऐसा सुअवसर नहीं मिला था।

इसके विपरीत रंजना किसी से भी बात करना नहीं चाहती थी। जब से कलकत्ता के मेहमान घर में आए तब से वह अपने कमरे के बाहर निकलना नहीं चाह रही थी। एक-दो बार वह किचन की तरफ आंगन और गुसलखाने की तरफ जाती रही। उसकी नजर आदित्य की बहन पर भी पड़ी। पर उसने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई।

जब रात्रि का भोजन हो रहा था तब सेठ जी मेरे पास आए तथा वोले - "अध्यापक जी आप का छात्र रामदास कहीं नजर नहीं आ रहा है?" मैंने पूछा - "क्या आपने उसे निमंत्रण दिया था?" सेठजी बोले - "कमाल है। कहीं घर के सम्बन्धित लोगों को भी निमंत्रण दिया जाता है?" मैंने कहा - "वह लड़का बड़ा शर्मिला है। हर बात पर शर्म करता है।"

कहने लगे - "ऐसा नहीं है। उसे भोजन करने के लिए आप स्वयं जाकर बुला लाइए, आवश्यकता पड़ने पर मेरा नाम बताइए।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने कहा - "ठीक है, अभी मैं उसे बुलाकर ले आता हूं।" शामियाना में मेहमानों का भोजन हो रहा था। मैं मौका देखकर रामदास के घर की तरफ जाने लगा। रामदास के लिए बहुत अच्छा मौका मिला था। दो-तीन दिनों से रामदास और रंजना आपस में मिल नहीं पाए थे। वे दोनों शायद आतुरता से मिलने की आशा भी कर रहे होंगे। पर अब मौका मिल गया था।

मैं रामदास के घर गया। उस समय रामदास अपने कमरे में पुस्तक पढ़ने के बहाने बैठा हुआ था। मुझे देखकर वह चौंक गया।

40

रामदास के घर में मैं जैसे ही दाखिल हुआ, वह डर गया। उसे लगा कि कोई अनहोनी तो नही हुई। बोला - "सर! आप कैसे है, ठीक तो हैं? कैसे आना हुआ सर? इतनी व्यस्तता में समय निकाल कर आप आए?"

मैंने कहा - "घबराओ नहीं रामदास, तुम्हारे लिये शुभ समाचार है।"

कहने लगा - "शुभ समाचार?"

मैंने कहा - "हां, रंजना के घर चलो। सेठजी ने तुम्हें निमंत्रण दिया है। कहने लगे रामदास को भोजन करने के लिए ले आओ।"

"परन्तु रंजना ने तो मुझे मना कर दिया था सर, जब तक घर में मेहमान रहेंगे तब तक मेरा वहां पर आना ठीक नहीं है।"

मैंने कहा - "जो रंजना सोच रही है वह उसके मन की बात है, जो सेठ जी सोच रहे हैं यह यथार्थ है।"

रामदास का चेहरा खिल उठा। उसने सोचा भी नहीं था कि रंजना के घर से उसे निमंत्रण आयेगा। मैंने कहा - "तुम जल्दी तैयार होकर आ जाओ। मैं चलता हूं क्योंकि मेरा वहां पर उपस्थित रहना बहुत जरूरी है।"

उसने कहा - "ठीक है सर।" और मैं वहां से चला आया। सेठ जी के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर जाते ही मुझे पता चला कि रंजना की मां मुझे ढूंढ रही है। मैं उनके पास पहुंचा। वह बोली - "अध्यापक जी, आप कहां चले गये थे। आपको एक आवश्यक काम सौंप रही हूं। बेटी कुछ उतावली सी और नाराज़ लग रही है। उसे आप थोड़ा समझाइए। उसे किसी तरह से आप मना लीजिए। वह भोजन करने के लिए भी मना कर रही है। मुझे पता है कि वह आप का कहना अधिक मानती है।" इतना कहकर वह मुझे रंजना के कक्ष में ले गई। रंजना हथेली पर अंगूठी रखते हुये तथा नीचे गर्दन करके सोच रही थी। हमारी आहट होते ही चौक गई।

रंजना की मां बोली - "अब इस लड़की को आप ही समझा सकते हैं अध्यापक जी। हम तो हार चुके हैं इस लड़की से।"

मैंने कहा - "नहीं-नहीं ऐसा नहीं है! बहुत समझदार लड़की है रंजना। ऐसी समझदार लड़की शायद पूरे गांव में भी नहीं होगी।"

रंजना का उदास चेहरा थोड़ा सा ऊपर उठा। उसकी मां को एक महिला बुलाने आई तो वह चली गई। एकान्त समय का सुअवसर देखकर रंजना के मनोभावों को छेड़ते हुए मैंने कहा - "क्या उदासी लेकर बैठी हो आप। प्रसन्न मुद्रा में बैठो। रामदास आ रहा है।"

"क्या! क्या कह रहे हो सर आप? वे क्यों आ रहे हैं? उन्हें देखकर पिताजी और मां कहीं क्रोधित न हो जाएं।"

"ऐसा नहीं है। आप के पिताजी ने कहा कि रामदास को भोजन करने के लिए बुलाकर ले आओ।"

इतना सुनते ही रंजना का चेहरा खिल उठा। उसके चेहरे के हाव-भाव क्षण भर में प्रसन्नता से खिल गये। मैं देखता ही रह गया। मैं सोच नहीं पा रहा था कि प्रेम में क्या इतनी शक्ति है जो व्यक्ति को पल-पल में अनेक रूपों में बदल देती है। क्षण भर में ही वह पलंग पर से उठकर खड़ी हो गई और अपने से भी ऊंचे शीशे के सामने खड़ी होकर सिर के बालों को संवारने लगी। वह सारे दुख-दर्द को भूल गई थी। शीघ्रता से बोली - "हम सब मिलकर इसी कक्ष में भोजन करते हैं सर!"

मैंने कहा - "पर अभी तो आप ने अपनी मां से भोजन करने के लिये मना कर दिया था?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"सर, सर, मैं कैसे बताऊ? यह सब मेहमान लोग मेरे सिर पर बोझ बनकर बैठे हैं। जब तक ये लोग घर खाली नहीं करेंगे तब तक मेरा मन नहीं लग रहा है इस घर में।"

मैंने कहा - "हो सकता है यह सब मेहमान लोग आप के शुभचिन्तक हों।"

मेरे शब्दों पर उसका ध्यान नहीं था। वह दरवाजे की तरफ देख रही थी। मैंने भी दरवाजे की तरफ देखा तो वहां रामदास खड़ा था। एक हाथ से उसने पर्दे को दरवाजे से हटा दिया था। वे दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। रामदास के पीछे रंजना की मां खड़ी थी। वह स्वयं रामदास को रंजना के कक्ष तक ले आई थी। रंजना ने रामदास को हाथ से हल्के से इशारा करते हुए कहा - "आइए . . .।" उसके संकेत के साथ ही रामदास ने जूते उतारे और कक्ष में प्रवेश किया। पीछे जो रंजना की मां खड़ी थी बोली - "सबका भोजन हो चुका है। मात्र आप ही लोग रह गये हैं अध्यापक जी। आप लोग शमियाना में आ जाईए।"

रंजना बोली - "नहीं मां! हम लोग यहां पर ही खाना खायेंगे।"

उसकी मां आश्चर्य से बोली - "शुक्र है भगवान का कम से कम खाना खाने के लिये तो तैयार हो गयी है।" ज़बान से तेज आवाज भी निकली, "यह सब आप के समझाने का प्रभाव है अध्यापक जी।" इतना कहकर वह मुस्कुराते हुए चली गई। और तुरन्त ही वह आदित्य की बहन को अपने साथ लेकर आई और बोली - "बेटी, यह आप से कुछ बात करना चाहती हैं।"

रंजना बोली - "कहिए!"

आदित्य की बहन बोली - "रंजना जी, कई घन्टों से सोच रहे हैं हम आप के साथ बैठकर बातचीत करने के लिये। पर आप तो अपने कक्ष से बाहर ही नहीं निकल रही हैं।" रंजना के जवाब देने से पहले ही उसकी मां बोली - "ऐसा नहीं है। हमारी लड़की बहुत शर्मिली है। कभी किसी के साथ बातचीत करने की उसकी आदत नहीं है। अभी वह खाना खाकर आप को समय देगी।"

रंजना ने अपनी मां के शब्दों को स्वीकारात्मक रूप देते हुए कहा - "जी, हम समय निकालकर आप के साथ वार्तालाप करते हैं। आइए, आप भी हमारे साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भोजन करिए।"

उन्होंने कहा - "हमने भोजन कर लिया है। आप भोजन करिए रंजना जी। हमें आप से बहुत बाते करनी हैं।" इतना कहकर वह रंजना की मां के साथ चली गई।

रंजना के कक्ष में हम चारों मिलकर भोजन करने लगे। मैं, रामदास, रंजना और उसकी मां। खाने में स्वादिष्ट व्यंजन थे। पर रामदास के आने से रंजना का दुःख खुशियों में बदल गया था। रंजना खुश नजर आ रही थी। इसीलिए उसकी मां यह समझ रही थी कि रंजना विवाह के लिये तैयार हो गई है।

41

भोजन के पश्चात् रामदास आधा घन्टा रंजना के कमरे में बैठा रहा। इसी बीच आदित्य की बहन मेरे पास आकर रामदास के विषय में जानकारी लेने लगी। मैंने उसे कक्षा का सहपाठी कहकर उत्तर दिया। फिर वह मनपूर्वक कहने लगी - "उन दोनों में बहुत घनिष्ठता दिखाई देती है?" पश्चात् रामदास जब जाने लगा तो रंजना कमरे के बाहर आकर उसके साथ-साथ बाहर तक छोड़ने आई। तब अनेक मेहमानों ने रंजना को देखा और उसकी प्रशंसा करने लगे। रामदास के चले जाने के बाद रंजना अपने कमरे में प्रवेश करने लगी। मैंने उसे बुलाकर समझाना चाहा कि वह समय के साथ-साथ जो हो रहा है उसमें रुकावट नहीं डाले। इतने में ही मेरे पीछे-पीछे आदित्य के एक मित्र आए और बोले - "सर, मुझे तो लग रहा है कि इस घर के कर्त्ता-धर्ता आप ही हैं। आदित्य जी ने यह कहकर आप के पास भेजा है कि वे रंजना जी से बातचीत करना चाहते हैं।"

उस युवक का वार्तालाप रंजना ने सुन लिया था क्योंकि रंजना दरवाजे के पास पर्दे के पीछे खड़ी थी। वह पर्दा हटाकर मुझसे पूछने लगी - "क्या बात है सर?" मैं कुछ बोलता इसके पहले ही वही लड़का बोला - "जी रंजना भाभी जी, आदित्य आप से बात करना चाहता है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंजना कुछ कठोर शब्दों में बोली - "यह भाभी जी क्या है? आप ऐसा मत कहिए।" लड़का घबरा गया। उसने मन मे सोचा ऐसा तो उसने कुछ गलत कहा ही नहीं था। रंजना ने उस लड़के से प्रश्न करते हुए पूछा - "आदित्यजी हम से क्या बात करना चाहते हैं?" वह लड़का घबरा तो गया था पर हिम्मत बांध कर बोला - "वह आपसे क्या बातचीत करना चाहते हैं इसकी जानकारी मुझे तो नहीं है। पर मैं उनका सन्देश लेकर आया हूं।"

रंजना ने मेरी तरफ इशारा करते हुए लड़के को कहा - "आप सर से बात करिए।" मैंने उस लड़के के कन्धे पर हाथ रखते हुए उससे कहा - "आओ मेरे साथ।" तब तक रंजना ने अपने कमरे का दरवाजा लगा लिया था।

वह लड़का मुझसे कहने लगा - "कमाल है सर! आदित्य की भावी पत्नी होने के नाते उसे वह सम्मान देने के बजाय अपमानित कर रही है।" फिर वह रामदास के बारे में पूछने लगा कि वह नवयुवक कौन थे?

मैंने कहा - "जिस युवक के सम्बन्ध में आप पूछ रहे हैं उनका नाम रामदास है। वह रंजना के साथ पढ़ते हैं।"

"ओह!" इस तरह से वह कह कर सोचने लगा। क्योंकि एक घन्टे से आदित्य व उनके दोस्त रामदास के साथ रंजना के घनिष्ठ सम्बन्ध को देखकर युवा पीढ़ी उस उम्र में जो उचित एवं अनुचित निर्णय लेते हैं वहीं बात उन सब के मन में द्वन्द कर रही थी।

रामदास रात्री के दस बजे तक उसके कक्ष में बैठा था, जबकिं जब वह जाने लगा तो रंजना उसे दरवाजे तक छोड़ने आई।

यह सब देखकर आदित्य को अखरने लगा था। पर रामदास ने जाते-जाते रंजना को 'गुड नाईट' कहकर सम्बोधित किया। इससे आदित्य के मन में और जलन सी हो गई।

पर फिर भी आदित्य का रंजना को पाने का तूफान उसे क्रोधित कर रहा था। रंजना की सुन्दरता एवं उसके हाव-भाव यह प्रेरित कर रहे थे कि विवाह पक्का करने में विलम्ब नहीं होना चाहिए।

रात के साढ़े दस-ग्यारह बजे तक सभी मेहमान एक साथ बैठकर विवाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पक्का करने हेतु चर्चा कर रहे थे। और सभी मेहमानो का एक मत हुआ तो उनके तरफ से विवाह पक्का करने की गतिविधियां प्रारम्भ हुई। पश्चात् सेठजी व उनके सम्बन्धित रिश्तेदारों से बात होने लगी। पर सेठजी ने विवाह पक्का करने के पक्ष में नकारात्मक रुख अपनाया था। क्योंकि उन्होंने अपनी बेटी रंजना को वचन दिया था कि उसकी सलाह लेकर ही विवाह पक्का किया जायेगा। पर उन पर बराबर दबाव पड़ रहा था। मेहमानो का व अपने रिश्तेदारों का भी। वे केवल इतना ही चाह रहे थे कि उन्हें चार-पांच दिनों का समय दिया जाये। वह इसलिए कि सेठजी अपनी पत्नी व बेटी से विचार-विमर्श करके अन्तिम निर्णय ले सकें।

पर उनकी बातो को कोई भी मानने को तैयार नहीं हो रहा था। वे मेहमानो के बीच में बैठकर अपने व्यक्तिगत विचार तो दे रहे थे, परन्तु बलपूर्वक हां नहीं कह रहे थे। उनके रिश्तेदार उन्हें बराबर प्रश्न कर रहे थे कि उन्हें विवाह के लिए हां करने में क्या आपत्ति है? कलकत्ता से आए मेहमान उन्हें बराबर पूछताछ कर रहे थे कि उन्हें किस चीज की कमी पड़ रही है?

आदित्य के पिताजी सेठजी को सम्बोधित कर बोले - "सेठजी, आप कलकत्ता आए, आपने घर देखा, लड़के को पसन्द किया। आपने हमें अपने गांव आकर लड़की देखने का निमंत्रण दिया। हम आए। हमने लड़की पसन्द की, आपकी सलाह व आदेशानुसार हम लोग साथ-साथ मंगनी का भी प्रबन्ध करके आए। अब आप पांच दिन का समय मांग रहे हैं। इसकी वजह क्या है?"

आदित्य के पिताजी के विचार सरल व यथार्थ थे। सब की समझ में आ रहे थे। आगे उन्होंने कहा - "सेठजी आप को घबराने की आवश्यकता नहीं है। दहेज के नाम पर हम आप से एक पैसा भी नहीं मांग रहे हैं। विवाह का सारा खर्च हम उठा लेंगे। दोनों पक्ष के खर्चे की जिम्मेदारी हमारी होगी। यहां तक की यदि आप को अलग से खर्चे के लिये कुछ रकम चाहिए होगी तो उसका भी हम प्रबन्ध कर देते हैं। बाकी आप आनाकानी न करें। कायदे से यदि देखा जाए तो लड़की हमारी हो चुकी है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

42

आदित्य के पिताजी अपना पूरा प्रबन्ध करके लड़की के घर उपस्थित हुये थे और अब वे विवाह के प्रति नकारात्मक-बातें-स्वीकार नहीं करना चाहते थे। और फिर उनको उस समय सब का ही समर्थन प्राप्त हो रहा था। सेठजी सोच नहीं पा रहे थे कि क्या करे और क्या न करें। वे मेहमानों के सामने से उठे और मेरे पास आए। मुझे एकान्त में ले जाकर कहने लगे - "अध्यापक जी! बताईए मैं अब क्या करूं? इस समय मैं सब के सामने हाथ जोड़कर विनती कर रहा हूं कि मुझे चार-पांच दिनों की मोहलत दीजिए ताकि मैं बेटी व उसकी मां से विचार विमर्श करूं। ये लोग मान नहीं रहे हैं। मैं बेटी को जबान दे चुका हूं कि यह विवाह तब ही तय करूंगा जब तुम्हारी अनुमति होगी।"

मैंने उन्हें भरोसा दिलाते हुए कहा - "आप वही करें जो आप का मन माने। परन्तु इस समय यदि यह रिश्ता पक्का होता है तो इसमें देर मत कीजिए। क्योंकि ऐसे मौके बार-बार नहीं आते, फिर कलकत्ता से आया हुआ यह रिश्ता मुझे बहुत सुन्दर लगा। सभी सम्बन्धित लोग अच्छे लग रहे हैं। लड़के में कोई कमी नहीं। फिर विवाह की हर शर्त वे मानने को तैयार हो रहे हैं जब कि आप की कोई शर्त भी नहीं है।"

"हां, यह बात तो आप ठीक कह रहे हैं अध्यापक जी। पर मुझे लड़की की जिद्द करने से और उसकी रूचि इस रिश्ते के प्रति नहीं होने से ऐसा लग रहा है कि उसे शायद लड़का पसन्द नहीं है। यह मुझे उसकी मां बता रही थी। इस कारण मैं फिर से एक बार विचार विमर्श करना चाहता हूं।"

मैंने कहा - "लड़का हर पहलु से सुन्दर है। लड़के में कोई भी कमी नहीं है। बाकी आप अपने-अपने विचार दर्शाइए।"

कहने लगे - "फिर अब मैं क्या करूं?"

मैंने कहा - "आप वही कीजिए जो आप के परिवार के विचार इस रिश्ते से सहमति रखते हों।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"आप ठीक कह रहे हैं अध्यापक जी। मैं एक बार बेटी की मां से बात करता हूं।" वे कहकर रंजना की मां से मिलने के लिए जाने लगे। इतने में ही मेहमानों मे से कुछ लोग व सेठजी के खास रिश्तेदार उनसे बात करने के लिये उन्ही के पास पहुंच गये। वे सेठजी को मनाने लगे। पर सेठजी का चेहरा पहले से ही उतरा हुआ था। जिस कारण को लेकर वे रूकावट डाल रहे थे उसका कोई ठोस कारण नहीं था। इस वजह से उसका जिक्र करना भी सेठजी को अच्छा नहीं लग रहा था। उसी वक्त सामने से रंजना की मां आने लगी। आते ही वह अपने पति से बोली - "अब विवाह पक्का करने में विलम्ब क्यों हो रहा है?"

सेठजी जवाब देते हुए बोले - "आप यह क्या कह रही हो। बात पक्की करने में एक मिनट भी नहीं लगेगा। परन्तु लड़की को तो पूछ लो कि विवाह पक्का करें या नहीं?"

"बेटी के कहने में आकर कीमती समय खराब न करें आप। रात्रि के दो बज रहे हैं। रिश्ता तुरन्त पक्का कर लीजिए।"

"पर रंजना क्या सोचेगी? कम से कम उससे एक बार तो पूछ लिया जाए कि वह अन्ततः विवाह पक्का करने के लिए क्यों मना कर रही है?"

"महोदयजी, बेटियों के कहने में आकर रिश्ते खराब नहीं किए जाते हैं। मेहमानो के बीच में बैठकर रिश्ता पक्का कर लीजिए। लड़की को समझाना मेरा काम है आपका नहीं। देर न करे, जाइए और यह काम पहले निपटाइए। बात वही कीजिएयेगा, जो हम लोग तय कर चुके हैं।"

सेठानी की राय सुनकर साथ में खड़े सभी अभिभावकों ने उनकी बातों का समर्थन दिया और सेठजी ने अपनी पत्नी के विश्वासपात्र शब्दों के साथ मेहमानों के बीच में बैठ कर विवाह पक्का कर लिया।

सबने एक साथ मुस्कुराकर तालियां बजाई। एक-दूसरे के गले मिलने लगे। मिठाई की पराते आने लगी। रंजना का विवाह पक्का हो गया था और वह सो रही थी। उसे पता ही नहीं चला कि उसके पिता ने बेटी को दिया हुआ वचन तोड़कर एक आश्चर्यजनक घटना का निर्णय लिया था। जिस पर रंजना कभी विश्वास नहीं कर सकती थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चारों तरफ हल्ला एवं शोर मच रहा था। आदित्य के मित्र उन्हें दो-दो चार-चार बार गले मिलकर बधाई दे रहे थे और मन ही मन दिल चाहे शब्दों का उच्चारण कर रहे थे।

"बधाई हो भाई आदित्य, बधाई हो, तुम बड़े भाग्यशाली हो, विश्वास नहीं हो रहा था कि तुम्हारी यह शादी पक्की हो जायेगी।" रंजना जैसी लड़की को पाना बहुत ही भाग्य का काम समझा जा रहा था।

भीड़ में यदि कोई क्षुब्ध था तो केवल मैं। एक पिता द्वारा पुत्री को दिए गये वचन को चकनाचूर होते कोई देख रहा था तो वह मैं था। सेठजी ने रंजना के बिना अनुमति से यह निर्णय ले लिया था। क्योंकि मैं भी उनके हां में हां भरते हुए उनके मनो को टटोल रहा था। पर अब ऐसा लग रहा था जैसे सेठजी ने रंजना के साथ बहुत बड़ा अपराध किया था और यह असामाजिक था।

43

मैं उसी वक्त हवेली के बाहर आ गया। घड़ी में देखा, रात्रि के साढ़े-तीन बज रहे थे। मुझे वह बधाईयां व उत्साह और वह उछल-कूद, एक दूसरे के गले मिलना, मेरे आंखों को चुभ रहा था। मैं सड़क पर जाकर एकान्त में बैठ गया।

छह महीने पहले मैंने जब रंजना को पहली बार देखा था तो ऐसा लगा था कि इस लड़की को कितने तनमय से पाल-पोस कर बड़ा किया है। और मात्र दस-ग्यारह महीने बाद उसका विवाह होगा यह मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

शायद ही कोई ऐसी लड़की होगी जो अपने विवाह के चर्चा के समय निडर होकर सो रही होगी। पर उस समय रंजना को कुछ भी पता नहीं था। वह वास्तव में निडर होकर सो रही थी।

और शायद-शायद रामदास, रामदास ऐसा एक नाम, ऐसा शक्स, उसको पाने के लिये रात-दिन मीठे-मीठे सपने देख रहा था। उन सपनो के साथ रामदास ने आंखों की नींद खो दी थी। समय व संसार को खो दिया। उस मां को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी खो दिया जिसने उसे बहुमूल्य जन्म दिया था।

मैं बैठे-बैठे बहुत कुछ सोच रहा था। पिछले दस महीनों से जो मैंने आंखों से देखा था वह सोच रहा था। जो मैंने अनुभव किया, वह सोच रहा था और अन्तिम निर्णय यही होगा यह भी मैं सोच रहा था। आसमान में मैंने देखा, आसमान साफ था। गांव के सारे लोग सो रहे थे। चारो तरफ उजाला था। चारो तरफ उत्साह की किरणे फूट-फूट कर उभर रही थी।

ऐसा लग रहा था कि मेहमानों ने रंजना को खरीद लिया है। वे लोग रंजना को खरीद कर ले जायेंगे। शायद वे इसी मकसद से आये थे। यदि विवाह पक्का करने के आसार बन गये, लड़की पसन्द आ गई, और विवाह पक्का होने के लिए लड़की के माता-पिता आनाकानी करने लगे तो नोटो की बौछार कर देंगे। अन्ततः हुआ भी ऐसा ही था।

अब प्रश्न था रामदास और रंजना के सामने उपस्थित होने का। वे दोनों जब मुझसे पूछेंगे कि सर! यह सब आपके सामने हुआ और आप इसे देखते रह गये? क्या आपने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की? क्या आप सत्य को उजागर नहीं कर सकते थे? क्या आपने जो अब तक देखा वह सत्य नहीं था? प्रेम क्या सड़को पर पड़ा है? प्रेम जो किसी ने किसी के साथ कर लिया। यह तो ईश्वरी सहयोग था। जो कभी हो नहीं सकता, हो गया। फिर इसे बयान करने में आप को क्या आपत्ति थी?

अनेक प्रश्न मेरे मन में घूम रहे थे। क्या मुंह दिखाऊंगा रामदास व रंजना को? उनके सामने खड़ा होकर मुंह दिखाऊंगा या मुंह छिपाऊंगा? पर अन्त में उन दोनों का यही आरोप रहेगा - सर! यह सब आपने अपनी मर्जी से होने दिया। आप स्वयं चाहते थे कि ऐसा हो।

अनगिनत प्रश्न मेरे सामने उभर रहे थे। क्योंकि मैं एकान्त में बैठा था। और उन प्रश्नों को ढूंढ रहा था। प्रश्नों का उत्तर शोध करते-करते मन कठोर हो गया था। मैं उसी वक्त उठा और मेहमानों के भीड़ में जाकर खड़ा हो गया।

तालियों की गड़गड़ाहट बराबर चल रही थी। शोर और चिल्लाहट की आवाज बराबर हो रही थी। इसी शोर में रंजना की आंखे खुल गई और वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हड़बड़ाकर उठ बैठी। पता चला कि वह अपने पिता को ढूंढ रही है। उसके जीवन का दु:ख भरा समाचार उसने सुन लिया था और वह अपने कमरे से बाहर आकर अपने पिता को ढूंढ रही थी। इस आपाधापी में वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

बहुत सारी महिलाएं उसकी ओर दौड़ पड़ी। उसे उठाकर उसके कमरे में ले गई। उसे पलंग पर लिटाया। उसके मुंह पर पानी के छिटे मारे। जब उसे होश आया तो वह चिखने-चिल्लाने लगी। उसकी चीख में एक ही शब्द सुनाई दे रहा था। रामदास, रामदास, रामदास। पर उन ग्रामीण महिलाओं को इस शब्द का अर्थ पता नहीं था। मात्र हम ही जानते थे। मैं, रंजना और रामदास। रंजना की मां द्वारा मुझे बुलाया गया। क्योंकि यह आदेश रंजना का था। मैं जैसे ही उसके सामने खड़ा हो गया तो उसने अपने मुंह को दोनों हथेलियों से ढक लिया और वह फूट-फूट कर रोने लगी। शब्दों में स्पष्ट सुनाई दे रहा था। - "सर, सर, स ऽ ऽ र, अन्याय हो गया है। यह कैसे हुआ सर? आप की उपस्थिति में यह कैसे हुआ सर?" इतने में ही उसकी मां ने उसे चुप कराया। "चुप हो जाओ, बेवकूफ लड़की।" इतने में वहां से सारी महिलाएं चली गई। मैं और उसकी मां ही उसके पास थे। उसका रोना बढ़ता ही जा रहा था। तब हमने कमरे का दरवाजा लगा दिया। मैंने उसकी मां से इशारे से कहा कि यह जब शान्त होगी तब ही इसे समझाना उचित है। पर वह उसकी मां थी। वह पलंग पर बैठकर रंजना का सिर अपने गोद में लेकर एक बालक की तरह उसे समझाने लगी।

44

बहुत देर बाद रंजना शांत हुई। जब वह शांत हुई तो उसकी मां वहां से उठकर चली गई। क्योंकि घर में हर जगह उनकी उपस्थिति प्रार्थनीय थी। अपने आप को संभाल कर रंजना बैठ गई तथा साड़ी के पल्लू से आंसू पोछते हुए कहने लगी - "सर! अब मेरा मन नहीं लग रहा है यहां पर। मेरे साथ अन्याय हुआ है। मैं असमर्थ हूं। मैं क्षमा चाहती हूं।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभी रंजना आगे कुछ कहना चाह रही थी कि इतने में ही उसके माता-पिता ने कक्ष में प्रवेश किया। वे रंजना की बाते सुन नहीं पाए थे। उन्हें देखकर रंजना चुप हो गई।

मां बोली - "बेटी आप चिन्ता क्यों कर रही हैं। हमने तो लड़के को खरीद लिया है। वह घरजमाई बनकर हमारे घर में रहेंगे और हमारे खेती बाड़ी व व्यापार का ध्यान रखेंगे।"

रंजना दृढ़ स्वर में बोली - "मां अब मैं इस गांव में पल भर भी नहीं रहना चाहती हूं। जल्दी से जल्दी विवाह की तिथि निकालिए और मुझे यहां से विदा कर दीजिए।" उसके शब्दों में तपिश थी जो निश्चय ही उसके जलते हुए दिल से निकल रही थी। उसके माता-पिता चुप्पी साधकर सब सुन रहे थे। रंजना ने एक बार अपनी पिता की तरफ देखा और मन की ज्वाला निकालते हुए पिता से पूछने लगी - 'पिताजी आपने मुझे वचन दिया था पर आप उसे निभा नहीं सके। आप ने मेरे साथ विश्वासघात किया है पिताजी। ऐसा करने से क्या कोई भी लड़की अपने पिता पर विश्वास कर पायेगी?"

रंजना के मन में जो कुछ भी उबाल था वह बारी-बारी से उगलने लगी। मां व पिता दोनों भी कुछ भी नहीं बोल रहे थे। उनका शान्त रहना व लड़की के किसी भी प्रशन का उत्तर न देना यह उनकी समझदारी थी। मैंने सेठजी को हल्के से बाहर जाने का इशारा किया और वे निकल भी गये। पीछे-पीछे मां चली गई। कुछ ही क्षणों के बाद रंजना विनम्रता में आ गई। उसका मन हल्का हो गया था। उसके मन की पीड़ा उसे पिछले कुछ दिनों की याद तो दिला रही थी पर अब उस पर पर्दा डालने का वह प्रयास कर रही थी।

बैठे-बैठे वह सुस्त हो गई। उसकी आंखों से आंसू बंह रहे थे। उसे सांस लेने में कठिनाई आ रही थी। रोते-रोते हिचकियां बराबर आ रही थीं। धीरे-धीरे वह पलंग पर लेट गई। उसने अपने शरीर को पलंग पर ऐसे लिटा दिया था जैसे सुखे पेड़ की टहनी डाल दी हो। समय को भांपकर मैं कक्ष के बाहर आ गया।

उसके जीवन में जो बहार आई थी वह करीब-करीब समाप्त हो गई थी। जैसा कि वह समझ रही थी। उसे जो लगा कि प्रेम तो स्वतंत्र है! प्रेम में किसी का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई बन्धन नहीं होता। परन्तु इसका अन्तिम परिणाम उसे प्राप्त हो गया था और इस बात पर वह पश्चाताप् कर रही थी।

मैं जो रंजना को इतने दिनो से समझा रहा था उसका वह अनादर करती आ रही थी। विवाह के बन्धन, समाजिक रीति-रिवाज से बन्धे होते हैं। खासतौर पर उन परिवारों में जहां चरित्र व सम्मान की भावनाएं होती हैं।

रंजना ने अपने आप रामदास को पसन्द करके उसे वह अपना भावी पति समझने तो लगी थी पर यह उसकी भूल थी। यह उसकी भूल उन लड़कियों की तरह थी जिन लड़की का अपने परिवार की सभ्यता के विपरित अपने आप को स्वतंत्र समझती है। फिर उसके परिणाम ऐसे ही मन के विरूद्ध निकलते हैं जैसे की रंजना के साथ हो गया था।

रंजना का विवाह पक्का हो गया था। अब यह कभी टल नहीं सकता था। क्योंकि दो परिवारों की बीच में असंख्य मेहमानों के साक्ष्य से वचनबद्ध हो चुका था। इस पर लड़की की एक भी नहीं चली। काश वह अपने मन की सारी बातें उजागर कर देती तो इस विषय पर एक नया मोड़ आता। परन्तु उसका अन्तिम निर्णय रंजना के पक्ष में कभी नहीं जाता। क्योंकि यह जात-बिरादरी तथा संयम व चरित्र का प्रश्न था।

अपने माता-पिता के गहन विचारधाराओं को समझकर रंजना ने चुप रहना ही अच्छा समझा और यह शालिन लड़की की शालिनता थी।

रंजना वस्तुतः बहुत समझदार लड़की थी। वह अपनी आंखों से सब कुछ देखकर समझ चुकी थी कि उसका हो हल्ला करना उचित नहीं है। रही बात मन की, तो उसे दबाकर रखना ही योग्य है।

जो कुछ भी हो गया था और हो रहा था वह अच्छा ही हो रहा था और फिर अन्त में ऐसा ही होना था। धनी लोग अपने रिश्ते को बचाकर रखते हैं यह एक प्रमाण था। अब रात बीत चुकी थी, सवेरा होने को था। अपनी दिशा की ओर सूरज चमकता हुआ अग्रसर हो रहा था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

45

सुबह के समय मेहमान लोग एक-एक करके नींद से उठने लगे तथा नित्य रोज की तरह हाथ मुंह धोकर चायपान करने लगे। साथ-साथ एक दूसरे को बधाई देने लगे। सारे मेहमान रात्रि के तीन-चार बजे तक जागते रहे। इसलिये किसी की नींद पूरी नहीं हुई थी। इन खुशियों के साथ ही सूरज ने अपनी पहली किरण का प्रकाश धरती पर डाला जो उन सबके लिए शुभकामनाओं से भरा हुआ था।

उसके बाद धीरे-धीरे मौहल्ला तथा गांव के कुछ हिस्से में एक समाचार फैल गया था कि सेठजी की लड़की रंजना का विवाह पक्का हो गया है। गांव के प्रतिष्ठित लोग एवं अपने सगे सम्बन्धियों तथा जानकार वर्ग को सेठजी ने आमन्त्रित करने हेतु एक सूचि तैयार कर डाली। मंगनी तथा भोजन का कार्यक्रम ग्यारह बजे का रखा गया।

इस सारे कार्यक्रम की देख-रेख, रूप-रेखा एवं नियंत्रण हेतु सेठजी ने मुझे नियुक्त किया। इसका कारण यह था कि हर कोई मेरे आदेशो का पालन करते थे एवं अपने कार्य को समय के पहले पूर्ण करके जवाबदारी को प्रमाणित करके दिखाते थे।

इस कारण मैं समय के पहले नहा-धोकर पहुंचा तथा मैंने अपने कार्य की बागडोर संभाल ली थी। सेठजी मुझे एक पल के लिए भी इधर-उधर भटकने नहीं दे रहे थे।

जब मैंने सोचा कि रामदास के क्या हाल होंगे? उसे क्या पता होगा कि रंजना का विवाह रामदास से नहीं आदित्य से पक्का हो गया है? यदि उसे पता चल गया होगा तो उस पर क्या बीत रही होगी? मैं सेठजी के पास गया और उनसे दस मिनट की अनुमति लेकर रामदास के घर पहुंचा। मैं सीधे उसके कमरे की ओर गया। मैंने रामदास, रामदास कहकर दो आवाजें लगाई पर वह उठा नहीं। शीशे से मढ़ी अपनी मां की तस्वीर को पेट के बल उसने इतनी जोर से भिंचा था कि शीशे के टुकड़े-टुकड़े होकर बिस्तर पर बिखरे पड़े थे उसके चेहरे के हाव-भाव रोने जैसे थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो फिर रामदास को पता चल गया था। रंजना के घर में गुंज रही तालियों की गड़गड़ाहट रामदास के कानों तक पहुंच चुकी थीं।

रामदास के कन्धे को पकड़कर मैं उसे उठाने लगा। पर वह निस्तेज था। रामदास होश में था पर उसके शरीर में निर्जीवता के सारे लक्षण स्पष्ट झलक रहे थे। उसकी आंखें बन्द थी। उसके गर्दन के पास रखा तौलिया मैंने उठाया। हाथ को शायद चोट लगी थी जो शीशे के टुकड़ों के खरोच के कारण लगा था उसे मैं साफ करने लगा। उसकी आंखे हल्के से खुल गई तथा हल्के से अधखुली आंखों ने मुझे पहचान लिया और उसके कांपते हुए होंठ बोल उठे - "सर . . . सर . . . सर।"

मैंने कहा - "उठो रामदास, उठो। यह तुम क्या कर रहे हो। मां की तस्वीर सीने से लगाकर इतिहास को याद कर रहे हो। इससे अच्छा मां का कहना मान लेते तो शायद यह दिन देखने को नहीं मिलते।"

उसने एक दो बार आंखे खोली और बंद कर ली। अचानक तेजी से उठकर वह मेरे पैरो पर गिरकर रोने लगा। वह जोर-जोर से रोने लगा। उसे पकड़कर मैंने खड़ा किया और उसे सीने से लगाया। वह दयनीयता का पुतला बना हुआ था। वह अपनी मां के मरने पर भी इतना नहीं रोया था। मैंने उसे समझाते हुए कहा - "मैं पहले से ही तुम दोनों को सावधानं करता रहा, पर तुम दोनों भी माने नहीं। प्रेम का अन्तिम परिणाम विवाह नहीं हो सकता रामदास। जब विवाह तक बात पहुंचती है तब अपने-आप ही बहुत सारी समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। और फिर तुम दोनों के बीच में यह रिश्ता बन पायेगा या नहीं इसकी मुझे पहले से ही जानकारी थी। पर मेरे तुम दोनों को खुलकर बताने के बाद भी तुम समझ नहीं रहे थे।"

अपने रोने को शान्त करते हुए रामदास बोला - "पर अब भी मुझे विश्वास नहीं है सर की रंजना ने इस विवाह को स्वीकृति दी होगी।"

"उसने स्वीकृति दे दी रामदास। पर मन को मोड़कर। मन के विरोधाभास से उसने स्वीकृति दे दी। भले ही उसका विवाह पक्का हो चुका हो परन्तु उसका मन रामदास के लिए भटक रहा है। रामदास उसे मिल चुका है परन्तु उसे वह अपना नहीं सकती।

मेरे इस तरह कहते ही रामदास ने मुठ्ठियां भींच ली व जमीन पर बैठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया। मैनें कहा - "रामदास अब अधिक परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। इतना भी तुम कायर मत बनो। एक लड़की के लिये अपने शरीर को क्षति पहुंचाना उचित नहीं है। तुम्हारी मां इसी सत्य के पूर्वाभास से मर गई। तुम्हें तो उसी समय संभल जाना चाहिए था। परन्तु तुम बिगड़कर संभले और संभल कर फिर भटक गये। तुम्हारा भविष्य तुम्हें पुकार रहा है।"

मैंने उसके हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया उसे बहुत देर तक दिलासा देता रहा। प्रेम की सबसे बड़ी खूबी यह है कि किसी भी प्रियकर को प्रेम में हार स्वीकार नहीं होती। परन्तु इसका प्रतिफल उसकी हार ही है। प्रेम मात्र क्षणिक आकर्षण है और इसमें आकर्षित होना स्वाभाविक है, यह मैं रामदास को कई बार कह चुका था। जीवन के अनेक निर्णय ऐसे होते हैं जो स्वयं नहीं ले सकते। दूसरों पर जब निर्भर रहना पड़ता है तब ऐसी अवस्था में हार स्वीकार करनी पड़ती है।

46

रामदास की व्याकुलता देखी नहीं जा सकती थी। मैं उसे बहुत देर तक समझाता रहा। अन्ततः उसे यह कहा - "रामदास मैं तुम्हारा शिक्षक होने के नाते मैं तुम्हें सुझाव देता हूं कि सब कुछ भुलकर अपना भविष्य देखो। इसी में तुम्हारा लाभ है।" इतना कहकर मैं सेठजी के घर लौट आया।

मंगनी की तैयारी शुरु हो चुकी थी। रंग-बिरंगे परिधानों में लिपटी महिलाए एवं बच्चों से सारा घर भरा हुआ था। रंजना की मां मुझे देखते ही बोली - "अध्यापक जी आप कहां चले गए थे? बेटी आप को बार-बार याद कर रही है।" मैं उसी समय रंजना के कक्ष में गया।

रंजना दुल्हन बनी बैठी थी। कलकत्ता वालों ने उसे क्षण भर में ही दुल्हन का रूप दे दिया था। उसी के सामने कुर्सी पर आदित्य बैठे हुए थे। रंजना बनारसी साड़ी पहनकर वयस्क लग रही थी। वयस्क लगने के साथ-साथ उसके चेहरे पर गंभीरता के भाव उभरकर आए थे जो एक आकस्मिक समय किसी महिला पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिपक्वता की झलक दिखाई देती है।

रंजना के पास परिवार सम्बन्धित खास-खास महिलाएं एवं उसकी हम उम्र की लड़कियां बैठी थी। उन सब में प्रमुख कार्यकर्त्ता के रूप में थी आदित्य की बहन। उसके हाथ में एक थाली थी। उस थाली में सोने की सात चूड़ियां, दो अंगुठियां, एक चैन, मोती का हार, सुन्दर सी एक लेडिज घड़ी आदि रखी थी।

मुझे देखकर आदित्य की बहन ने कहा - "आईए अध्यापक जी।" इसके साथ ही मेरे लिए एक कुर्सी दी गई। जिस पर आदित्य के मित्र बैठे थे उन से खाली कराई गई। मैं बैठ गया। मेरी आदित्य से नजर मिलते ही उन्होंने मुझे हाथ जोड़कर नमस्कार किया। पश्चात् रंजना से नजर मिलते ही उसने अपनी गर्दन नीचे झुका ली। वह चाह रही थी कि मैं उसके आस-पास रहकर उसे दिलासा देता रहूं। पर अब वह मेरे से संकोच भी करने लगी थी। आदित्य के साथ सोफे पर उनके दो चार मित्र भी बैठे थे जो बीच-बीच में अनावश्यक बोल रहे थे और अनावश्यकता से ही खिलखिलाकर हंसते थे।

परन्तु रंजना का वर्चस्व तथा प्रभुत्व को देखकर वे लड़के झेप जाते थे। शायद वह समझ भी रहे थे कि रंजना को उनका विनोदाभास पसन्द नहीं आ रहा है। आदित्य मात्र छह इंच के अन्तराल पर रंजना के साथ आमने सामने बैठे थे। आदित्य का इतना नजदीक बैठना रंजना को अखर रहा था। बीच-बीच में रंजना आदित्य को अस्वीकृति से देख रही थी। जिस का आभास स्पष्ट दिखाई दे रहा था और इस गहराई को मैं समझ रहा था। मैंने इशारे से ही उसे नम्र बने रहने को कहा।

वह कक्ष दो युवाओं के साक्षात मिलन का संदेश दे रहा था। दो युवाओं का भविष्य उस कक्ष में स्पष्ट दिख रहा था। एक नारी एवं एक पुरूष जिनका जन्मजन्मान्तर का सम्बन्ध बनने जा रहा था।

पर एक के मन में हर्षोल्लास फूट-फूट कर उभर रहा था तो दूसरे के मन में दुःखान्त प्रसंगो की घटनाएं निर्माण हो रही थी। इस प्रतिद्वन्दता को अदित्य की बहन भांप गई थी। वह जब भी कभी रंजना के तरफ देखती तो उसे उसके चेहरे पर दुःख के भाव दिखाई देते। वे मात्र रंजना के चेहरे पर मुस्कुराहट के हाव-भाव देखना चाह रही थी, परन्तु उसे अब तक नहीं मिल पाए थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय की शीघ्रता को देखकर आदित्य की बहन ने कहा - "अरे भई, दुल्हन के माता-पिता को तो बुलाईए।" उसी कक्ष से एक महिला उठी और रंजना के माता-पिता को बुलाकर ले आई।

आदित्य की बहन ने अष्टधातु तिलक किया। पश्चात् उन्हें प्रणाम कर धोती-कुर्ता कपड़े प्रदान किये। रंजना की मां को भी प्रणाम कर उन्हें कीमती वस्त्र दिए। मेरे लिए भी उन्होंने कीमती वस्त्रों का उपहार तैयार किया और मुझे वह हाथ जोड़कर कहने लगी - "अध्यापक जी, आप तो इस घर के प्रमुख कर्ता-धर्ता दिखाई दे रहे हैं। यह शुभ भेंट स्वीकार कीजिए।" सेठजी ने मुस्कुराकर आग्रह किया। मुझे स्वीकार करना पड़ा।

अन्तिम कार्यक्रम था गहने पहनाने का। आदित्य की बहन के आदेशानुसार रंजना की मां ने रंजना का हाथ पकड़कर आदित्य के सामने किया और आदित्य ने एक-एक करके दो अंगुठियां रंजना को पहना दी। उसी के साथ रंजना की आंखों से मोतियों जैसे चार-पांच आंसू टपक पड़े। इन आंसू का अर्थ या तो मैं समझ रहा था या फिर रंजना।

समय एवं परिस्थिति को देखकर बाकी के गहने आदित्य की बहन पहनाने लगी। एक अंगुठी रंजना को आदित्य को पहनानी थी। वह देर तक आना कानी करती रही अन्त में रंजना थाली में से अंगुठी उठाकर आदित्य को देने लगी। रंजना बहुत देर तक सोचती रही कि आदित्य अंगुठी लेकर चलते बनेंगे। परन्तु वे भी अपने स्थान पर अड़े रहे।

47

आदित्य के मित्र वर्ग भी आदित्य को विरोध करने लगे। अंगुठी हाथ में देने का क्या औचित्य है? क्या विवाह स्वीकारार्थ नहीं है?

आदित्य अपनी बहन से बोले - "दीदी अंगुठी मैं अपने हाथ में नहीं लूंगा। इनको अपने मन से मुझे पहनानी होगी।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनकी दीदी बोली - "समझा करो आदित्य! रंजना शरमा रही है, आखिर यह एक ग्रामीण युवती है। कुछ बातें पर्दे के पीछे होती हैं।" पर आदित्य नहीं माने जबकि उनका कहना जायज था। जब तक दुल्हन-दुल्हे को अपना स्वीकारार्थ रूप नहीं दिखायेगी तब तक उन्हें विश्वास कैसे होगा।

आदित्य की बहन ने रंजना का हाथ पकड़कर उससे कहा - "गुड़िया रानी यह अंगुठी पहनाने में देर न करो और भी बाकी काम है जल्दी करो। अब शरमाना भी क्या? यह तो आप का अधिकार है।"

मन को मोड़कर रंजना ने थाली में से अंगुठी उठाई और आदित्य की अंगुली पकड़कर उन्हें पहना दी। आधे-एक घन्टे में यह भी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गांव के आमंत्रित लोग एवं मेहमान इकट्ठे होकर भोजन करने लगे।

दो दिन की चहल-पहल और आपाधापी के बाद सेठजी ने अन्तिम जवाबदारी मुझपर लाद दी। दूसरे दिन सवेरे आठ बजे तक सभी मेहमानों को धामणगांव रेलवे स्टेशन पहुंचना था। पूरी रात मैं इसी कार्य में लगा रहा। चांदूर शहर जाकर मेहमानों के लिए बस ले आया। सवेरे मेहमानों को बस में बिठाया। मेहमान लोग गले मिलकर फिर मिलने के अनुबन्ध में विदाई दे रहे थे। सबको बिठाकर धामणगांव पहुंचाया। मात्र पन्द्रह मिनट बाकी थे जो कलकत्ता जाने वाली ट्रेन की सूचना घोषित की जा रही थी। सभी मेहमान प्लेटफार्म पर पहुंच गये, तब तक गाड़ी प्लेटफार्म पर आकर रुक गई।

गाड़ी रूकते ही सभी मेहमान बैठ गए। भीड़ बहुत थी, चढ़ने-उतरने में ही पन्द्रह मिनट का पता नहीं चला और गाड़ी चल पड़ी। हम सब जो धामणगांव गये थे तड़ेगाव-दशासर लौट आए।

कलकत्ता के मेहमानों के चले जाने के बाद रंजना का घर खाली-खाली हो गया था। तीन चार दिनों से चली आ रही चहल-पहल विरानगी में बदल गई थी। सेठजी व रंजना की मां प्रफुल्लित व उत्साह से दिखाई दे रहे थे। पर रंजना का कोमल चेहरा मुर्झा गया था। वह एकान्त समय मिलते ही सोचने लग जाती थी।

समय-समय पर उसकी मानसिक अवस्था भी खराब हो जाती थी। रामदास ने ट्यूशन पढ़ने के लिए आना बंद कर दिया था। बस रंजना के घर कभी जाता तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निडर होकर उसे मिलता था। रंजना उसे अपने घर रोज बुलाती थी। पर रामदास बहुत कम जाता था। उसे अपने प्रेम पर पश्चाताप् भी होने लगा था। जो भविष्य में हो रहा है ऐसा उसने कभी सोचा ही नहीं था।

उसके आंखो में मात्र रंजना ही घूमती थी। वह और अन्य लड़कियों के बारे में कभी सोच भी नहीं सकता था। उसका मन बहलाने के लिए उसे रंजना ने दो-चार अन्य लड़कियों का नाम लेकर रिश्ता जोड़ने को कहा। पर रामदास उत्तर देता था - "आप की जैसी आंखे कहा है उनकी। आप के जैसा स्वभाव कहां है उनका। वह मुझे बार-बार रामदास कह कर पुकारे, क्या उनके आवाज से मेरे शरीर में कंपकपाहट आयेगी? नहीं, संभव नहीं है। रंजना बस एक ही है। एक ही हो सकती है। रंजना . . . ।"

यह सारी बातें मुझे रंजना ने आंखों में आंसू लाकर बताई थी। रामदास विद्यालय में भी कम आने लगा था। एक दिन आता, एक दिन नहीं आता और वह अपना समय खेतो में निकालता, खेतो में वह कोई श्रमिकों के साथ काम नहीं करता था। अपितु किसी पेड़ के सहारे पीठ टिकाकर रंजना के लिए घन्टों सोचता रहता। रामदास के मन की पीड़ा को मैं भलीभांति समझ रहा था। परन्तु अब उसके लिये कोई पर्याय नहीं था। रामदास का दुख निराला दुख था जिसके लिये न चिकित्सक के विचार-विमर्श की आवश्यकता थी न हीं किसी अस्पताल के सेवा की। वह अपने मनोभावों को टटोलते हुए समय व्यतीत कर रहा था। पर यह सब उसके लिए व्यर्थ था। उसके जीवन के लिए इस व्यर्थ सोचने का कोई लाभ नहीं था। पर इतना सब कुछ होने के पश्चात भी रंजना को भूल जाना क्षण भर का काम नहीं था। इसीलिए रामदास परेशान था। रामदास की दिनचर्या सुनकर रंजना रो पड़ती थी।

कुछ दिन यूं ही बीत गये रामदास मुझ से बोला - "सर! अब मैं पढ़ना नहीं चाहता हूं। पढ़ने में मेरा मन नहीं लगता। जब भी मैं पुस्तक लेकर बैठता हूं। मन उखड़ जाता है। पिछली बातें आंखों के सामने उभर कर आती हैं।"

वह जो कुछ कह रहा था वह मैं मात्र सुनता जा रहा था। मैंने जो रामदास पर श्रम व समय खर्च किया था वह पानी में बहता जा रहा था। ऐसा मुझे अनुभव होने लगा। क्या रामदास को एक ही विषय पर रट लगाते रहना उचित था? क्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास शिक्षा से भटक गया था। क्या मेरे सारे उपदेश उसके सामने फीके पड़ने लगे थे?

48

रामदास के दैनिक जीवन में उतार-चढ़ाव का माहौल बना हुआ था। उसके चेहरे पर की सारी खुशियां धुमिल तो हो गई थी पर वह उम्मीद से जी रहा था। उसे अपेक्षा थी कि रंजना के जीवन में कहीं न कहीं एक छोटी सी भूल उसका भविष्य बदल देगी।

बोर्ड की परीक्षा बिल्कुल सामने थी और विद्यार्थियों की तैयारी करवाना मेरी जिम्मेदारी थी। विद्यालय के बच्चों का मैं समय-समय पर विशेष ध्यान देकर उनकी पढ़ाई करवा रहा था। रामदास व रंजना यह दोनों भी उन्हीं में से थे। परन्तु कुछ परिस्थितियों द्वारा इन दोनों का अलग क्षेत्र बन गया था। और मैं यह भी मान रहा था कि इसके लिए मैं स्वयं जिम्मेवार हूं।

रामदास जब भी कभी मेरे सामने रंजना के घर आता, वह उदास-उदास दिखाई देता। पर उसके चेहरे, शरीर तथा वस्त्रों की चमक कभी उभर कर दिखाई नहीं दे रही थी। वह पहले से अब प्रौढ़ दिखाई दे रहा था। उसके हाव-भाव व रहन-सहन समझदारी तथा सभ्यता जैसे लग रहे थे। शायद मुझे यह भी अनुभव हो रहा था कि शायद कुछ बचे हुए दिन वह हंसमुख से बिताना चाह रहा था। वह शायद समझ चुका था कि रंजना के विवाह तक सारा समय आनंद से बिताया जाए।

परन्तु अब मेरा उस पर कोई दवाब नहीं था और न ही मैं ऐसा चाह रहा था क्योंकि हद तक वह मेरा कहना मान रहा था। वह शांत स्वभाव का बन गया था यही मेरे लिये शान्ति का विषय था।

कुछ ही दिनों के बाद रंजना के घर में खुंशी का समाचार मिल गया। कलकत्ता से नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ विवाह की तिथि तय करने का संदेश प्राप्त हो गया। रंजना के पिता अपने विशेष सम्बन्धियों को लेकर कलकत्ता गये थे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और विवाह की तिथि निश्चित करके लौट आए। सोमवार सत्ताईस मार्च को विवाह का मुहूर्त निकाला गया।

मैंने रंजना के पिता को कहा था कि दस मार्च तक बोर्ड की परीक्षा समाप्त होगी उसके पश्चात् ही विवाह की तारीख तय करना ठीक रहेगा। उन्होंने मेरा कहना मान लिया था। विवाह की तारीख निश्चित होने के पश्चात् रंजना एक-एक दिन की गिनती करने लगी। रामदास उखड़ा-उखड़ा सा रहने लगा। वे दोनों आपस में बैठकर बातचीत करते और अपने भविष्य के बारे में सोचते थे। इसका मुझे भी पता नहीं चलता था। एक दिन मैंने बहुत पूछताछ करने के बाद रामदास मुझे बताने लगा - "रंजना कहती है कुछ तो करो मेरे लिये। मेरी दशा एक क्षुब्ध गाय की तरह हो गई है। न बोल सकती हूं न कुछ कह सकती हूं। मेरी स्वतंत्रता समाप्त हो गई है। मुझे आपसे अभी भी बहुत कुछ आशा है। मैं आप के ही साथ रहना चाहती हूं। आपके ही घर अपना जीवन बिताना चाहती हूं। मुझे आप अपने घर दो चार दिन रखते तो मेरी मां को पता चल जाता कि मेरी पसन्द क्या है।"

जब एक सत्य रामदास के मुंह से निकला तो मैं क्षणिक आकर्षण के सत्य प्रेम में कितनी शक्ति होती है इसका अन्दाजा लगाने लगा। इसके पहले रामदास को सावधान करना आवश्यक था। मैंने रामदास को कहा - "रामदास तुम रंजना के कहने में मत आना, प्रेम के क्षणिक आकर्षण में इतनी बड़ी भूल कभी मत करना। अपितु बहुत बड़ा संकट खड़ा हो जाएगा। रंजना का जीवन बहुत बरबाद हो जायेगा। रंजना के साथ तुम्हारी बहुत बदनामी होगी। रंजना तो अपने मां-बाप का कहना मान लेगी। परन्तु तुम्हें गांव का एक भी आदमी अपने दरवाजे पर खड़ा नहीं होने देगा। अर्थात समाज तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।"

रामदास मेरे सम्मुख होकर मेरा विश्लेषण सुन रहा था। यह विश्लेषण भी उसके ही जीवन से सम्बन्धित था। रंजना के भावनात्मक प्रेम भरे वाक्य रामदास को पट गये थे परन्तु इस पर्दे के पीछे एक सामाजिक अपराध था। यह वह दोनो भी समझ नहीं पा रहे थे। परन्तु पिछले छह महीनों से रामदास में जो परिवर्तन आ चुका था उस परिवर्तन के आधार पर वह अब कभी अपराध नहीं कर सकता यह मेरा अनुमान था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंजना से इतने सुनहरे मौके रामदास को आसानी से प्राप्त होना यह उस का सौभाग्य था परन्तु रामदास जैसे नवयुवक ने ऐसी अवस्था में धैर्य से काम लेना यह भी उसके लिए आश्चर्य की बात थी। क्योंकि प्रायः ऐसे नवयुवक प्रेम में पराजय कभी स्वीकार नहीं करते जबकि इसके लिए बड़े-से-बड़े अपराध करना स्वीकार कर लेते हैं।

वास्तविकता यदि देखी जाए तो रामदास अपनी बाजी जीत चुका था किन्तु फिर भी उसे पराजय का मुंह देखना पड़ रहा था। ऐसी अवस्था में रामदास-रंजना ने किसी भी शब्द पर प्रतिक्रिया व्यक्त न करते हुए सूझबूझ व बुद्धि का परिचय दिया।

रामदास और रंजना इन दोनों में आपसी वार्तालाप होना यह आवश्यक था। इस लिये मैंने दोनो को अलग करने का प्रयास नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कभी नुकसान भी हो सकता था और मैं भी इन दोनो के बीच में बैठकर पिछले दिनों से चले आ रही घनिष्ठता को बना कर रख रहा था। इसमें एक बात यह भी थी कि मेरा उन दोनो के बीच में बैठना उन्हें और अच्छा लगता था। क्योंकि कभी-कभी उन्हें अपने मन की भड़ास निकालने के लिए तीसरा व्यक्ति मैं ही था जो उनके अनुभवों को समझ सकता था, जान सकता था।

49

इन दोनो के प्रेम-प्रसंगो की भनक रंजना के माता-पिता को हो सकती है ऐसा मैं कभी-कभी सोचता था। परन्तु मेरे समक्ष उन दोनों ने कभी इस विषय पर चर्चा नहीं की। रंजना के माता-पिता सभ्य व खानदानी लोग थे और छोटी-छोटी बातों पर विशेष ध्यान नहीं देते थे।

रंजना की विवाह तिथि बहुत ही नजदीक आ रही थी पर उसे अपने विवाह के प्रति कोई उत्साह नहीं था। वह बोर्ड की परीक्षा की तैयारी में अपनी रूची दिखा रही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दिन हम तीनों रंजना के घर बैठे थे कि रंजना की मां हमारे पास आई और आहिस्ता से बोली - "हंसी मजाक हल्की आवाज में करिए, कलकत्ता से मेहमान आए है, आदित्य जी।"

आदित्य का नाम सुनकर हम सब भौचक्के रह गए। आदित्य का अचानक आना रंजना को अच्छा नहीं लगा। वह बोली - "मेहमानो का सूचना न देकर मेहमान बनकर आना क्या अच्छी बात है सर! फिर इस घर में जबरदस्ती से बनने वाले दामाद। हद हो गई।"

मैंने कहा - "जब आप के माता-पिता को कोई आपत्ति नहीं है तो आप उन्हें दोष क्यों देना चाहती हैं?"

बड़े गर्व से रंजना बोली - "आपत्ति मुझे है सर! ऐसे मेहमानों से मैं खुश नहीं हूं।" रंजना की बाते जब रामदास के पक्ष में दिखाई दी वह भी एक स्वर में रंजना को देखने लगा।

जब आदित्य आये तो अच्छा हुआ कि उस समय सेठजी भी घर में उपस्थित थे। उन्होंने मेहमान का स्वागत किया और अतिथि कक्ष में उन के साथ बातचीत में लगे रहे। आदित्य के आने से उस समय पूरे घर में शांति का वातावरण बना हुआ था और जब तक वे रहेंगे तब तक शान्ति बनी रहेगी ऐसा सोचा जा सकता था।

एक मेहमान क्या आ गये कि पूरे घर में भाग-दौड़ शुरू हो गई थी। यह सब देखकर मैं और रामदास उठकर चलने लगे, परन्तु रंजना मना करते हुए बोली - "बैठिए सर! विघ्न डालने वाले आते-जाते रहते हैं।" रंजना की बातों पर मुझे हंसी आने लगी।

इतने में रंजना की मां एक डिब्बा लेकर आई। उस डिब्बे में वही गहने थे जो रंजना को मंगनी के दिन दिए गये थे। प्रथानुसार रंजना को वे गहने विवाह तक पहने रहना था परन्तु रंजना ने मंगनी के दिन से ही उन्हें उतारकर डिब्बे में रख दिया था। अब जबकि मेहमान आये हैं वह भी स्वयं आदित्य, इसलिए रंजना की मां उन्हें पुनः पहन लेने के लिए जिद्द करने लगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंजना ने वह डिब्बा अपने हाथ में ले लिया और पास में ही रखते हुए बोली - "जी मां मैं पहनती हूं। मन नहीं मान रहा है फिर भी पहन लूंगी।"

मां तो चली गई। पर रंजना ने उस डिब्बे को खोलकर भी नहीं देखा। रामदास घर जाने के लिये मुझसे व रंजना से अनुमति मांगने लगा। मेरी तो स्वीकृति उसे मिल गई थी परन्तु रंजना ने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं उठकर उस कक्ष में गया जहां सेठजी व आदित्य बैठे हुए थे। मैं देर तक आदित्य के साथ बातचीत करते हुए बैठा रहा। इस मौके का लाभ उठाकर सेठजी अपने किसी काम हेतु चले गये। रामदास घर नहीं गया और वह रंजना के साथ वार्तालाप करते हुए बैठा था। बीच-बीच में हमको उन दोनों की हंसने की आवाज भी आती थी।

आदित्य मुझसे खुलकर बातचीत करने लगे। वे अपनी कम्पनी के काम से बम्बई गए हुए थे। लौटते समय अपने ससुराल आना चाहा यही उनके आने का मकसद था। और वे कल सवेरे ही कलकत्ता रवानगी करेंगे यह उनका विचार था। जब हमारी बातचीत चल रही थी तो उसी समय रंजना की मां हमारे लिए चाय ले आई। जब वह चाय ले आई तो आदित्य ने हल्के से हंसते हुए प्रश्न किया। उस प्रश्न में अतिशयोक्ति थी। उन्होंने कहा - "क्या आप ही कष्ट उठायेंगी?" उनके इस प्रश्न पर मैं भी सोचने लगा। क्योंकि उन का कहना था कि यह काम रंजना का है। चाय पीते-पीते कहने लगे - "सर मै रंजना ने मिलना चाहता हूं। आप मुझे उनसे मिलवाऐंगे?" इससे पहले रंजना की मां चाय रखकर चली गई थी। मैंने कहा - "जी बिल्कुल मिलिए।" मैं उठकर रंजना की मां के पास गया और उनको कहा। उन्होंने जवाब दिया - "अभी उसकी कोई इच्छा नहीं है। नींद का बहाना बनाकर पलंग पर लेटी हुई है। फिर भी शाम के भोजन के समय शायद ऐसा सुअवसर मिले।" मैंने कहा - "ठीक है।" यदि रंजना अपने कक्ष में सो रही है तो रामदास चला गया होगा, यह मेरा आशय था। आदित्य के पास जाकर मैंने उनसे यही कहा कि वह अपने कक्ष में सो रही है। मुझे उन्होंने अनुरोध करके अपने पास बिठाकर वे रामदास के सम्बन्ध में पूछताछ करने लगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

50

रामदास का रंजना के साथ बैठना-उठना, खिल-खिलाकर हंसना आदित्य को अच्छा नहीं लग रहा था। पर वे कुछ कह भी नहीं सकते थे। फिर सुअवसर देखकर उन्होंने मुझसे पूछ ही लिया - "सर! रामदास का इस परिवार से क्या सम्बन्ध है?"

मैंने कहा - "जी! आपने बिल्कुल ठीक समझा। रामदास की घनिष्ठता इस परिवार से कभी टूट नहीं सकती।"

कहने लगे - "वह रामदास के बिना रह नहीं सकती। ऐसा मुझे लग रहा है।"

मैंने कहा - "वे दोनो साथ-साथ पढ़ रहे हैं और एक ही कक्षा के छात्र-छात्रा हैं। जब तक साथ-साथ पढ़ते रहेंगे यह घनिष्ठता बनी रहेगी। पश्चात् दोनों ही अपने-अपने रास्ते से अलग हो जाएगें।"

आगे उन्होंने कहा - "रंजना ने मुझे कभी मिलने के लिए समय नहीं दिया और न ही उन्होंने कभी इस प्रकार की इच्छा व्यक्त की। और इस समय तो मैं विशेष रूप से उनसे मिलने आया हूं।"

मैंने कहा - "वह जरूर आपसे मिलना चाहेगी। एक लड़की होने के नाते इस तरह का दुःसाहस करना रंजना के लिए असंभव होगा। परन्तु जब आप के अनुरोध में शिष्टता है तो वह कभी मना नहीं करेगी।"

कहने लगे - "आप यदि प्रयास करेंगे तब ही संभव हो पायेगा सर!"

मैने कहा - "मैं प्रयत्न करता हूँ।"

बात देखिए कितनी छोटी थी। पर तालमेल नहीं हो पा रहा था। रंजना को देखने और उससे बात करने की आदित्य की इच्छा हुई थी और इसी कारण वे रंजना के घर तक खिंचे चले आए थे। विवाह के प्रति रंजना का कोई उत्साह नहीं था। उसकी रूचि क्या है? यह आदित्य के समझ में आ गया था।

मैंने उसी वक्त आदित्य की इच्छा रंजना की मां के सामने व्यक्त की और उन्होंने रंजना को सोते हुए उठा लिया। रंजना तैयार हो गयी पर निरूसाह से। उसने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह भी कहा - "सर! आप भी उपस्थित रहियेगा। आप के समक्ष रहने से ही यह संभव होगा।" और वह तैयार होकर आने के पहले मेरी स्वीकृति लेना चाह रही थी। मैने अपनी सम्मति दे दी और मैं आदित्य के पास जाकर बैठ गया।

थोड़ी ही देर रंजना सजधज कर अपनी मां के साथ प्रवेश करने लगी। मैं आदित्य की तरफ देख रहा था। उनके चेहरे पर प्रसन्नता निर्माण हो गई। रंजना को उसकी मां ने हमारे सामने सोफे पर बिठाया। वह नीचे गर्दन करके बैठ गई। उसकी मां चली गई।

हम तीनों कक्ष में बैठे थे। किसी न किसी विषय पर हम बातचीत करने लगे। बीच-बीच में आदित्य रंजना से वार्तालाप करने का प्रयास करते रहे पर उन्हें सफलता नहीं मिली।

रंजना की मां थालियों में खाद्य पदार्थ ले आई। पश्चात चाय भी रखकर चली गई। इसी एकान्त का लाभ उठाते हुए रंजना से आदित्य ने प्रश्न किया - "आप को साड़ियां कौन से रंग की पसन्द होंगी, गहने व जेवरात कैसे लाने होंगे। कुछ बताईये, जिसमें आप की पसन्द हो।"

रंजना ने तुरन्त तो कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु जब आदित्य ने यही प्रश्न फिर से किया तो रंजना उत्तर देते हुए बोली - "इस विषय पर आप मां जी या पिताजी से बात करें।"

रंजना ने इस प्रकार से उत्तर दिया जिसमें कोई मिठास नहीं थी न ही कोई प्रसन्नता थी। आदित्य ने दुबारा प्रश्न करने की इच्छा भी नहीं दिखाई। रंजना ने मौके का लाभ उठाते हुए मुझ से कहा - "मैं जाऊं सर!" मैंने कहा - "आप की इच्छा।" मेरे इतने कहने के साथ ही वह उठ कर खड़ी हुई और भागती हुई निकल गई।

उसके चले जाने के बाद आदित्य बहुत देर तक खमोश बैठे रहे। वे क्या सोच रहे होगे। यह मैं उन्हें पूछ नहीं सका। परन्तु वे स्वयं ही अपने आप कहने लगे - "सर! इनका यह स्वभाव गर्व का है या इच्छा का?"

मैंने कहा - "न तो गर्व का न ही इच्छा का। प्रश्न इस बात का है कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह एक लड़की होने के नाते पुरूषों के बीच में बैठकर आप के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएगी।"

आगे उन्होंने कहा - "जैसा भी हो सर! मैं तो इन्हें अपनी हर बात पर मनवा कर ही रहूंगा।" मैंने कहा - "आप निश्चित रहिए आदित्य जी, मुझे पूरी आशा है कि विवाह के बाद आप दोनो के रिश्ते बहुत मधुर होगे।"

इस तरह मैं आदित्य को दिलासा देता रहा। बहुत देर तक हमारी बातचीत होती रही। फिर मैं उठकर चला आया। वस्तुतः हम दोनों अविवाहित थे। मेरी उम्र आदित्य से थोड़ी अधिक थी। आदित्य में उम्र के हिसाब से परिपक्वता नहीं थी।

रंज़ना मेरी छात्रा थी और काफी दिनो से हम दोनों के साथ-साथ बैठने-उठने से रंजना के स्वभाव को भलिभांति समझ चुके थे। पर रंजना को आदित्य का भोलापन दिखाई दे रहा था तथा वह यह समझ रही थी कि आदित्य उसके लिये वजनदार व्यक्ति नहीं हैं।

51

आदित्य अपने ससुराल में दो दिन तक रूके परन्तु रंजना से उनकी कोई बात नहीं हो पाई। रंजना उनके साथ अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करती रही। स्वाभाविक था कि आदित्य किसी आपत्ति को न समझकर भविष्य में अच्छे समय की आशा कर रहे थे। फिर भी बहुत ही मन कठोर करके उन्होंने रंजना की मां से कहा - "आप रंजना से पूछ लीजिएगा कि उनके लिए वस्त्र, गहने एवं श्रृंगारिक वस्तुए क्या लानी होंगी?"

रंजना की मां ने कहा - "आप स्वयं ही उससे बात कर लीजिए न, वह अपने कक्ष में बैठी है।" आदित्य को मनचाहा सुअवसर प्राप्त हो गया। वे खुश हो गये। तत्क्षण वे रंजना के कक्ष में प्रवेश करने लगे। रंजना अध्ययन कर रही थी। जैसे ही उसकी नजर आदित्य पर पड़ी वह चौक कर खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर घबराहट देखकर आदित्य दरवाजे पर ही ठिठक गए और देर तक अपलक रंजना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को देखते रहे।

रंजना इस प्रयास में थी कि कमरे के बाहर कैसे निकला जाए। उसके इस प्रयास को भांप कर आदित्य भी दरवाजे में खड़े रहे तथा वे रंजना के सामने अपने मन की बात स्पष्ट करने लगे। उन्होंने पूछा - "रंजना क्या मुझसे विवाह करने के लिए तुम खुश नहीं हो?" रंजना ने कोई उत्तर नहीं दिया। आदित्य ने दूसरा प्रश्न किया - "दो दिन से लगातार मैं तुम से बात करने की इच्छा कर रहा हूं पर तुम्हारा स्वयं कोई रुझान दिखाई नहीं दिया।" इसका भी रंजना ने कोई जवाब नहीं दिया। आगे उन्होंने कहा - "तुम्हारा इस तरह कटे-कटे रहना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। मैं इसे क्या समझूँ? मुझे अन्दाजा तो लग गया है कि तुम्हारी पसन्द मैं नहीं, और कोई है। पर यह क्षणिक आकर्षण मेरा भाग्य नहीं बदल सकता न इससे तुम्हारा भविष्य बन सकता है।"

रंजना ने इस का भी कोई जवाब नहीं दिया। आदित्य प्रश्न पर प्रश्न करते रहे पर रंजना बिल्कुल स्तब्ध खड़ी रही। वह उत्तर इसलिए नहीं दे रही थी कि उसे घर परिवार व समाज का डर था इसे वह विवेचात्मक दृष्टि से समझ रही थी। इसीलिए वह मूर्ति की तरह निर्जिव खड़ी रही।

रंजना की मां ने सोचा वे दोनों आपस में बातचीत कर रहे होंगे। यह सोचकर उनके लिए वह चाय लेकर आई। आदित्य दरवाजे से हटकर एक तरफ हो गए। रंजना को यही मौका मिला और वह कक्ष से बाहर आ गई।

रंजना की मां समझ गई थी कि रंजना ने आदित्य को वह मान-सम्मान नहीं दिया जो अक्सर एक मेहमान को दिया जाता है। इस घटना का विश्लेषण करते हुए वह अपनी लड़की के पक्ष में सफाई देते हुए बोली - "हमारी लड़की बहुत शर्मिली है। आप बुरा नहीं मानें। मेहमान हो या पास-पड़ोसी, उसको किसी से बात करने का अभ्यास नहीं है। वह कभी घर से बाहर नहीं निकलती, न ही किसी के घर आती-जाती है। बचपन से ही उसका स्वभाव ऐसा ही है।"

रंजना मां का सम्बोधन सुनकर आदित्य बहुत खुश हुए। प्रत्युत्तर में आदित्य ने कहा - "मैं प्रशंसा करता हूं। मैं रंजना के सुन्दर स्वभाव का सम्मान करता हूँ। बहुत श्रेष्ठ विचार है रंजना के। मैं यही अपेक्षा करना चाहूँगा।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन से न चाहते हुए भी आदित्य रंजना की मां से उसकी व्यवहार-कुशलता की प्रशंसा करने लगे। रंजना की मां ने एक-दो आवाजें देकर उसे बुलाना चाहा पर वह नहीं आई। वस्तुतः रंजना को मिलने के सभी प्रयास असफल रह गये। जो बात सोचकर आदित्य ससुराल आए थे उसमें वह सफल नहीं हो पाए। अन्ततः आदित्य कलकत्ता लौट गए।

इस घटना का वर्णन रंजना मेरे व रामदास की उपस्थिति में करने लगी। वह बोली - "देखिए न सर! जनाब के मिलने के तरीके देखिए कितने अच्छे थे। कभी लड़कियों से उन्होंने बात भी की है। मैं खड़ी-खड़ी घबरा रही हूँ और वे दरवाजे के बीच रास्ता रोके खड़े थे। मेरे न चाहने पर भी वे बार-बार कह रहे थे - "रंजना मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। रंजना मैं बहुत दूर से तुम्हें मिलने आया हूँ। क्या तुम मुझ से बात नहीं करना चाहोगी? रंजना मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हूँ। तुम्हारी अभिव्यक्ति का मुझे आभास हो चुका है। परन्तु मैं व्यक्त नहीं कर सकता।"

रंजना की बातें सुनकर रामदास भी हंसने लगा था और मुझे भी हंसी आ रही थी। रंजना की कुशलता व अभिप्राय प्रभावशाली था। इसीलिए वह प्रशंसनीय लड़की थी। उसे एक ही मुलाकात में पसन्द कर विवाह के लिए स्वीकार किया था। यह आदित्य व उनके परिवार का बहुत बड़ा सहयोग था। परन्तु रंजना इसे समझ नहीं पा रही थी। उसके रोम-रोम में मात्र रामदास छाया हुआ था। इसे वह कब भुला पायेगी या नहीं, यह भी एक प्रश्न था।

पर अब विवाह तिथि बहुत ही नजदीक आ रही थी। किसी भी कारण विवाह टल नहीं सकता था क्योंकि समाज व माता पिता के साथ रंजना कभी विद्रोह नहीं कर सकती यह निश्चित था, शायद यही कारण था कि निसंकोच होकर सब ठीक-ठाक चल रहा था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

52

आदित्य अपने ससुराल दो दिन रुके और चले गये। रंजना से दिल खोलकर बात करने की उनकी इच्छा थी वह पूरी नहीं हो पाई। वह चले गये तो अप्रसन्नता को ही साथ ले गये। क्योंकि वह बहुत कम समय रंजना के घर रहे और पूरे विस्तार से समझ गये थे कि रंजना का झुकाव रामदास की तरफ है। परन्तु उन्हें यह भी विश्वास था कि यह सब विवाह होने तक ही रहेगा।

रंजना से बातचीत करने के लिए उन्हें मनचाहे सुअवसर मिले थे परन्तु रंजना स्वयं चाहती नहीं थी। रंजना की मां ने भी एक प्रयास किया कि लड़का-लड़की एक दूसरे के साथ बातचीत का आदान-प्रदान करे। पर रंजना का शर्मिला स्वभाव घोषित करके उन्होंने भी इसका समापन किया।

आदित्य सीधे-साधे व भोले से स्वभाव के थे। परन्तु रंजना जैसी सुन्दर भावी पत्नी को स्वीकार करते हुए यह सब बर्दाश्त कर रहे थे। यही कारण था कि आदित्य निराशा से नहीं अपितु आशा प्रतीक्षा व विश्वास के साथ कलकत्ता लौट गये थे। उनके जाने के पश्चात् रंजना स्वतंत्र व निडर बन गई थी। वह मेरी उपस्थिति में आदित्य की चर्चा करते हुए रामदास को बताने लगी।

वह बोली - "मैं अब स्वतंत्रता का अनुभव कर रही हूं। दो-तीन दिन तो ऐसे बीते जैसे मुझे एक गुलाम की तरह रहना पड़ रहा था। मां तो डांट कर कहती 'आराम से बोलो, छोटी आवाज में बोला करो। चलती भी ऐसी हो फौजी की तरह, पैर पटक-पटक कर।" उसकी बाते सुनकर हंसी आती थी।

रंजना की इस तरह की स्मृतियां भविष्य में उसी के काम आयेगी यह निश्चित था। समय के साथ-साथ हम भी रंजना की तरह आगे बढ़ रहे थे।

जनवरी का महीना निकल गया। रामदास व रंजना परीक्षा की तैयारी में लगे थे। रंजना भूल गई थी कि उसके विवाह का दिन व समय नजदीक आ रहा है। रामदास भी भूल गया था कि रंजना के विवाह के बाद उसके दैनिक जीवन का उत्साह व आनंद समाप्त हो जायेगा। किन्तु रंजना जिस तरह रामदास के प्रति श्रृद्धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रख रही थी उसी तरह रामदास भी रंजना के भविष्य को भलिभांति समझ रहा था। एक दिन वह मुझे कहने लगा - "सर, क्या मैं रंजना को अपने घर ले जाऊं। वह मेरे साथ रहने को तैयार है। कई बार कह चुकी है वह कि 'आप मुझे अपने घर ले चलो, मैं कलकत्ता नहीं जाना चाहती हूं।"

उसकी इस तरह की बातों से मुझे लगता था कि रामदास को कोई उकसा रहा है। फिर रंजना जैसी लड़की क्या इस तरह बातें करना चाहेगी? संभव या असंभव दोनो शब्दों पर विश्वास किया जा सकता था। संभव इसलिए था कि वह रामदास के लिये सब कुछ त्यागने को तैयार थी। असंभव इसलिए लग रहा था कि वह सभ्य व आदर्शवादी परिवार की लड़की थी। उसके संस्कार बहुत अच्छे थे। वह ऊंच-नीच को भलीभांति समझ सकती थी। इसलिए इस प्रकार के कदम वह उठायेगी इस पर विश्वास नहीं था।

मैंने रामदास को समझाया - "नहीं रामदास, नहीं। ऐसे गलत कदम कभी मत उठाना। इसमें रंजना का हित नहीं है। यदि तुम उसे अपने घर ले जाओगे तो उसका जीवन बरबाद हो जायेगा। वह न घर की रहेगी न ही अपने भावी पति की। इसका सारा दोष तुम पर लाद दिया जायेगा। वैसे भी तुम्हें लोग शक की निगाहों से देखते हैं कि क्या रामदास वास्तव में सुधर गया है? जबकि तुम्हारे जीवन पर पहले से ही चरित्रहीनता के दाग लग चुके हैं।"

रामदास कुछ-कुछ समझ रहा था। कुछ-कुछ विश्वास कर रहा था पर उसके मन में बेचैनी दिखाई दे रही थी। रंजना का विवाह जल्दी से जल्दी हो यही मैं चाह रहा था क्योंकि तब तक वे दोनों कोई अपराध न कर बैठे, ऐसा मुझे डर लग रहा था। दूसरी तरफ बोर्ड की परीक्षायें सिर पर खड़ी थी, इसलिए बच्चों की पढ़ाई करवाना भी जिम्मेवारी का काम था। मैंने दसवीं कक्षा के बच्चों की अंग्रेजी विषय की तैयारी परिपूर्ण रूप से की थी। सभी बच्चे अंग्रेजी विषय में अच्छे अंक प्राप्त करेंगे यह मेरा विश्वास था। बोर्ड की परीक्षा में अधिकतर बच्चे अंग्रेजी विषय में ही पास नहीं होते थे। इसी कारण मेरी नियुक्ति की गई थी।

इसलिए विद्यालय के प्रति मेरी जिम्मेदारियां अधिक बढ़ गई थी। मेरा रंजना के घर आना-जाना भी कम हो गया था। विवाह के कुछ दिन पहले नौकर द्वारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंजना की मां ने मुझे बुलावा भेज दिया। उस समय रात्री के नौ बज रहे थे। मैं सोचने लगा इतनी रात को क्या जरूरी काम हो सकता है? यह सोचकर मैं रंजना के घर पहुंच गया। उस दिन उस समय सेठजी भी उपस्थित नहीं थे। वे विवाह के लिए आवश्यक खरीददारी करने हेतु शहर गये हुए थे। पहुंचते ही मैंने रंजना की मां से पूछा - "कहिए, क्या काम था?" मुझे देखकर वह रोने लगी। रोते-रोते वह मुझे रंजना के कमरे में ले गई। रंजना तो आंगन में सो रही थी। उन्होंने रंजना के कमरे में रखे हुए दो सुटकेस मुझे दिखाए। कहने लगी - "देखिए लड़की की करामात। सुटकेस में सामान भरकर पता नहीं कहाँ जाना चाहती है।"

उन्होंने दोनों सुटकेस खोलकर दिखाए। उसमें रंजना के कपड़े आदि वस्तुए थीं। यह सब इस सन्देह को बल दे रहे थे कि रंजना वास्तव में कहीं जाने की तैयारी कर रही है। परन्तु रंजना ऐसा नहीं कर सकती है, यह मेरा अनुमान था। उसकी मां के निष्कर्ष को भी आधारहीन माना नहीं जा सकता। इसी कारण वह परेशान थी। रंजना की विवाह करने की सम्मति भी दिखाई दे नहीं रही थी।

53

रोते-रोते रंजना की मां ने बहुत कुछ बताया। पर उसमें रामदास-रंजना के प्रेम प्रकरण का कोई जिक्र नहीं था। उन्हें यही अनुभव हो रहा था कि रंजना की अनुमति विवाह के लिए नहीं है। इसलिए वह विवाह के पहले ही अपने किसी रिश्तेदार के यहां चली जायेगी और साथ देने के लिये मुझे सहायक बनाया जायेगा। परन्तु इस यथार्थ को मैंने साफ मना कर दिया। ऐसा कभी हुआ भी हो तो रंजना के माता-पिता की समक्ष अनुमति नहीं होगी तब तक मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। ऐसी मैंने संभावना भी व्यक्त की।

यह तो निश्चित था कि इस प्रकार से घर छोड़कर जाने की बातें रंजना और रामदास में पहले कभी होती थीं। परन्तु इसे प्रयोगात्मक रूप दिया जायेगा यह असंभव था। पर अब साफ दिखाई दे रहा था कि वे दोनों आपस में मिल चुके थे। मैंने रंजना की मां से कहा - "आप थोड़ा बेटी की ओर से सावधान रहिए। इस विषय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर कहीं चर्चा नहीं करें। सेठजी से भी जिक्र न करें। मैं सवेरे आकर रंजना से इस विषय पर चर्चा करूंगा। चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

इतना कहकर मैं उसी समय रामदास के घर गया। क्योंकि रंजना घर छोड़कर कहां जायेगी इसका अनुमान मात्र मुझे ही था। जब मैं रामदास के घर गया तो उस समय वह पढ़ाई कर रहा था। रात्रि के अंधकार में उसने टेबल लैम्प जला रखा था और उस संक्षिप्त रोशनी में वह मुझे अधिक सुन्दर दिखाई दे रहा था। वह कुछ लिख रहा था। मेरे जूतों की आवाज सुनकर वह चौंक गया तथा उसने लिखना बंद कर दिया। वह आश्चर्य से कहने लगा - "कैसे आना हुआ सर! कोई खास बात है क्या?"

मैंने कहा - "हां! कुछ आवश्यक बातें करनी थी।" वह उठकर खड़ा हो गया। बोला - "कहिए सर! क्या बात है?"

मैंने कहा - "क्या तुम जानते हो रामदास, कि रंजना घर छोड़कर भागने का प्रयास कर रही है?"

बोला - "नहीं, नहीं सर! ऐसा नहीं हो सकता।"

मैंने कहा - "हो सकता है रामदास! उसने दो सूटकेस कपड़े तथा अन्य सामान से भर रखे हैं। बस, मौका देख रही है।"

मैंने इस तरह कहते ही वह कुछ-कुछ सोचने लगा। बोला - "एक बात है सर।"

"हां क्या बात है?"

कहने लगा - "दो दिन पहले मुझे एक सूटकेस देते हुए रंजना बोली 'इस सूटकेस को आप अपने घर रख लीजिए।"

मैंने कहा - "कहां है वह सूटकेस।"

बोला - "कमरे में रखा हुआ है।"

मैंने कहा - "क्या मुझे दिखाओगे?"

कहने लगा - "जी, क्यों नहीं?" और फिर वह मुझे आंगन से अपने कमरे की तरफ ले जाने लगा। उस कमरे को रामदास ने बहुत ही सजाकर रखा था। जैसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि उस कमरे में एक नया परिवर्तन आ गया था। ऐसा लग रहा था शायद रंजना के आदेश से ही इस कक्ष की सजावट की जा रही है। रामदास ने जैसे ही दरवाजा खोलकर कमरे की बत्ती जलाई तो मैं देखता ही रह गया। सफेद आसमानी पेन्ट से वह कमरा खूब चमक रहा था। मैंने रामदास से पूछा - "यह कमरा किसलिए सजाया गया है?" जवाब देने के बदले रामदास टाल गया। बोला - "आज कुछ आप परेशान लग रहे हैं सर!"

रामदास के इस कथन पर मुझे आश्चर्य हुआ। रंजना घर छोड़ने का प्रयास कर रही थी और रामदास को पता ही नहीं था। मैंने रामदास को साफ-साफ शब्दों में कहा - "रामदास तुम जानते हो, रंजना घर छोड़कर भागने का प्रयास कर रही है और तुम उसका साथ दे रहे हो।"

"नहीं सर, ऐसा नहीं हो सकता। रंजना आपके सम्मान का पूरा-पूरा ध्यान रखती है और साथ-साथ मेरी सम्मति का। इस प्रकार की आशा उससे नहीं की जा सकती।"

"फिर बताओ कि वह सूटकेस कहां है जिसे रंजना ने तुम्हें दिया था?"

बोला - "अभी मैं दिखाता हूं।" सुटकेस को रामदास ने ऐसे सुरक्षित स्थान पर रखा था कि किसी की उस पर नजर भी न पड़े। वह दूसरे कमरे में से उठाकर ले आया। उसमें कोई ताला लगा नहीं था, पर रामदास ने उसे खोलकर भी नहीं देखा था कि उसमें क्या है? जब मेरे आदेशानुसार रामदास ने उस सूटकेस को खोला तो हम दोनों देखते ही रह गए। उस सूटकेस में बहुत ही अमूल्य वस्तुऐं रखी थी और उसे रंजना ने रामदास के सुपुर्द की थी। एक कपड़े में लपेटकर नोटो की गड्डियां रखी थी। एक अलबम रखा था, उसमें रंजना के बचपन से लेकर अब तक की चुनिंदा फोटो रखी हुई थीं। विद्यालय के प्रमाण-पत्र, साहित्य कला संस्कृति में पुरस्कृत किये गए पुरस्कार थे। अपनी सारी अमूल्य वस्तुएँ रंजना ने रामदास के हवाले कर दी थी।

मैंने कहा - "देखो रामदास, देख रहे हो? और तुम जानते ही नहीं।"

कहने लगा - "सर! मुझे वास्तव में पता नहीं है और न ही मेरी कोई योजना है। मैं जो भी करूँगा आप से आज्ञा लेकर करूँगा। ऐसे में तो मुझे आपकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुमति कभी नहीं मिलेगी। मुझे अपने हर कार्यो को आप के आदेशो की आवश्यकता होगी और शायद अनुचित कार्यो के लिये आप कभी आदेश नहीं करेंगे।"

"तुम्हारी यह समझदारी ही मुझे तुम पर विश्वास करने के लिये मजबूर करती है। मुझे विश्वास था कि रामदास कभी ऐसा नहीं कर सकता है।"

उस समय रामदास को समझा कर मैं वहाँ से लौट आया पर अब मुझे रामदास से अधिक रंजना की चिन्ता थी।

54

समय बहुत कम था। रंजना वह काम कर रही थी जिसमें उसके साथ रामदास और मै हम दोनों बदनाम हो सकते थे। एक सूटकेस उसने रामदास के घर भेज दिया। दो सूटकेस उसने अपने कक्ष में पलंग के नीचे छिपाकर रखे थे। जब उसकी मां को पता चला कि रोज कोई-न-कोई वस्तु गायब हो रही है तब उन्होंने बेटी पर सन्देह किया।

समदास को मैंने एक प्रश्न यह भी किया था कि - "रामदास पिछले दिनों तुमने एक अटल फैसले की बात की थी। क्या वह फैसला यही था?"

बोला - "नहीं सर! मैंने ऐसा कभी सोचा ही नहीं था और न ही ऐसा करूंगा। परन्तु मैं विश्वास के साथ जी रहा हूँ। जब तक रंजना का विश्वास है तब तक मैं उसके आदेशों का पालन करूंगा।"

"रंजना तुम्हारे लिये विश्वास बन कर जी रही है। यह भी तुम अच्छी तरह जान रहे हो। परन्तु मुझे यह डर लग रहा है कि इस आपाधापी में तुम दोनों एक दूसरे का हित समझकर अहित न कर बैठो।"

"ऐसा नहीं होगा सर! आप भी हम दोनों पर विश्वास रखिए।"

वह मुझे समझाने का प्रयास कर रहा था। मैं समझ तो रहा था पर इस उम्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के बच्चे नादानी बहुत जल्दी कर लेते हैं यह भी मुझे विश्वास था। मैंने टेबल पर रखी एक पुस्तक उठाकर रामदास के सामने बढ़ाते हुए कहा - "इस विद्या की शपथ लेकर कहो कि रंजना का विवाह होने तक तुम उससे मिलना-जुलना बंद कर दोगे? कहो कि जब तक रंजना का विवाह नही हो जाता तब तक तुम उसके कहने में नहीं आओगें।"

रामदास पुस्तक पर हाथ रखकर कसम खाने में हिचकिचाने लगा। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके साथ अन्याय किया जा रहा है। वह साहस बटोर कर बोला - "हम किसी भी अन्याय को बल पूर्वक स्वीकार कर लेंगे सर! इसमें शपथ लेने की या कसम खाने की कोई आवश्यकता नहीं है। रंजना का कहना मैं मानू या न मानू यह मेरे व्यक्तिगत सम्बधों का प्रशन है। शपथ लेकर मैं बन्धनों में पड़ना नहीं चाहता।"

"रामदास! तुम दोनों अपराध करने जा रहे हो। ऐसा प्रतीत हो रहा है।"

"नही सर नहीं! ऐसा नहीं होगा। मैं रंजना का कहना मान रहा हू इसका अर्थ यह है कि मैं उसका सम्मान करता हू। पर रंजना के प्रति कोई अन्याय हो, यह मैं स्वीकार नहीं करूंगा।"

रामदास उसी आक्रमण पर उतर आया था जो मैं सोच रहा था। वह अपने प्रेम को प्राथमिकता दे रहा था। उसकी विचारधाराए रंजना के प्रति सुदृढ़ बन गई थी। वह वही कर रहा था जो रंजना चाह रही थी। पर इसमें शायद मुझे भी संलग्न किया जायेगा। यदि वह दोनों दोषी पाए गए तो इस अपराध को कैसे टाला जाए यह मेरा पक्ष था। रामदास दिल से भले ही मेरा सम्मान कर रहा था पर रंजना की तुलना में ऊपरी तौर पर। मैं रामदास का अध्यापक था पर रंजना रामदास की कौन थी? यह वह स्वयं ही जानता था।

मैंने सख्ती से रामदास को कहा - "रामदास तुम अपने जीवन को परीक्षा का साधन मत बनाओ। इसमें तुम शायद ही जीत पाओगे। तुम्हें अधिक समझाना, इसे अधिक मूर्खता कहा जायेगा। पर तुम समझदार हो। जितना जल्दी से समझ जाओ, इसी में तुम्हारा हित है।" इतना कहकर मैं वहां से अपने घर चला आया।

पर उस समय रामदास ने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया। मैं उस पर अधिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दबाव नहीं डालना चाह रहा था। क्योंकि उसका दोष कोई नहीं था। दोष तो मेरा ही था जो उसको रंजना के सामने बिठाकर मैं भूल कर बैठा था। जो वास्तव में असंभव था उसे उन दोनो ने संभव करके दिखाया। यह कोई विश्वास भी नहीं कर सकता था।

रामदास को इतनी तो बुद्धि थी कि वह समझदार अवश्य था। दूसरे ही दिन सवेरे वह मेरे घर पहुंच गया। रात को जो कुछ भी मेरा उससे वार्तालाप हुआ उस पर वह क्षमा-याचना करने लगा। उसने रंजना का सारा सामान लौटा दिया था। रंजना नाराज हो गयी थी, पर रामदास ने उसे किसी तरह मना लिया था। ऐसा रामदास स्वयं बताने लगा।

वह उसी वक्त रंजना के घर से आ रहा था। वह कुछ निराश भी लग रहा था। उसकी आंखों में बीच-बीच में आंसू भी दिखाई दे रहे थे। रंजना के साथ उसका क्या वार्तालाप हुआ था यह वह बताना नहीं चाह रहा था। परन्तु उसका चेहरा, उसके चेहरे के हाव-भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे कि रामदास रंजना के सामने कुछ न कुछ त्याग करके आया है।

मैंने उससे एक ही प्रश्न किया - "बोलो रामदास! कैसे आना हुआ?"

कहने लगा - "सर मैं क्षमा चाहता हूं। आप रात्री को मेरे घर आए थे और मैं पता नहीं आप को कैसे-कैसे उत्तर देता रहा।"

मैंने कहा - "कोई बात नहीं रामदास। यह सब जीवन का हिस्सा है अक्सर ऐसा होता रहता है।"

"सर मेरे साथ जो कुछ भी होता रहा यह भी अनुशासन का हिस्सा था। और इसी का मैं बलि चढ़ गया। सब कुछ खो चुका हूं मैं। मां चली गई, मां के साथ सुखी जीवन भी समाप्त हुआ और जो मेरा भविष्य था जिसके लिए मैं जी रहा था उसका भी अब समापन होने जा रहा है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

55

रामदास के मनोभावों को मैं अच्छी तरह से समझ रहा था। परन्तु इसके लिए मैं उसे कोई सहयोग दे नहीं सकता था? यह रामदास जानता था।

अब यह रामदास के लिए दयनीय अवस्था थी। वह प्रेम का त्याग करने के लिये अपने मन में सोच रहा था। यह उसके लिए अच्छे प्रयास थे।

मैं यह भी जान रहा था कि धीरे-धीरे रामदास मेरा कहना भी मान रहा था। आज की परिस्थिति में एक छात्र अपने साधारण अध्यापक का कहना मान कर अपने सुनहरे जीवन को छिन्न-भिन्न कर दे यह मेरे लिये भी भूषण की बात थी।

परन्तु यह सब होना नहीं चाहिए था। यहीं मैं आरम्भ से सोच रहा था। रामदास ने पढ़ाई की अपेक्षा न करते हुए रंजना को अपना साथी बनाने के लिये ही वह जोर देता रहा, यह उसकी भूल थी और अब उसे अवश्य पश्चाताप् करना पड़ रहा है। यह कष्ठदायक कार्य था। इसी आपाधापी में उसका मन नहीं लग रहा था।

रंजना के विवाह के लिए मात्र पांच दिन बाकी रह गये थे। बोर्ड की परीक्षा वे दोनों दे चुके थे। दोनो के पेपर्स अच्छे रहे, ऐसा मुझे प्रश्न पत्रिका के आधार पर पूछताछ करने से पता चला। वस्तुतः मेरी कक्षा के सभी बच्चे चालीस प्रतिशत अंक प्राप्त करके पास होंगे ऐसी मुझे अपेक्षा थी। क्योंकि बोर्ड के परीक्षा का परिणाम ग्रामीण विद्यालय के लिए मात्र दस प्रतिशत तक का ही होता था।

मुझे इसीलिए नियुक्त किया गया था कि बच्चे पढ़ाई में सुधार करें और अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके परीक्षा में सफल हो सके।

मैंने बच्चों के स्तर को बहुत हद तक ऊंचा उठा लिया था। रंजना ही एक मात्र छात्रा ऐसी थी वह कम से कम साठ प्रतिशत अंक प्राप्त करेगी यह मेरा अनुमान था। उसके पीछे-पीछे रामदास भी चालीस-पैंतालीस प्रतिशत अंक प्राप्त करके अवश्य आगे बढ़ेगा। क्योंकि इसके पहले वह दो बार बोर्ड की परीक्षा में फेल हो चुका था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंजना जैसी होशियार लड़की के साथ बैठकर अध्ययन करने से रामदास सुधर जायेगा, यही सोच कर मैंने उन दोनों को एक साथ बिठाकर पढ़ाया। परन्तु पर्दे के पीछे उन्होंने प्रेम का रास्ता अपनाया। उनका प्रेम पवित्र था। बहुत पवित्र था इसमें शक नहीं किया जा सकता था। परन्तु उस पवित्र प्रेम का समापन दुःखो में परिवर्तित हो रहा है इसका मुझे दुःख था। बस, वे अपने इस प्रेम को विवाह प्रसंग तक ले गए थे और यही उन दोनों के लिये असंभव था।

मुझे तो कभी-कभी ऐसा डर लग रहा था कि रंजना के माता-पिता को यह सब पता लग गया तो रामदास और मेरा, हम दोनो का भी उनके घर में प्रवेश भी नहीं हो पायेगा। परन्तु यहां तक बात नहीं पहुंची थी। हो सकता है कि रामदास शायद इसी का लाभ उठा रहा था।

अभी तक वह लगातार रंजना के घर आता-जाता रहा और वे दोनो दो-दो, चार-चार घन्टे वार्तालाप करते रहे। परन्तु रंजना के माता-पिता को कोई आपत्ति नहीं थी। रंजना ने भी गंभीरता से लिया। उसने अपने सारे सुटकेस खाली करके जहां का सामान वहां रख लिया। इस लिये उसकी मां निश्चित हो गई। रंजना को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका विवाह होने वाला है और फिर वह विवाह के बाद ससुराल चली जायेगी।

वे दोनों भी हतोत्साहित हो चुके थे। दोनो एक दूसरे को दिलासा दे रहे थे। मैं रामदास को रोज उसके घर जाकर उसे मिलता था और वह मेरे सामने पूरी दिनचर्या स्पष्ट रूप से बयान करता।

रंजना के घर विवाह के उपलक्ष्य में गतिविधियां तेज होती जा रही थी। क्योंकि अब मात्र विवाह के लिए तीन दिन बाकी थे। सेठजी की कोठी सजाने के लिए पूरी तैयारियां हो रही थी। सोमवार 27 मार्च की विवाह तिथी थी। उसी दिन शाम को आठ बजे बारातियों का स्वागत एवं मंगलवार 28 मार्च को सवेरे पांच बजे डोली का कार्यक्रम निश्चित किया गया था।

विवाह के निमंत्रण कार्ड छपकर आ चुके थे एवं आधे बंट भी चुके थे। कार्ड पर रंजना व आदित्य के नाम साथ-साथ छपे हुए थे। अपने नाम के साथ छपे हुए आदित्य के नाम को रंजना काफी देर तक निहारती रही, और फिर आंखों से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आंसू टपक पड़े।

कहां रामदास, कहां आदित्य। रंजना की मां ने अपनी बेटी से पूछा भी था कि निमत्रंण कार्ड कैसे छपें? तब रंजना ने उत्तर दिया 'निमंत्रण कार्ड की भी क्या प्रशंसा करनी होगी मां?' शायद मां न पूछती तो अधिक ठीक था। मां नहीं समझ पा रही थी कि उनकी बेटी इस विवाह से प्रसन्न नहीं है।

रामदास द्वारा मुझे यह भी पता चला कि जब रंजा1 ने अपने विवाह का कार्ड रामदास के निमंत्रण के रूप में सुपुर्द किया तो वह उस समय बहुत रोई। शायद उसने ऐसी कल्पना भी नहीं की होगी। रामदास ने वह कार्ड अपने गले से लगाया और कहा - "इस निमंत्रण कार्ड की उपलब्धि मेरे लिये निश्चित कोई न कोई सन्देश दे रही है। मैं उस सन्देश को अवश्य स्वीकार करूंगा।" रंजना ने अपने विवाह का न्यौता स्वयं अपने हाथों रामदास को दिया था।

56

रामदास के लिए रंजना प्रिय थी इसलिए रंजना ने स्वयं रामदास को विवाह का निमंत्रण कार्ड देकर उसे विवाह कार्य में उपस्थित रहने के लिए अनुरोध किया। सेठजी ने मुझे निमंत्रण देने हेतु अनुरोध करके अपने घर बुलाया। तथा सम्मान से कहा - "अध्यापकजी! यह लीजिए विवाह का निमंत्रण कार्ड। आप उपस्थित रहने के साथ-साथ जो आवश्यक समझे वह जिम्मेदारी आपने संभालनी है, यही हम दोनों का अनुरोध है।"

उस समय साथ में उनकी पत्नी भी उपस्थित थी। कार्ड के साथ कपड़े भी दिये, भोजन भी उन्हीं के साथ किया। एक साधारण अध्यापक को इतना बड़ा सम्मान मिलना यह सभी अध्यापक वर्ग के गर्व की बात थी।

सेठजी व उनकी पत्नी की हर व्यक्ति के लिए आदरणीय भावनाएं थी। वस्तुतः वह दम्पति संस्कार की परिभाषा मन से जानते थे। थोड़ा सा जब रंजना से एकान्त का समय मिला तो मैंने उससे प्रश्न किया - "रंजना! अब तो इस विवाह से खुश हो आप?" वह मुंह पर हाथ रखकर रोने लगी और गर्दन हिलाकर कहने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लगी - "नहीं सर!" मैंने उसे फिर पूछा - "क्यों क्या हुआ? इस में दुख की क्या बात है? जानती हो, पूरे गांव में चर्चा है कि सेठजी की लड़की का विवाह धूमधाम से किया जा रहा है।"

कहने लगी - "नहीं सर, मन नहीं मान रहा है। विवश होकर समझौता करना पड़ा। मन की बात मन में ही रह गई। आप थोड़ा सा साथ देते तो शायद हम दोनों की मनोकामना पूरी हो जाती।"

मैंने कहा - "रोना बंद करो। जो हो रहा है अच्छा ही हो रहा है।" जो तुम सोच रही हो यह असंभव था और यदि हम इस विषय को तुम्हारे माता-पिता के सामने रखते तो परिस्थिति शायद बहुत भीषण होती।

कहने लगी - "फिर हमारे अपने स्वतन्त्र अधिकार की क्या परिभाषा है।"

"स्वतंत्र अधिकारों के ऊपर समाज की परिभाषा है रंजना और प्राथमिकता समाज व घर के सदस्यों को देना आवश्यक है न कि व्यक्तिगत स्वतंत्र अधिकार के लिए।"

वह सुन तो रही थी न कि मान रही थी। क्योंकि प्रेम प्रसंगो की भाषा मात्र एक ही होती है और वह है किसी की नहीं मानना। मैं और रंजना उसी के कक्ष में बैठे थे। वह अपने कर्त्तव्य को भूलती भी नहीं थी और अपने काल्पनिक जीवन को सपनो में ही देख रही थी। उसका रोना व आंसू बहाना थम चुका था।

मैं उसे बहुत देर तक समझाता रहा। परन्तु रामदास उसके मन से कभी निकल नहीं सकता था। उसके रोम-रोम में रामदास बसा हुआ था। विवाह के बाद भी वह रामदास को नहीं छोड़ेगी ऐसा ही अनुमान लगाया जा सकता था।

मैं उठकर खड़ा हुआ और रंजना को कहा - "ऑल द बेस्ट रंजना।" इसका उत्तर भी उसने दिया "थैंक्यू सर।" मैं वहां से बाहर आ गया। बाद में फिर अचानक ही रामदास के घर की तरफ चल पड़ा। जब मैं उसके घर गया तो मैंने रामदास को देखा, उसकी अवस्था रंजना से भी बढ़कर विचारणीय थी।

बिस्तर पर वह लेटा हुआ था। उसकी मानसिक अवस्था ठीक नहीं थी। सोचते-सोचते चेहरा गंभीर व आंखे लाल हो गयी थी। मुझे देखकर वह खड़ा हो गया। बोला - "आईए सर।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैने कहा - "यह क्या अवस्था बना रखी है रामदास। अधिक सोचो नहीं। जीवन बहुत बड़ा है। जो अवसर तुम्हें मिला था यह तुम्हारा भाग्य था। कर्त्तव्य नहीं था। कर्त्तव्य करते रहो। जीवन में और भी भाग्यशाली सुअवसर मिलते रहेगें।"

रामदास निराश था। उसने कोई जवाब नहीं दिया। उस समय दोपहर के चार बज रहे थे। मैंने उसे घूमने-फिरने के बहाने बाहर चलने के लिए बोला। उसने मना किया। कहने लगा - "नहीं सर, मन नहीं कर रहा है।" आगे वह मुझे चाय के लिये आग्रह करने लगा। चाय आई। चाय पीते-पीते मेरी उससे थोड़ी बातचीत हुई, वह भी रंजना के सम्बन्ध में।

मैंने उससे पूछा - "अब रंजना के विवाह के लिए दो दिन बाकी रह गये हैं रामदास।"

कहने लगा - "जी सर!"

"तुम उपस्थित रहोगे?"

"जी सर! जरूर उपस्थित रहूंगा!"

"रंजना ने तुम्हारे लिए तो विशेष अनुरोध किया होगा?"

"अनुरोध तो क्या, बस समय बिताने वाली बात है।"

"वैसे क्या कहा उसने?"

कहने लगा - "उसने कहा था 'दो दिन कहीं नहीं जाना। विवाह मंडप में तब तक रहना जब तक विदाई नहीं होती। पता नहीं आगे कब मिलना-जुलना होगा। कोई मिलने भी देगा या नहीं।"

"क्या वह ऐसा कह रही थी?"

मैंने कहा - "पता नहीं ऐसा वह क्यों कह रही थी?" पर अब तुम्हें उसका कहना मानना चाहिए। मैं भी यही कहने जा रहा था। तुम्हें विवाह में आना है और उपस्थित रहना है। मैं भी रहूंगा। तुमने तो बहुत कुछ त्याग दिया उसके लिये, अब इस त्याग का समापन करना है। तुम जैसे मेरे लिए एक छात्र थे वैसे ही वह भी मेरे लिए मात्र एक छात्रा थी! परन्तु हम तीनों का एक साथ बैठना-उठना और एक दूसरे से घुलमिल कर रहने से हमारी घनिष्ठता बढ़ती गई। परिणाम स्वरूप तुम्हारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिश्ता मित्रता का रहा। पर ग्रामीण समाज इसे स्वीकार नहीं कर सकता। इस कारण तुम्हे यह दुख झेलने पड़ रहे हैं।

57

मैं रामदास को उसके जीवन के सम्बन्ध में बहुत देर तक उपदेश देता रहा। परन्तु मेरे उपदेश उसके किसी काम के नहीं थे। क्योंकि उसे अब किसी भी प्रकार की नकारात्मक सोच सुननी नहीं थी। किसी तरह मैं उससे विदाई लेकर अपने घर वापस आ गया। शाम को फिर मुझे रंजना के घर का बुलावा आ गया।

विवाह के उपलक्ष्य में उनके घर में मेहमानों का आना शुरू हो गया था। कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, बम्बई से मेहमान आने लगे। भोपाल, जयपुर, नागपुर,अहमदाबाद आदि छोटे-बड़े शहरो से महिलाएं, पुरूष एवं बच्चों का आना आरम्भ होने से विवाह के एक दिन पहले ही पांच सौ मेहमान सेठजी के घर पहुंच गए थे।

रंजना का विवाह एक सम्पन्न एंव धनी विवाहोत्सव से कम नहीं था। घर के चारों तरफ एवं दूर-दूर तक सफाई की गई थी। कोठी के सामने प्रमुख सड़क पर विवाह का विशाल मंडप तैयार किया जा रहा था। नये-नये शामियाने, पर्दे, कनाते और झालरों को देखकर सब के मन में एक नई उमंग पैदा हो रही थी। सत्तर-अस्सी व्यक्तियों की मंडली विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ एवं व्यंजनों को तैयार करने के लिए एक साथ जुटी हुई थी। पीने के पानी का प्रबन्ध करने हेतु दो-दो टैंकर लगे हुए थे। विवाह का भरपूर प्रबन्ध देखकर बाराती सेठजी को निसंकोच हृदय से शुभकामनाएं दे रहे थे।

26 तारीख लौट गई और 27 तारीख ने जन्म ले लिया। बारात एवं दुल्हे साहब कलकत्ता से रेलवे मार्ग से आने वाले थे। उन्होंने दुल्हन के गांव तड़ेगांव दशासर से बारह किलोमीटर दूर धामणगांव रेलवे स्टेशन पर उतरना था। सेठजी को टेलीग्राम भेज सूचित कर दिया था कि वे जिस ट्रेन से आ रहे हैं वह ट्रेन धामणगांव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सवेरे दस बजे तक पहुंच जायेगी। यदि ट्रेन देरी से चल रही हो, फिर भी एक या दो घन्टे का विलम्ब होगा।

सेठजी को सूचना प्राप्त होने के आधार पर रेलवे स्टेशन पर बारातियों के लिए बसों का प्रबन्ध कर लिया गया। खास दुल्हे के लिए सेठजी ने नई अंम्बेसडर कार भेज दी। वह कार भी दो दिन पहले खरीद कर ले आए थे। उस कार को भी उन बसो के साथ भेजा गया।

दुल्हा अपने बारातियों के साथ बिना किसी कठिनाई से निर्धारित समय के आधार पर सवेरे दस बजे धामणगांव रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए। सेठजी ने रेलवे स्टेशन के बाहर ही एक छोटा सा टेन्ट लगाकर बारातियों के लिए हाथ-मुंह धोने एवं नाश्ते का प्रबन्ध किया। सेठजी द्वारा की गई सम्माननीय व्यवस्था देखकर उनकी प्रशंसा करने लगे।

तत्पश्चात् दुल्हा एवं बाराती आधे घन्टे में तड़ेगांव-दशासर पहुंच गए। उनके रहने का प्रबन्ध तडेगांव दशासर के ऐतिहासिक बालाजी मन्दिर के परिसर में किया गया था। यहां का भी प्रबन्ध देखकर सभी बाराती बहुत खुश हुए एवं प्रसन्न मुद्रा में विवाह प्रसंग का आनन्द उठाने लगे।

दुल्हन रंजना को हल्दी लगाई गई थी। वह दुल्हन के श्रृंगार में विवाह विधि की रस्म पूर्ण करने में सहयोग दे रही थी। पर यह सब आधे मन से हो रहा था। यह मैं अकेला ही जान रहा था। रंजना का विवाह के लिए तैयार होना अपने माता-पिता की इज्जत व सम्मान का ध्यान रखते हुए परम्परा को निभाया जा रहा था। वह समझ रही थी कि दस पन्द्रह दिनों में ही उसके पिता ने विवाह के लिए लाखो रूपये खर्च कर लिए थे।

पर त्याग की भावना मन में जागृत करना बहुत कठिन काम है। रंजना की सहेलियों ने जब उसकी हथेलियों पर आदित्य जी का नाम लेकर मेंहदी लगाई तो वह फूट-फूट कर रोने लगी। उसका क्रंदन भावनात्मक था। वह रामदास को भूलने से भूल नहीं पा रही थी। परन्तु अब कोई पर्याय भी नहीं था।

विवाह के पूरे दिन मेहमानो की चहल-पहल बनी रही। धीरे-धीरे दोपहर ढलने लगी और शाम होने जा रही थी। विवाह की घड़ी नजदीक आ रही थी। रंजना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के माता-पिता ने मुझे विशेष रूप से आदेश दिया था कि मैं विवाह मंडप में ही उपस्थित रहूं। उनके आदेशों का मैं पूरी तरह से पालन कर रहा था। क्योंकि लड़की का व्याकुल रहना कष्टदायक दिखाई दे रहा था।

विवाह के लिए दो घन्टे बाकी थे कि मुझे सन्देश मिला की दुल्हन ने याद किया। मैं उसे मिलने गया। उसने तीन दिन से रामदास को नहीं देखा था। न ही रामदास उसे मिलने आया। यह बात वह मुझसे पूछने लगी। मैंने उसे दिलासा दिया कि रामदास विवाह में पहुंच जाएगा।

माता-पिता से छुप-छुप कर भी रामदास के लिए उसकी आंखे बह रही थी। क्या प्रेम में इतनी शक्ति है कि वह हृदय को समय-समय पर छलनी कर देता है? . . क्या प्रेम वास्तव में दूरियों को बर्दाशत नहीं कर सकता? . . . क्या प्रेम कर्त्तव्य, कर्म, स्वभाव को भ्रमित कर देता है? मैं समझ नहीं पा रहा था। परन्तु रामदास व रंजना के प्रेम को देखकर ऐसा अनुभव किया जा रहा था कि यह जीवन से जुड़ा हुआ संघर्ष है जिसके बिना मन सन्तुष्ट नहीं रह सकता।

58

रामदास के लिय रंजना बहुत बैचेन थी। उस की दयनीयता को देखकर उसी के कहने पर आधारित मैं रामदास के घर गया। वह भी इसी हालात में था। जो अवस्था रंजना की थी वही अवस्था रामदास की थी। इस पर से मुझे लग रहा था कि वे दोनों अपने किसी तय किये कार्य में सफल नहीं हो पाए। और दोनो भी मन को हार कर समाज के बली चढ़ गए थे। रंजना दुल्हन बनी थी और रामदास पलंग पर लेटे-लेटे अपने भविष्य को ढूढ रहा था।

मैंने रामदास को कहा - "देखो रामदास, इस समय मुझे रंजना ने तुम्हें देखने के लिए भेजा है कि तुम कहां हो, कैसे हो, और तीन दिन से तुम उसे मिलने क्यों नहीं गए? पर अब रंजना का तुम्हें विशेष अनुरोध है कि विवाह के समय तुम्हे उपस्थित रहना है। यदि तुम नहीं आओगे तो वह एक-एक पल तुम्हारी प्रतीक्षा करती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहेगी।"

रामदास ने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। उसका उत्तर सुनकर मुझे भी अच्छा लगा। उसके घर से मैं विवाह मंडप में आ गया। रामदास की विवाह में उपस्थित होने की इच्छा एवं उसकी स्वीकृति रंजना को बता दी। पर रंजना को फिर भी चैन नहीं था।

उसने हल्के से एक प्रश्न किया - "सर इस समय वे कहां है और क्या कर रहे हैं?" मैंने उसे संक्षिप्त में उत्तर दिया - "रामदास एकान्त में समय व्यतीत कर रहा है।" यह सुनकर उसकी आंखे भर आई। मैं वहां से आकर विवाह मंडप का निरीक्षण करते हुए टेन्ट कम्पनी के कर्मचारी लाईटिंग सजाने में कितने व्यस्त थे, यह देख रहा था।

धीरे-धीरे शुभ घड़ी नजदीक आ रही थी। विवाह की पूरी तैयारियां हो चुकी थी। रात्री के आठ बज गए थे। चारों तरफ रोशनी हो चुकी थी। मंडप चमक रहा था। लाऊडस्पीकर पर वर्तमान फिल्मों के गीत गूंज रहे थे। बारात के स्वागत की तैयारियां आरम्भ हो गई थी। विवाह के उपलक्ष्य में गांव के लोग नये-नये वस्त्र पहन कर मंडप में प्रवेश कर रहे थे।

मंडप के सामने ही जब दुल्हे साहब बारातियो के सामने पहुंच गए उस समय रात्री के नौ बज रहे थे। दुल्हे के साथ लाया गया कलकत्ते का मशहूर ब्रास बैन्ड फिल्मी गीतो की धुने बजाकर बारातियों का मनोरंजन कर रहा था। दुल्हे साहब सजी हुई घोड़ी पर बैठकर मंडप के प्रमुख दरवाजे पर पहुंच गए। बारातियों में से कुछ इच्छुक लोगों ने खुशियां मनाते हुए बैन्ड बाजे व नाच-गाने के साथ नोटो की बौछार कर दी। दुल्हे साहब सेहरा बांधकर घोड़ी पर बैठे हुए थे।

उन्हें घोड़ी से उतारा गया। चालीस पचास महिलाएं दुल्हन को अपने साथ ले आई। दुल्हन के हाथों में वरमाला दी गई। वह दुल्हन दुल्हे को पहनाने लगी। एक साथ तालियों की गड़गड़ाहट हुई, पटाके छूटने की आवाज आने लगी। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ ही दुल्हे साहब को लेकर बाराती मंडप में प्रवेश करने लगे।

तत्पश्चात् एक तरफ मेहमान एवं बारातियों का खाना-पीना चलता रहा तथा दूसरी तरफ विवाह की रस्म पूरी की जा रही थी। दुल्हन में कितना परिवर्तन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ गया था। मैंने उसे दस महीने पहले देखा था। वह एक बालिका थी। पर आज वह दुल्हन के रूप में प्रौढ़ लग रही थी। उसकी माता ने उसे दिए हुये संस्कार उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रहे थे। कल तक दुल्हे साहब अर्थात आदित्य जी रंजना के सामने भोले-भाले लग रहे थे। पर अब दुल्हे के रूप में उन्होंने रंजना पर पूरा अधिकार जमा लिया था।

कई बार उन्होंने रंजना के कन्धे पर हाथ रखा, कई बार कमर पर हाथ रखा। दो-चार बार दुल्हे ने रंजना का हाथ पकड़कर उसकी उंगलियां दबा दी। बाराती हंस रहे थे, मुस्कुरा रहे थे। उधर रंजना का खण्डित हृदय क्रन्दन कर रहा था। रंजना ने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था। दुल्हे साहब ने इस बात को भी ताड़ लिया था कि उनकी दुल्हन पूर्ण रूप से उन्हें साथ नहीं दे रही है एवं उसकी आंखे रामदास को देखने के लिए भटक रही हैं। इसी बात का लाभ दुल्हे साहब उठा रहे थे।

दुल्हे की छेड़खानी रंजना को पसन्द नहीं आ रही थी। इसलिए वह घूंघट में से भी क्रोधित आंखों से दुल्हे को देखते हुए उन्हें सावधान करना चाह रही थी। पर इससे उन पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा था।

इसके पहले कई महीनों से रामदास रंजना के साथ घन्टों बैठा करता था। रात-रात तक बैठा रहा। अंधेरे और उजाले में बैठा रहा। परन्तु उसने कभी इस तरह की हरकते नहीं की होंगी।

रंजना ने दिन भर से भी कुछ नहीं खाया था। महिलाएं उसे अपने साथ बिठाकर खाने के लिए जोर-जबरदस्ती करती रही पर उसका मन नहीं हुआ। इसलिए वह थकी-थकी सी दिखाई दे रही थी।

उसने जिसे जीवन साथी चुना था वह उसे मिल नहीं पाया था। इसका भी उसके बहुत दुख था। आदित्य को वह रामदास की तुलना में बहुत छोटा समझ रही थी। जो सभ्यता व संस्कार रामदास में थे वह उसे आदित्य में नहीं मिल पा रहे थे। जो शरारती स्वभाव आदित्य का दिखाई दे रहा था ऐसा शरारती आचरण रामदास में नहीं था। रंजना इस आपाधापी में अधिक चिन्तित दिखाई दे रही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

59

रंजना दुल्हन क्या बनी स्वर्ग की परी दिखाई दे रही थी। किन्तु उसका चेहरा उतरा हुआ नजर आ रहा था। उसका मुर्झाया हुआ चेहरा भूत काल के दिनों को याद कर रहा था। उसका विवाह बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हो रहा था। इसकी उसे कोई खुशी नहीं थी। चिन्तित थी तो मात्र रामदास के लिए। कल तक वह हमेशा की तरह स्कर्ट पहने एक किशोरी थी। पर अब वह माथे पर सिंदूर चढ़ाकर स्त्री बन गई थी।

ऊंची-ऊंची सी, गोल सा चेहरा, गोरा रंग और किशोर अवस्था के तेज आकर्षण वाली रंजना, विवाह की सेज पर अपने पति आदित्य के साथ घोर चिन्ता में बैठी हुई थी। बनारसी शालू में रंजना का शरीर खिल रहा था। उसने जो अपने बदन पर हीरे जवाहारात पहन रखे थे। उससे ऐसा लग रहा था जैसे कि दुनिया के अमूल्य आभूषण रंजना के पति ने दिल खोलकर उसके बदन पर चढ़ा दिए हों।

किन्तु रंजना ने अपना कोमल चेहरा घूंघट ओढ़कर छिपा रखा था। स्त्री का एक आदर्श क्या होता है? इसके मूल सिद्धान्तों को उसकी मां ने उसे समझाए थे और इस के पूर्व अभ्यास का अनुसरण वह कर रही थी। पर उसके मन में दुखदायी घटनाओं का उतार-चढ़ाव हो रहा था। समय-समय पर पिछला क्षण याद कर रही थी। इसे मात्र मैं ही दूर खड़ा होकर अनुमान लगा रहा था। रह-रह कर कभी वह आसमान के तरफ देखती तो कभी जमीन की तरफ। अकस्मात ही उसकी आंखें आंसुओं से डब-डब भर आती। उन आसुओं में क्या था? उन आंसुओं में मात्र पिछले सात महीनों का इतिहास था। उन आंसुओं में मात्र एक नवयुवक की प्रतिमा थी जो उसके हाथ से बचते-बचते गिर पड़ी और टूटकर सदा के लिए बिखर गई। उसके सीने को वह घटना बार-बार वार कर रही थी जिसके पीछे रामदास की मां अपनी अमिट छाप छोड़ गई थी।

जमीन और आसमान की तरफ देखकर रंजना यही सोच रही थी कि रामदास की मां उसे कभी क्षमा नहीं करेगी। दुल्हन तो वह उसी दिन बनी थी जिस दिन रामदास की मां के गहने पहन कर वह उनके सामने खड़ी हो गई थी। रंजना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने वह साक्षात्कार भी दे दिया था जिस साक्षात्कार में रामदास को वर चुन लिया था।

दुल्हे के साथ बारात में आए हुए नवजवान लड़के-लड़कियां ऐसे थे कि वे रंजना को एक पल भी एकान्त का समय नहीं दे रहे थे। चारो तरफ से उन्होंने रंजना को घेर लिया था। लड़कियों ने तो बहुत ही शोर मचा रखा था। उन लड़कियों का साथ दे रहे थे वह दस-पन्द्रह लड़के जो दुल्हे के साथ कलकत्ता से आए थे।

लड़कियों में से हर लड़की रंजना से बात करके उसका दिल जीतने का प्रयास कर रही थी। परन्तु रंजना बिल्कुल ही गर्दन नीचे करके बैठी हुई थी। लड़कियों में से एक लड़की दुल्हे को सम्बोधित कर बोली - "भईया, दुल्हन भाभी को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वह शायद किसी की प्रतीक्षा कर रही हैं?" दूसरी लड़की बोली - "हां बहन, तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो। यही अनुमान मैं लगा रही थी। क्योंकि प्रतीक्षा करने वालो को चिन्ता बनी रहती है।"

लड़कियों का वार्तालाप सुनकर दुल्हे की आंखों के सामने रामदास का प्रतिबिम्ब खड़ा हो गया। क्योंकि दुल्हे साहब भी यही आशंका कर रहे थे। फिर लड़कियों में से एक लड़की ने प्रश्न दागा - "भईया, भाभी जी से पूछिए तो सही कि किसका इन्तजार हो रहा है।" आस-पास बैठे सभी युवक-युवती दुल्हा-दुल्हन की तरफ उत्सुकता से देख रहे थे। दुल्हे जी रंजना के एकदम समीप पैर फैलाकर बैठे थे। वे रंजना से पूछताछ करना या वार्तालाप करने में डरते थे, क्योंकि इसके पहले उन्होंने बहुत बार रंजना से वार्तालाप करना चाहा पर उन्हें उचित एवं स्पष्ट उत्तर नहीं मिल पा रहा था। क्योंकि वह स्वयं भलिभांति समझ चुके थे कि रामदास की प्रतिमा उनकी भावी पत्नी की आंखों से उतरी नहीं है।

रंजना मन पूर्वक रामदास को अपने आंखों के सामने खड़े देखने की अभिलाषा कर रही थी। वैसे आदित्य रामदास को नफरत एवं घृणा से देख रहे थे। वे रामदास को अपने व रंजना के आसपास देखना भी नही चाहते थे। वे जब से मंडप में आए तब से ही रामदास को देख रहे थे। पर वह उन्हें कही पर भी नजर नहीं आने से वे स्वयं सुखद अनुभव कर रहे थे। इसलिए वह स्वयं समझ चुके थे कि अब वह क्या आएगा।

आधी रात बीत चुकी थी। रामदास कही पर भी नजर नहीं आ रहा था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर अचानक ही मेरी नजर रामदास पर पड़ गई। रामदास आया तो था पर बहुत देर के बाद आया था। सफेद पैन्ट, सफेद शर्ट पहने रामदास दीवार के सहारे खड़ा होकर रंजना को एकटक देख रहा था। रंजना के पास जाने की उसकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी। जहां वह कभी रंजना के साथ अकेला बैठता था वहां आज न जाने कितने लोग रंजना को घेर कर बैठे हुए थे। इतने जमघट में रंजना को कौन सूचित करेगा कि रामदास आ चुका है और दीवार के सहारे खड़ा है। परन्तु पलक झपकते ही रंजना की नज़र रामदास पर पड़ गई। वे दोनो एक दूसरे को देख रहे थे। रंजना ने जैसे ही नजर उठाई लड़कियां भी उसे देखने लगीं।

60

रंजना रामदास को टकटकी बांधे देख रही थी। आदित्य कभी रंजना की ओर तो कभी रामदास की तरफ तो कभी मेरी तरफ आश्चर्य से देख रहे थे। लड़कियां बहुत देर तक रंजना को घेर कर अठखेलियां, हंसी ठिठोली करती रहीं। परन्तु अब वे चुप हो गई थीं। रंजना के मन में कितना अन्तर्द्वन्द्व मचा था इसका अब सबको अन्दाजा लग गया था। संभवतः ऐसा सोचना या कल्पना करना कठिन काम था। शायद इसका कुछ-कुछ अनुमान रंजना की मां को था। इसलिए उन्होंने बार-बार मुझे यही कहा कि मैं दुल्हा-दुल्हन के आस-पास ही रहूं और मैं यही करता आ रहा था।

थोड़ी देर में एक लड़की मेरे पास आई और कहने लगी - "अध्यापक साहब, आपको दुल्हन जी बुला रही हैं।"

मैं उसके पास पहुंचा। वह कहने लगी - "सर! रामदास आए हैं। उन्हें मेरे पास आने को कहिएगा। या फिर आप उन्हें लेकर आइए।"

रंजना के कथन में किसी प्रकार की घबराहट नहीं थी। परन्तु संयम एवं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निडरता के अंश उसके चेहरे पर साफ झलक रहे थे। उसका मुर्झाया हुआ चेहरा एकदम खिल उठा था। आज रामदास भी मुझे बहुत सुन्दर दिखाई दे रहा था। वह और दिनों से आज प्रफुल्लित मुद्रा में दिखाई दे रहा था। आज वह पहली बार सोने की दो-दो चैने गले में डाले था। दो अंगुठियां भी उसने पहन रखी थी। मैं रामदास का हाथ पकड़ कर उसे रंजना के पास ले गया। रंजना ने देखा और अपने पास बैठी दो लड़कियों को खड़े करके जगह खाली करवाई। रामदास उसी स्थान पर बैठ गया।

सभी लड़के-लड़कियां रामदास को गौर से देख रहे थे। लड़कियों ने इसका भेद तुरन्त ताड़ लिया। क्योंकि दुल्हन के चेहरे पर हंसी की मुस्कुराहट छाने लगी थी। उसका कब से मुर्झाया हुआ चेहरा खिल उठा था। उसकी नजर बार-बार रामदास के शर्ट पर जा रही थी जिसका ऊपर का एक बटन खुला था। वह बोली - "शर्ट का बटन क्यों खुला है।" फिर वह स्वयं ही उस शर्ट के बटन को लगाने के लिए हाथ बढ़ाने लगी। इसके पहले ही रामदास स्वयं बटन लगाने लगा। आदित्य को यह सब देखकर अच्छा नहीं लग रहा था पर वे विवश भी थे।

कुछ कह भी नहीं सकते थे। वे उठकर खड़े हो गए। उनको खड़ा होते देख लड़कियां बोली - "भैय्या कहां जा रहे हो? बैठ जाओ न। अब तो और मजा आ रहा है। आप दोनो को हम प्रश्न करेंगे।" लड़कियों ने आदित्य जी को जबरदस्ती बिठा लिया। मैं भी आदित्य के साथ बैठ गया।

मैं उनके मन की बात तो समझ गया था। उन्हें शक होना स्वाभाविक था। फिर भी वे सन्तोष रखे हुए थे। यह उनकी चतुराई थी। वे खुश थे। रंजना को पाने की अपनी बहुत बड़ी जीत समझ रहे थे। पर अपनी धर्मपत्नी के साथ और वह भी दुल्हन के रूप में किसी नव-युवक के साथ आपसी बातचीत करते हुए देखा जाना आदित्य जी को अच्छा नहीं लग रहा था। उनके हाव-भाव से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनके मन में जलन सी हो रही है।

उधर रामदास शायद यह सोच रहा होगा कि आदित्य बहुत भाग्यशाली है। रंजना जैसी दुल्हन पाकर कौन सा व्यक्ति होगा जो स्वयं को भाग्यशाली नहीं समझेगा। वैसे भी रामदास सादगी प्रिय लग रहा था। आज वह इस बात को अनुभव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर रहा था कि जीवन में सब कुछ हार गए हैं। आदित्य भाग्यशाली है। रंजना रामदास की दुल्हन थी पर उसके लिए भाग्यविधाता का प्रकोप कि वह आदित्य की दुल्हन बन गई थी।

इतना सब कुछ होने के पश्चात भी रामदास ने रंजना का साथ नहीं छोड़ा था। वह भी रंजना के साथ आनंद से बैठा था। रंजना व रामदास का वार्तालाप सुनने में आ रहा था। रंजना रामदास को पूछने लगी - "आपने खाना नहीं खाया होगा? दो दिन से कहां चले गए थे आप? कुछ तो सोच लेते। मुझे कितनी चिन्ता लगी थी।"

रामदास उत्तर देने लगा - "कैसे आऊं? किसके पास आऊं? आप को तो सबने घेर रखा था। मैं जब भी आया, देखकर लौट गया। इसी बीच एक लड़की द्वारा रंजना ने शरबत मंगवाया। वह लड़की गई और ग्लास भर कर शरबत ले आई। उसने ग्लास को दुल्हन को दिया। दुल्हन ने रामदास को दिया। रामदास धीरे-धीरे पीने लगा। आधा ग्लास पीने के बाद वही ग्लास रामदास ने रंजना को दे दिया। रंजना उस ग्लास में बचा हुआ शरबत एक ही घूंट में पी गई।

आदित्य कभी उस ग्लास को, कभी रामदास को तो कभी रंजना को दखने लगे। यह सब देखकर उनके मन में आग लग रही थी। पर वे प्रकट नहीं होने दे रहे थे। इस दृश्य को सभी ने गौर से देखा। सभी सोच रहे थे कि दुल्हन का इस नवयुवक के साथ क्या रिश्ता हो सकता है?

अचानक रंजना की मां आई और रामदास से बोली - "बेटे! आपने भोजन नहीं किया होगा? चलो, आप भोजन कर लो।" रामदास कोई जवाब दे पाता कि रंजना स्वयं बोली - "हम आ रहे हैं मां, सर इन्हें साथ लेकर आ रहे हैं।"

रामदास के साथ दुल्हन का खास व्यवहार देखकर एक लड़की बोली - "दुल्हन जी इनका परिचय तो करवाइए, क्या रिश्ता है इनका?"

दूसरी लड़की बोली - "बहुत मूल्यवान रिश्ता है। तभी तो दुल्हे से अधिक इनको सम्मान दिया जा रहा है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

61

आदित्य के मित्र भी रामदास और रंजना की ओर आश्चर्यचकित निगाहों से देख रहे थे। अन्ततः एक मित्र पूछ ही बैठा - "आदित्य यह हम क्या देख रहे हैं?" आदित्य ने कोई उत्तर नहीं दिया।

मंडप में गर्मी बहुत हो रही थी, पर पंखे भी बहुत चल रहे थे। एक पंखे की हवा रंजना तक पहुंचती थी और वहां से पंखा लौट आता था। रामदास तक हवा नहीं पहुंच पा रही थी। इसलिए रामदास पसीना-पसीना हो रहा था। वह अपनी पैन्ट की जेब में रुमाल ढूंढने लगा। पर उसके जेब में शायद रुमाल नहीं था। रंजना यह सब देख रही थी। उसने अपनी बनारसी साड़ी का पल्लू बढ़ाया।

रामदास ने साड़ी का छोर पकड़कर अपने माथे का पसीना साफ किया। आदित्य व्याकुलता से देख रहे थे। वे सोच रहे थे कि यह कैसी विडम्बना है कि जिस युवती से उनका विवाह हो रहा है वह अन्य किसी युवक के साथ मन पूर्वक प्रेम का आदान-प्रदान कर रही है। उधर लाऊडस्पीकर पर ऐसा एक फिल्मी गीत सुनने को आ रहा था जो रंजना के जीवन से जुड़ा हुआ था। रंजना ने आदेश देकर उस गाने को बंद कराया था। पश्चात् शहनाई की धुन बजने लगी।

उसी समय एक महिला लड्डू से भरा एक परात ले आई वह विवाह के उपलक्ष्य में मुंह मीठा करने का विशेष प्रसाद था। दो चार महिलाएं साथ ले आई और उनमें से एक ने घोषणा की - "सभी लोग नजदीक आ जाओ दुल्हा-दुल्हन एक दूसरे को लड्डु खिलाएंगे।"

इस मनोरंजनात्मक प्रसंग से सब में खुशी की लहर दौड़ आई। वे तालिया बजाने लगे। फिर एक महिला ने दुल्हा-दुल्हन को कहा कि इस परात में से एक-एक लड्डु उठाकर दुल्हन को दुल्हे का नाम लेकर यह लड्डु अपने हाथ से खिलाना है। इसी तरह दुल्हा भी दुल्हन का नाम लेकर लड्डु खिलाएगा। यह एक परीक्षा का सवाल था। इस में रंजना की मर्जी कितनी है इस सत्य की परीक्षा की जा रही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक शरारती लड़की ने कहा - "ऐसा क्यों चाची? यदि दुल्हन की मर्जी लड्डु खिलाने की नहीं हुई तो क्या अपराध माना जाएगा?"

चाची बोली - "अरे पगली, अब मर्जी कहां रही।"

दुल्हे को दुल्हन के करीब बुलाया गया। वे खुशी-खुशी उसके पास आकर बैठ गए। रंजना के सामने लड्डु की परात बढ़ाकर उसे एक लडडु उठाकर दुल्हेजी को खिलाने को कहा गया। बड़ी मुश्किल से वह लड्डु रंजना ने आदित्य के मुंह तक बढ़ाया। वे लड्डु खाने लगे। सबने तालियां बजाई।

आदित्य जी बोले - "मेरी पत्नी रंजना इसी तरह रोज मुझे लड्डु खिलाती रहे।" फिर एक बार सबने शोर मचाकर तालियां बजाई। रंजना के आंखों में आंसू आ गए। फिर दुल्हे का नम्बर आया। लड़कियां बोली - "भइया, अब आप भाभी को तो खिलाइए।"

आदित्य ने एक लड्डु उठाया और रंजना के होंठो तक ले गए। रंजना ने वह लड्डु अपने हाथ में लिया, जब कि दुल्हे साहब रंजना के मुंह की तरफ बढ़ा रहे थे।

लड़कियां बोली - "भाभीजी, यह कोई बात नहीं हुई।" पर रंजना ने किसी की नहीं मानी। उस लड्डु में से थोड़ा सा टुकड़ा मुंह में रखकर बाकी का हिस्सा पास बैठी लड़की को थमाकर वह खड़ी हो गई।

लड़कियां बोली - "भाभीजी, आप कहां जा रही हैं? अभी तो आप से बहुत बातें करनी हैं।" रंजना ने किसी की नहीं मानी। जब वह खड़ी हो गई तो साथ-साथ रामदास भी खड़ा हो गया तथा वह बोला - "रंजना अब मुझे चलना चाहिए।"

रंजना बोली - "नहीं, क्यों खाना नहीं खाओगे? आओ चलते हैं।" और वे दोनो तथा दो चार लड़कियां रंजना ने अपने साथ ली और वे मंडप से भोजन कक्ष की तरफ चले गए।

मैं और आदित्य साथ-साथ उठकर खड़े हो गए। आदित्य मुझसे कहने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लगे - "सर, रंजना को थोड़ी देर के लिए रोक लेते। क्योंकि मैं अपने मित्रों से उनका परिचय करवाना चाहता था।"

मैने उनसे कहा - "देखिए आदित्य जी। रंजना अब आपकी पत्नी है। आप स्वयं उससे बातचीत करे। जरूरत पड़ने पर आपको आदेश भी देना होगा। अब वह देखिए, भोजन करने गई है। भोजन की थालियां सजाई जा रही होंगी। उसके पहले ही उससे मिलकर अपने विचार रखें।"

पर वे कुछ घबराएं से लगने लगे। मैने कहा - "चलिए, मैं आप के साथ चलता हूं।" हम दोनों रंजना के पास पहुंच गये। वह अपनी मां के पास खड़ी होकर बातचीत कर रही थी। रामदास लड़कियों के साथ वार्तालाप कर रहा था। आदित्य ने रंजना का नाम लेकर उससे कुछ पूछना चाहा। इस घबराहट में वह एक भूल कर बैठे। वे रंजना के कन्धे पर हाथ रखकर बात करने लगे। वह कुछ कहने जा रहे थे कि रंजना ने क्रोधित होकर कहा - "पहले तो आप अपना हाथ मेरे कंधे से हटाइए।" वह आगे बोली - "ऐसी हरकते अच्छी नहीं हैं। यह भी ध्यान रखा करें कि मेरे साथ कौन कैसे खड़े है।" रंजना की मां स्तब्ध होकर अपनी बेटी के क्रोध भरे स्वर सुन रही थी।

62

रंजना का क्रोध सुनकर आदित्य थोड़ा पीछे हट गये। मां ने कहा - "बेटी कोई बात नहीं, ऐसा गुस्सा न करो।"

रंजना बोली - "नहीं मां! मैं ठीक कह रही हूं। पता नहीं इनके संस्कार क्या हैं। पीछे-पीछे भागे चले आ रहे हैं।"

आदित्य रंजना का गुस्सा मनपूर्वक सुन रहे थे। वे शांत हो गये। उनकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी कि क्या कहें। रंजना ने आगे अपना गुस्सा भरा वार्तालाप जारी रखा। कहने लगी - "आप को अपने लिए या आप के मेहमानो की खातिरदारी की कोई शिकायत या समस्या हो तो पिताजी से कहें। साथ-साथ मेरी मर्जी, मेरा मान-सम्मान का भी ध्यान रखें। पत्नी का अर्थ यह तो नहीं कि मेरी इच्छा-अनिच्छा का कोई महत्व ही नहीं है।"

आदित्य का मुंह और छोटा हो गया। यह देखकर रंजना की मां बोली - "बस, बस बेटी, चुप रहो। ऐसा गुस्सा नहीं करते।"

मैं आदित्य को वहां से ले आया। अच्छा हुआ हम चारो के अलावा वहां और कोई नहीं था।

काफी देर मैं आदित्य से बाते करता रहा, उन्हें समझाता रहा। अन्त में उन्होंने संक्षिप्त शब्दों में कहा - "सर, यह तो मेरे साथ सरासर अन्याय है। इस अन्याय को स्वीकार करना मैं अपनी हार समझता हूं।"

मैंने उन्हें समझाते हुए कहा - "चिन्ता न करो आदित्य जी। सब ठीक हो जाएगा। इतनी सुन्दर व शालीन लड़की को पाकर आपको खुश हो जाना चाहिए। धीरे-धीरे जब आप दोनो साथ रहकर एक दूसरे को समझ जाओगे तो यह वाद-विवाद समाप्त हो जायेगा और हंसने लगोगे।"

आदित्य की बुद्धि में मेरी बातें बैठ रही थी। पर भविष्य में रंजना के आगे उनकी कितनी चल पायेगी इसका अनुमान लगाना असंभव था।

विवाद समाप्त हुआ। रामदास रंजना तथा अन्य मित्र भोजन करने लगे। रात्री के दो बज रहे थे। रामदास कब चला गया यह मुझे पता नहीं चला। विवाह की शेष विधियां पूरी हो रही थी। पता चला रंजना अपने कक्ष में मां की गोद में सिर रखकर रो रही है। रंजना को दुखों का सामना करना पड़ रहा है, ऐसा प्रतीत हो रहा था। परन्तु अब वह विवाह के उपलक्ष्य में ही रो रही हो ऐसा समझा जा सकता था।

रामदास तो अब उसके जीवन से कोसो दूर चला गया था। पर उसकी यादें कभी रंजना भूल नहीं सकती यह निश्चित था। रामदास भोजन करके गया होगा, उस समय रंजना के साथ क्या बातचीत हुई होगी? इसका भी दुख रंजना को होगा।

दुल्हा-दुल्हन दोनो तरफ के मेहमान मंडप में बैठे थे। पण्डित जी बार-बार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुल्हन को लाने का अनुरोध कर रहे थे, क्योंकि विवाह की अन्तिम विधि सम्पन्न होने जा रही थी। बड़ी मुश्किल से दो चार महिलाएं दुल्हन को अपने साथ ले आई।

दुल्हन के आते ही मंडप में शान्ति छा गई। सबकी नजरें दुल्हन पर टिक गई। पूजा आरम्भ हुई। सात फेरों का कार्य शुरू हुआ कन्यादान हुआ। और लगभग सवेरे चार बजे विवाह की सारी रस्में पूरी हो गई। रंजना और आदित्य का विवाह सम्पन्न हुआ। 'रंजना-आदित्य' पति-पत्नी बनकर अपने रिश्तेदारों के पैर छूने लगे। इसी बीच रंजना थोड़ी घबरा गई। उसने अपने पति से कहा - "मेरे लिए पीने का पानी मंगवाइए।" आदित्य चौक पड़े। साथ में खड़ी एक लड़की से उन्होंने पानी लाने का इशारा किया। वह दौड़ती हुई गई और पानी ले आई। आदित्य ने पानी का गिलास लड़की के हाथ से लिया और रंजना की तरफ बढ़ाया। रंजना ने एक ही सांस में ग्लास खाली कर दिया।

आदित्य फूले न समाए। इस सुअवसर का लाभ उठाते हुए रंजना से बातचीत का सिलसिला बढ़ाने लगे। इसके उन्हें मनपूर्वक उत्तर मिलने लगे। उत्साहित होकर आदित्य ने कहा - "मुझसे कोई गलती हुई हो तो उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं।" रंजना ने कोई जवाब नहीं दिया। उन दोनो का पति-पत्नी द्वारा पैर छूने का कार्यक्रम भी समाप्त हो गया। तत्पश्चात् वे एक साथ पण्डित जी के सामने बैठ गए।

रंजना की मां ने दुल्हे के पक्ष की दो प्रमुख महिलाओं को बुलाकर उनके कानों में कुछ कहा। उन्होंने चन्द्रग्रहण के सम्बन्ध में सूचनाएं देनी थी। बोली - "क्या आप को पण्डित जी ने चन्द्रग्रहण के बारे में कुछ बताया है?" परन्तु इस विषय की उन्हें कोई जानकारी नहीं थी।

चन्द्रग्रहण की बात यह थी कि विवाह के होते ही चन्द्रग्रहण लगने वाला था। उसकी अवधि साढ़े चार घन्टों की थी। चन्द्रग्रहण के बाद पन्द्रह दिनो तक दुल्हा-दुल्हन का मिलन वर्जित था। पण्डित जी ने वर-वधु दोनो पक्षो के प्रमुख व्यक्तियों को बता दिया था। इसकी जानकारी रंजना की मां उन महिलों को दे रही थी। उन महिलाओं ने इस सत्य को स्वीकार कर वर-वधु को सूचित किया जायेगा, ऐसा आशय व्यक्त किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सवेरा होते ही विवाह की सारी गतिविधियां समाप्त हो गई।

63

रंजना नन्ही बालिका की तरह महिलाओं के बीच में बैठकर रो रही थी। उस समय उसकी सभी सम्बन्धि महिलाएं रिश्तेदार बैठी थी। उसे कभी कोई गले लगाता, कभी कोई। और उसके मुंह से रोते-रोते यही निकल रहा था - "मेरी मां की देखभाल कौन करेगा। मेरे पिताजी बेटी-बेटी कहकर किसको पुकारेंगे।"

सभी महिलाएं रंजना को दिलासा दे रही थी। उसे समझा रही थी। रंजना की मां भी उसे बार-बार खींचकर अपने सीने से लगा रही थी। उसका भी मन बेटी को विदा करने के पहले तड़प-तड़प रहा था।

उधर रंजना के पिता का कठोर मन व्याकुल हो उठा था। वे दीवार के सहारे खड़े होकर छुप-छुप कर रो रहे थे। इसलिए कि उनके रोने की खबर किसी सज्जन द्वारा उनकी बेटी तक न पहुंचे।

रिश्तेदार एवं सभी सम्बन्धियों की आंखे नम थीं। और इन्हीं मन आंखों से रंजना को डोली में बिठाने की तैयारी करने लगे। रंजना समझदार लड़की थी। उसे अपने घर से बहुत अच्छे संस्कार मिले थे। वह स्वयं ही रोना बंद करके अपने पिताजी को ढूंढने निकली। पर इतने में ही उसके पिताजी उसी के सामने खड़े हो गये। वह अपने पिता के गले लगने लगी और बड़ी शान्ति से बोली - "पिताजी! मां का ध्यान रखियेगा।" मां को डांट-डपट नहीं करियेगा। मेरी चिन्ता मत करियेगा, मेरी तरफ से आप को हमेशा शुभ समाचार मिलते रहेंगे।

रंजना के साथ दुल्हे भी खड़े थे। वे भी अपने ससुरजी के गले मिले। रंजना फिर अपनी मां की गर्दन पर सिर रखकर उन्हें सांत्वना देने लगी - "मां! मैं बहुत खुश रहूंगी। मेरी फिकर मत करन मां। पिताजी के खाने-पीने की समय पर व्यवस्था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करते रहना।"

मां ने बस इतना ही कहा - "हमारी चिन्ता मत कर बेटी। तुम अपने घर सुखी रहो।" उसके बाद रंजना ने अपनी कोठी के प्रमुख दरवाजे पर सिर रख लिया। इसी कोठी में उसका जन्म हुआ था, इसी कोठी में उसका बचपन बिता था। इसी कोठी में वह जवान हुई थी और इसी कोठी से रंजना दुल्हन बनकर ससुराल जा रही थी।

तत्पश्चात् उसने अपने मातृस्थान तड़ेगांव दशासर की मिट्टी अपने हाथों में ली और उसे दो-चार बार चूम लिया। संभवतः वह उस मिट्टी से कह रही थी कि 'धरती मां, आज तुम्हारी रंजना दुल्हन बनकर ससुराल जा रही है। बहुत दूर जा रही है। धरती मां, मुझे बुलाते रहना। मैं अपने जन्म स्थान को कभी भूल नहीं सकती। परन्तु मुझसे यदि कोई भूल-चूक हुई हो, उन्हें क्षमा कर देना।

रंजना के पीछे उसके माता-पिता, रिश्तेदार एवं सम्बन्धित बाराती खड़े थे। पर वह पीछे मुड़कर देखना नहीं चाह रही थी। क्योंकि उसके सामने डोली खड़ी थी और उस डोली में दुल्हा-दुल्हन के बैठने की प्रतीक्षा में कहार खड़े थे।

तत्पश्चात उसने अपने पति से कहा - "सर कही दिखाई दे रहे है? सर को देखिए, कहां है सर!" वह मुझसे मिलना चाहती थी। मैं रंजना का अध्यापक, जिसने उसके मन को तोड़कर रख दिया था। मैं जिसने रंनजा की भावनाओं को कुचल कर रख दिया था। मैं जिसने रंजना के पवित्र प्रेम का हमेशा खण्डन किया था तथा उसके जीवन की वस्तुस्थिति को चकानाचूर किया था।

मैं दुल्हे के ही पीछे खड़ा था। आदित्य की नजर मुझ पर पड़ी और वे मुझे रंजना के सामने खड़ा करते हुए बोले - "अध्यापकजी अन्तिम आशिर्वाद दीजिए।" वे मेरे पैर छूने लगे। पश्चात रंजना भी मेरे पैर छूने लगी। मैं उन दोनो दुल्हा-दुल्हन को डोली की तरफ ले जाने लगा। डोली सामने तैयार थी। डोली में बैठने से पहले रंजना ने कहा - "सर! आप से हमने बहुत कुछ सिखा, आपसे बहुत कुछ पाया। यदि आप की इस ग्रामीण छात्रा से कोई गलती हुई हो उसके लिए क्षमा कर दीजिए।"

मैंने कहा - "रंजना तुम महान हो! तुम मेरे लिए प्रेरणा हो! भविष्य में मेरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन में बहुत छात्राएं आयेंगी। परन्तु उन में कभीं रंजना नहीं हो सकती। एक शिक्षक के कार्य पर तुम्हारी बहुत बड़ी छाप पड़ गई है, यह कभी मिट नहीं सकती।"

मेरे इतना कहते ही फिर एक बार वह मेरे पैर छूने लगी। पर अब उसकी आंखे बहने लगी। उन बहते हुए आंसुओं को साफ करते हुए बोली - "सर!"

मैंने कहा - "हां! बोलो! रंजना . . . ।"

वह कहने लगी - "सर! रामदास से कहियेगा कि वह मुझे क्षमा करे! मुझ पर दया करे। मीर विवशता को समझने का प्रयास करे। मेरी तरफ से कहिएगा और मेरे पतिदेव जी की ओर से कहिएगा। और एक बात ज़रूर कहिएगा।"

उसकी आंखे लगातार बरस रही थीं। हिचकियों के बीच उसने कहा - "यसर! रामदास सें कहिएगा - "आपका आदर्श, आपका पवित्र प्रेम मुझे हमेशा इस जन्म स्थान की याद दिलाता रहेगा।" इतना कहते हुए वह फूट-फूट कर रोने लगी।

मैंने उसे शांत किया। उसे अपने आंसुओ को रोकने के लिए कहा। वह ऐसा ही करने लगी। तत्क्षण वह डोली में बैठ गई। पीछे-पीछे दुल्हे साहब भी डोली में बैठ गए। बैन्ड बाजे बजने लगे और कहारो ने डोली की करो पर उठा लिया।

64

बैन्ड बाजे के साथ-साथ डोली आगे बढ़ने लगी। साथ-साथ बाराती चल रहे थे। एवं साथ-साथ रंजना को अश्रुपूर्ण विदाई दे रहे थे। रंजना तो डोली में बैठकर अपने ससुराल जा रही थी। पर अपने पीछे सारी स्मृतियां मेरे लिए तथा अपने रामदास के लिए छोड़कर जा रही थी।

मैं एक साधारण शिक्षक, जिसका कोई सम्बन्ध नहीं, जिसका कोई रिश्ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं, फिर भी रंजना और उसके परिवार ने अपार सम्मान दिया। इसलिये मैं एक शिक्षक होने के नाते अपने-आप को धन्य समझ रहा था।

बैंड बाजे के साथ रंजना की डोली बालाजी मंदिर के परिसर में गई जहां कलकत्तावासियों के लिए ठ हरने का प्रबन्ध किया गया था। दुल्हे के पिता ने दहेज में सम्मान स्वरूप मिला सामान पहले ही ट्रक द्वारा धामणगांव के रेलवे माल गोदाम पर भेज दिया था तथा दो घन्टे के भीतर सबने ही रेलवे स्टेशन पहुंचना था। सभी के टिकट आरक्षित हो चुके थे। इसलिए सबको दुल्हन को साथ ले चलने की जल्दबाजी हो रही थी।

ग्यारह बजे सबकी लाड़ली रंजना बारातियों के साथ बस में बैठकर तड़ेगांव से धामणगांव रेलवे स्टेशन के लिए रवना हो गई। बारातियों से बालाजी मंदिर का परिसर खाली होते ही तड़ेगांव दशासर की रौनक क्षणभर में ही समाप्त हो गई। इसी के साथ-साथ बाबुल के घर में शान्ति छाई हुई थी। रंजना को विदा कर जब हम घर लौटे तो रंजना की मां रो-रोकर अस्वस्थ हो गई थी। पर उन्हें संभाल लिया गया। वह बार-बार यही कह रही थी - "बेटी रंजना! बेटी रंजना।"

विवाह के पश्चात् एवं रंजना के चले जाने से सेठजी का घर खाली-खाली हो गया था। आंगन में दीवार के सहारे तुलसी के पेड़ की पूजा करने वाली रंजना दूर कलकत्ता चली गई थी। अब वह रंजना कभी नहीं आयेगी जो प्रतिदिन सवेरे उठकर उस तुलसी के वृक्ष की पूजा करती थी। अब वह तुलसी की टहनियां भी वीरान सी दिखाई दे रही थीं।

सेठजी मेरे पास आए और बोले - "अध्यापक जी! बहुत-बहुत धन्यवाद आपका। आपने बहुत साथ दिया। हमारी बेटी बहुत जिद्दी थी। वह आपके ही काबू में आ गई। अब आप कही जायेंगे नहीं भोजन करके जाइएगा।"

मैंने उनसे अनुमति ली - "मैं अपने कक्ष से नहाकर आता हूं।" वे बोले - "जैसा आप चाहेंगे।"

मैं वहां से अपने कक्ष पर जाकर नहाने लगा तो मुझे एकदम रामदास की याद आ गयी। इस समय वह कैसा होगा। वह रंजना के विदाई के समय क्यों नही पहुंचा? रंजना के चले जाने के शोक में उसकी क्या दशा रही होगी? अनेक प्रश्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे सामने खड़े हुए। नहाकर तुरन्त ही मैंने कपड़े पहने और उसके घर की तरफ भागा। रामदास अपने कमरे में लेआ हुआ था। मांथे पर उसने कपड़ा बांध रखा था। उस कपड़े को देखकर मं घबरा गया। ऐसा न हो कि रामदास ने अपने शरीर को कोई क्षति पहुंचा ली हो। रामदास को आवाज देकर मैं उसे जगाने लगा। वह 'जी सर' कहकर उठ तो गया परन्तु बहुत सुस्त दिखाई दे रहा था। उसे तेज बुखार भी था।

मैंने कहा - "रामदास तुम्हें कितना तेज बुखार है? उठो, चलो डाक्टर के पास।" वह बोला - "ठीक है सर! बुखार उतर जायेगा अपने आप। ठंडा-गरम खाने से ऐसा हुआ है। मैं बिल्कुल ठीक हूं।"

वह उठकर बैठ गया। एक नौकर द्वारा मेरा आदर-सम्मान हो ही रहा था। पीने का पानी, चाय वगैरा-वगैरा। रामदास वार्तालाप करते हुए बोला - "अब अच्छा नहीं लग रहा है। पिछले दस महीनों का समय मेरे जीवन में सुवर्ण अक्षरों से लिखा था। पर उसका समापन दुखान्त होगा ऐसी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी।"

मैंने कहा - "चिन्ता न करो रामदास, जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम मिलते हैं। पर सामाजिक बन्धनों के कारण तुम्हें पीछे हटना पड़ा। किन्तु रंजना तुम्हें कभी भूल नहीं सकती है। विदाई के समय तुम्हें बहुत याद कर रही थी। अन्ततः उसने तुम्हारा आभार व्यक्त किया है। तुम्हें यह बताने को कहा है कि वह तुम्हार आदर्श हमेशा याद रखेगी और वह तुमसे क्षमा भी मांग रही थी। वह तुम्हे बहुत याद कर रही थी।"

मेरे इतना कहते ही रामदास का हृदय भर आया और उसकी आंखों से मोतियों की तरह आंसू टपक पड़े। वह उन आंसुओं को रोकने का प्रयास कर रहा था।

इस विषय पर मैंने चर्चा नहीं करनी थी। पर यही विषय रामदास के लिए सशक्त माध्यम था। इस विषय पर चर्चा करने से उसके मन में जो कुछ भी उभार हो, उसका उतार-चढ़ाव बाहर निकल कर आ जायेगा।

रामदास शान्त हुआ। पानी पिया। फिर वह कहने लगा - "रंजना ने स्वाभाविक दृष्टि से विवाह क़ार्य को पूरा किया। यही उसकी सभ्यता थी। मैं उसके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहने में आकर हम दोनो का जीवन क्षतिग्रस्त हो यह नहीं चाहता था। कभी एक समय मैं गांव में बदनाम व आवारा लड़का घोषित था। पर धीरे-धीरे मुझे आदर्शवादी कहकर सम्बोधित किया जा रहा था यही मेरे जीवन में सब से बड़ा बदलाव था। इस छवि को मैं धूमिल नहीं करना चाहता था।"

"यही आदर्श तुम्हारे काम आ रहा है रामदास। इसी आदर्श की रंजना पूजा कर रही थी।"

65

समय का मूल्य समझते हुए मैं और थोड़ी देर तक रामदास से वार्तालाप करता रहा। इसी बीच रामदास ने अपने मन की इच्छा प्रकट की जो उसे चुभ रही थी। बातो-बातो में वह बोला - "सर! अब इस गांव में मेरा मन नहीं लग रहा है। ऐसा लगता है कि कहीं दूर निकल कर चले जाए। और भविष्य में इतना किसी से प्रेम न हो जो बिछड़ने के बाद दिल टूट जाए। ऐसा स्थान मैं ढूंढ रहा हूं जहां पर रहने से न किसी की जान पहचान बढ़ेगी और न ही जुदाई का गम सहना पड़े।"

मैंने उसे समझाते हुए कहा - "ऐसा मत सोचो रामदास! अब गांव में आप की छवि सुधरती जा रही है। गांव के लोग अब तुम्हें सम्मान से देख रहे हैं। जीवन में हमेशा संघर्ष है। जिनके विचारों में उपलब्धियां हासिल करने की क्षमता होती है उन लोगो का हौसला बुलन्द होता है। आप उन्हीं लोगों में से हो रामदास।"

रामदास मात्र सुनता रहा। मौका देखकर मैने उससे पूछा - "अब मैं चलू रामदास। मुझे रंजना के ही घर जाना है। शायद मेरी प्रतीक्षा कही जा रही होगी।"

"ठीक है सर! आप तो रंजना के पारिवारिक सदस्य बन चुके है।"

"जैसा आप सोचो रामदास! पर मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं एक अध्यापक होने के नाते किसी परिवार के साथ जुड़ जाना मेरे लिए विश्वास की बात है। और यही मैं करते आया हूं। और एक बात शायद तुम्हें पता नहीं होगी रंजना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के बारे में?"

रंजना का नाम लेते ही वह चौक पड़ा और फूर्ति से खड़ा होकर आश्चर्य से पूछने लगा - "कौन सी बात सर?"

मैंने कहा - "रंजना दो दिन में ही कलकत्ता ससे लौटकर आनेवाली है।"

"क्या कह रहे हैं सर आप?" वह उत्सुकता से देखते हुए पूछने लगा। आगे वह अपने विचार व्यक्त करते हुए बोला - "रंजना दो दिन में वापस क्यों आ सकती है सर! उसे अब कौन आने देगा। जब तक वह घर-संसार की शुरूआत नहीं करेगी तब वह कैसे आ सकती है?"

मैंने कहा - "अब वह आने ही वाली है। चन्द्रग्रहण लगने वाला है। इसलिए वह नवविवाहिता के रूप में अपने घर की छत के नीचे रूक नहीं सकती है। आगे पन्द्रह दिनो तक पण्डित जी ने वर-वधु के मिलन को अशुभ मानकर रोक लिया है। इसी कारण वह अपने मायके लौट रही है। शायद उसकी इस समय ट्रेन में बैठने की व्यवस्था चल रही होगी।"

मेरी बात सुनकर रामदास का तनावपूर्ण उदास चेहरा प्रफुल्लित हो गया। उसी उत्साह से वह बोला - "कितनी खुशी की खबर दी है आपने। मेरा तो बुखार हअी उतर गया है सर!"

रामदास फिर स्मृतियों की दुनिया में गोता लगाने लगा। आगे वह बोला - "सर! कल मैं अपने मामा के गांव जा रहा हूं। बहु जरूरी काम है। एक दिन में ही लौट आऊंगा।"

मैंने उसे समझाते हुए कहा - "अभी कहीं मत जाओ रामदास। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नही है। दो दिन आराम करो।"

वह बोला - "फिर मैं नहीं जा पाऊंगा सर। अगले महीने मामा की लड़की का विवाह है। मुझे दस क्विन्टल गेहूं, दो क्विन्टल दाल और कुछ नगद राशि मामा के गांव पहुंचानी है। अपितु वे मेरी प्रतीक्षा करते रहेंगे।"

मैंने कहा - "ठीक है। आप की यह समस्या नहीं है अपितु जिम्मेदारी का प्रश्न है। जाओ और तुरन्त लौट आओ। रंजना अपने मायके आने के बाद सबसे पहले यही पूछेगी, रामदास कहां है?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामदास बोला - "ठीक है सर।" उसके बाद मैं वहां से रंजना के घर आया। वहां वास्तव में मेरा इन्तज़ार किया जा रहा था। अतिथि एवं गांव के लोग भोजन कर रहे थे। वह भोजन विवाह के समापन के उपलक्ष्य में था और फिर उसके बाद मेहमान लोग अपने-अपने गांव या शहर के लिए प्रस्थान करने वाले थे। मैं और सेठ जी तथा अन्य खास-खास अतिथि भोजन करने बैठ गये।

भोजन के बाद फिर सेठजी मुझे अलग कक्ष में ले गये और विवाह के विषय पर समीक्षा करने लगे। समीक्षा में यही रहा कि विवाह अपेक्षा से अधिक सुन्दर एवं भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। लड़की विवाह के लिए क्यों मना कर रही थी इस कारण वे यही मान रहे थे कि कलकत्ता बहुत दूर है तथा इतने जल्दी विवाह की बाते क्यों की जा रही हैं जबकि उसके माता-पिता अकेले रह जायेंगे।"

सेठजी को धन की कोई कमी नहीं थी। उन्हें लगा कि दहेज के लिए नोटो की गड्डियां दुल्हे के सामने रखनी पड़ेंगी। किन्तु रंजना की सुन्दरता उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व देखकर लड़के वाले ही अपने आप बहुत खुश थे और सेठजी को जगह-जगह धन खर्चे करने के लिये रोकरकर अपना ही धन खर्च कर रहे थे।

सेठजी के साथ मेरी एक घन्टा बातचीत होती रही। परन्तु पूरे घन्टे के वार्तालाप में रामदास नाम का शब्द एक बार भी नहीं आया। न ही रंजना-रामदास के प्रेम सम्बन्धो के जिक्र हुआ। इसके दो कारण हो सकते थे - पहली बात यह की यदि सेठजी उन दोनो के प्रेम प्रसंगों पर विश्वास कर रहे हैं तो इसे बात-बात पर उजागर करना नहीं चाहते थे। या फिर उनको इस विषय बिल्कुल जानकारी नहीं है।

66

शाम के समय सेठजी के घर से मैं अपने निवास स्थान आ गया और सो गया। दो-तीन दिन की थकान जो थी वह विश्राम में ही बदल गई। मुझे बहुत अच्छी नींद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आई। रात को उठा तो मैं सूनापन महसूस करने लगा। रात्रि के भोजन की कोई इच्छा तो नहीं थी परन्तु चाय पीने का मन कर रहा था। स्टोव जलाकर मैंने चाय बनाई और चुस्कियां लगाकर आंगन में टहलने लगा। मन में एक शान्ति सी लग रही थी। जिसका कारण था रंजना का विवाह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

एक प्रकार से डर बना हुआ था कि रामदास और रंजना कोई अपराध न कर बैठे। रंजना जो दिखाई दे रही थी पर वह ऐसी नहीं थी। परन्तु रामदास जो दिखाई नहीं देता था वैसा वह कुछ भी कर सकता था।

पर यह सौभाग्य की बात थी कि घर की बात घर में दबकर रह गई। अब रामदास अपने आप को हारा हुआ अनुभव कर रहा था। यह उसके कथन किए गये शब्दों से जान पड़ता था। परन्तु वह अब भी अर्थात रंजना विवाहित होने के पश्चात भी उसकी आशा कर रहा था। अब एक दूसरे के प्रति बना हुआ आकर्षण धीरे-धीरे ही समाप्त होगा। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता था। पर अब मेरा मानना यह था कि रामदास ने रंजना के प्रति अभिलाषा रखना यह उसकी भूल थी। इन दोनो ने मुझे एक प्रकार से शिक्षा दी थी कि कभी जवान लड़के-लड़कियों को एक साथ लाने का प्रयास न करो। लिखना-पढ़ना तो इनका बहाना रहेगा परन्तु अपने ही मन की ठान लेगे। जैस कि रंजना और रामदास ने भूल की थी।

इनके प्रति रात भर सोचता रहा और बाद में पलंग पर आकर सो गया। जब आंख खुली तो रामदास मेरे सामने खड़ा था और सवेरे के सात बज रहे थे। वह बोला - "सर! क्षमा कीजिए। मैंने आप को सोते से जगाया। मैं अभी अपने मामा के गांव जा रहा हूं सर। बैलगाड़ी से अनाज भेज दिया है। शायद कल शाम तक लौट आऊंगा। यदि देर हो गई तो मुझे क्षमा कर दीजिएगा।"

मैंने उसे कहा - "ठीक है रामदास, सावधानी पूर्वक जाओ। आपकी यात्रा सफल हो।" उस समय वह प्रफुल्लित लग रहा था। वैसे ही जैसे रंजना के विवाह के दिन लग रहा था। वह मेरी अनुमति लेकर जोन लगा। जाते-जाते उसने मेरे पैर छूए। वह कुछ कहना चाह रहा था शायद रंजना के प्रति ही कुछ कहना चाह रहा था, पर कह नहीं पा रहा था।

बस! उसने इतना ही कहा - "चलता हूं सर मैं। धन्यवाद।" और वह तेजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से निकल गया। रामदास के जाने के बाद मैं उठकर प्रतिदिन के कामों में लग गया। इस बजे विद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर अध्ययन करने लगा। अध्ययन मेरे जीवन की प्राथमिकता थी। अधिक से अधिक पुस्तके पढ़ना चार-चार पांच-पांच समाचार पत्रों के सम्पादकीय पढ़ना यह मेरा प्रतिदिन का काम था। समय बीत रहा था परन्तु समय में परिवर्तन आ गया था। विद्यालय में गर्मियों की छुट्टियां हो गई थी। बच्चों का विद्यालय में आना बंद हो चुका था। अध्यापक वर्ग अपना बचा हुआ काम पूरा करके प्रधानाचार्यजी की सौप रहे थे। मैंने अपना जवाबदारी का काम पूरा करके कार्यालय कौ सौप दिया था। एक सप्ताह के बाद मैं नागपुर जाने की तैयारी कर रहा था। मुझे प्रतीक्षा अगले सत्र के लिये रिन्यूवेशन की थी जिसके लिए प्रधानाचार्य जी के आदेश का इन्तजार था।

इसी तरह मैं समय काट रहा था पर अब तड़ेगांव दशासर की मिट्टी से बहुत प्रेम हो गया था। मेरा मन कर रहा था कि अब मैं इस गांव को नहीं छोडूगा। दूसरा दिन निकल गया। रंजना कलकत्ता से शाम तक आ जायेगी यह अनुमान था। फिर रामदास की भी शाम तक लौटने की आशा थी।

हम तीनो एक बार या अन्तिम बार मिलकर फिर मै नागपुर के लिए रवाना हो जाऊंगा। यह मैं सोचते हुए अपने कक्ष में कक्ष में बैठा था। गावं में रामदास और रंजना के अतिरिक्त किसी अन्य छात्र-छात्रा से मेरा कभी इतना लगाव नहीं रहा जितना इन दोनों ने मेरा मन जीत लिया था।

दोपहर के कोई दो बज रहे थे। धूप इतनी तेज थी कि कक्ष के बाहर निकलने का मन नहीं कर रहा था। पर अचानक किसी ने मेरे कक्ष का दरवाजा खटखटाया। उस समय मैं साधारण कपड़ों में लेटा हुआ था। डर थ कहीं रंजना तो नहीं आई या फिर रामदास हो सकता है। मैंने उठकर दरवाजा खोला।

दरवाजा खोलते ही मैंने देखा विद्यालय का चपरासी खड़ा था। मेरे कुछ पूछताछ करने के पहले ही वह बोला - "सरी! आप जरा कपड़े बदलकर बाहर आइए। कोई आदमी आपके लिए एक दुखान्त समाचार लेकर आया है।" दुःखद

इतना सुनते ही मैं एकदम घबरा गया। मैंने तुरन्त कपड़े बदले और घबराते हुए बाहर आ गया। पानी का नल चल रहा ज्ञि। दो चार छीटे मैंने मुंह पर मारे व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुंह धो लिया। रूमाल से मुंह साफ हो करते कम्पाऊन्ड के पास दरवाजे के साथ खड़ा हो गया। चपरासी नीम के पेड़ के नीचे खड़ा था। मैं उसके पास जाने लगा। जब हमारा आमना-सामना हुआ तो वह बोला - "रामदास का नौकर खबर दे गया है कि 'रामदास नदी में डूबकर मर गया।"

"अरे! नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यह क्या कह रहे हो तुम। तुम्हें कोई इस तरह झूठी खबर तो नहीं दे गया।"

नहीं सर, नहीं, वह खबर देने वाला व्यक्ति रामदास का ही नौकर था और उसकी आंखे आंसुओं से बह रही थी।

मेरा मुंह खुला का खुला रह गया। "हे भगवान!" यह शब्द मेरे मुंह से निकले और तेज रफ्तार से मैं रामदास के घर की तरफ जाने लगा।

67

मैं रामदास के घर गया। मैं एक बार उसे देखना चाहता था। क्योंकि जब तक मैं उसे आंखों से नहीं देखूंगा तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा।

पर जैसे ही मैं उसके घर पहुंचा, घर का माहौल देखकर मुझे यकीन हो गया कि घटना सत्य है। रामदास के घर मोहल्ले व गांव की महिलाएं एवं पुरूष एकत्रित होकर फूटी-फूटी आंखों से एक दूसरे को देखकर चर्चा कर रहे थे। रामदास के दो नौकरो ने मुझे देखा और रोते हुए मेरे पास आकर मेरे पैरो पर गिर पड़े तथा जब हो गया अध्यापक जी कहकर मुझसे बिलखने लगे। उनमें एक जिसकी आंखों देखी घटना थी वह रो-रोकर बयान करने लगा।

रामदास सवेरे ही अपने मामा के गांव से बैलगाड़ी एवं नौकर के साथ हर्षोल्लास के साथ लौट रहा था। मार्ग में वर्धा नदी पड़ती है। शीशे की तरह चमकता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुआ नदी का पानी देखकर रामदास की नहाने की इच्छा हुई। उसने नौकर से कहा - "गाड़ी से बैल खोलकर उन्हें पानी पिलाओ तब तक मैं नहा लेता हूं।"

रामदास ने कपड़े उतारे और छलांग लगाई। वह बहुत देर तक दिखाई नहीं दिया। नौकर को सन्देह होने लगा। क्योंकि जिस स्थान पर वह तैर रहा था वहां गहरा पानी था और उसमें भंवर भी थे। रामदास को पानी के ऊपर न आते देख उसका नौकर उस स्थान पर जाकर देखने लगा।

पानी में से मिट्टी से सने बुलबुले उठ रहे थे। पानी भी कुछ-कुछ लाल रंग का हो गया था। नौकर घबरा गया। वह भागकर पास के गांव में गया और घटना सुनाकर दो-चार आदमी अपने साथ ले आया। एक घन्टे के प्रयास के बाद बड़ी मुश्किल से रामदास के शरीर को बाहर निकाला। तब तक रामदास मर चुका था।

उसे उल्टा लिटाकर पेट से पानी निकाला गया। उसके शरीर पर जगह-जगह चोटे आई थी। उसे हिला-हिलाकर होश में लाने का प्रयास किया गया। पर सभी प्रयत्न व्यर्थ थे। नौकर ने महत्वपूर्ण जवाबदारी गांववालो पर सौपी।

नौकर ने एक और अच्छा काम किया कि गांववालों की मदद एवं सलाह से उसने सम्बन्धित ग्राम पंचायत में जाकर रिपोर्ट लिखवाई। ग्राम पंचायत ने सम्बन्धित पुलिस स्टेशन को सूचना देने हेतु ग्राम पंचायत का कर्मचारी भेज दिया। रामदास के निर्जीव शरीर पर कपड़ा डालकर दो चार व्यक्ति सुरक्षा हेतु उसके पास बैठ गये एवं नौकर तड़ेगांव दशासर आ गया जो सम्बन्धियों एवं गांववालो को सूचित करे।

पूरी घटना का वर्णन सुनकर मुझसे रहा नहीं जा रहा था। मैं रामदास को देखना चाहता था। मैंने उसका घोड़ा लिया और उस स्थान के लिए मैं घोड़े को सरपट दौड़ाने लगा। स्वामीभक्त घोड़ा उस चिरपरिचित मार्ग पर सरपट भाग रहा था। उस नदी पर मैं रामदास के साथ दो-चार बार गया था। इसलिए मेरे लिए वह जगह अपरिचित नहीं थी।

आधे घन्टे में ही मैं उस स्थान पर जा पहुंचा और रामदास के शरीर को ढूंढने लगा। गर्मी के मौसम के कारण रेत से आंच निकल रही थी। घोड़ा नदी के पानी में जाकर खड़ा हो गया। घोड़ा जोर-जोर से हिनहिनाने लगा। नौकर ने जिस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थान पर मुझे बताया उस स्थान पर न तो रामदास की डेडबॉडी थी और न ही गांव के लोग।

मैं पास में ही गांव में गया। वहां पेड़ के नीचे तीन-चार ग्रामीण बैठे थे। उनसे पता चला की पुलगांव थाने की पुलिस शव को शववाहन में डालकर पुलगांव ले गई है।

उस समय शाम के पांच बज रहे थे। मैंने घोड़े को पुलगांव की ओर दौड़ाया। दूर-दूर तक खेत ही खेत दिखाई दे रहे थे। घोड़ा तेज गति से दौड़ रहा था। लगता था उस बेजुबान पशु को अपने स्वामी को देखने की आतुरता मुझसे अधिक थी। साढ़े पांच बजे मैं पुलगांव के नजदीक पहुंच गया। तत्पश्चात गांव में घुसने से पहले मैंने पुलगांव कोतवाली थाने की जानकारी हासिल की।

तीन किलोमीटर और अधिक चलना था। तीन किलोमीटर चलने के बाद जैसे ही मुझे थाना दिखाई दिया तो मैं घोड़े के नीचे उतर गया। उतर कर घोड़े की लगाम कम्पउन्ड की करीबी तार को बांध दी और पूछताछ करने थाने में गया। अपना परिचय देने के साथ-साथ मैंने रामदास के बारे में पूछताछ की। पुलिस ने बताया - "लाश पोस्टमार्टम के लिए वर्धा के सरकारी अस्पताल भेज दी गयी है। रात को पोस्टमार्टम किया जाएगा और सवेरे दस बजे के बाद लाश को घरवालो के सुपुर्द कर दिया जायेगा।"

मैंने उनसे निवेदन किया - "महोदय जी मैं उसे एक बार देखना चाहता हूं। यदि किसी प्रकार की कोई आपत्ति न हो तो।"

उन्होंने कहा - "हमें कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु आपको वर्धा हॉस्पिटल में जाना होगा।" मैं निराश होकर थाने के बाहर आकर घोड़े के पास खड़ा हो गया। रामदास के शव को भी देखना शायद मेरे नसीब में नहीं था। मै। जहां भी पहुंचा उससे पहले ही उसकी लाश आगे निकल जाती। अब मेरा वर्धा के हॉस्पिटल जाना ही बेहतर था। मैं घोड़ा लेकर चलने लगा था कि इतने में ही पीछे से एक पुलिस कर्मचारी मेरे पास आकर कहने लगे - "अध्यापक जी, आप चाहे तो मेरे साथ चलिए। घोड़ा इसी जगह रहने दीजिए। मुझे किसी काम से वर्धा जाना है। आप मेरी मोटरसाईकिल पर बैठकर चलिए।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं उनकी मोटर साइकिल पर बैठ गया। और घोड़े को उसी स्थान पर छोड़कर वर्धा के लिए चल पड़ा।

68

एक घन्टे के बाद हम वर्धा शहर पहुंच गए। पुलिस मैन ने मुझे हास्पीटल के सामने उतार दिया। उसके बाद वे अपने काम के लिए पुलिस हेड क्वार्टर चले गए। जाने के पहले मैंने उन्हें धन्यवाद कहा।

पूछताछ करके मैं उस स्थान पर पहुंच गया वहां रामदास का शव रखा था। अस्पताल के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने अधिक देर नहीं की और मुझे वहां ले जाकर खड़ा किया जहां पलंग पर रामदास की बॉडी सफेद चादर से ढकी हुई थी। एक कर्मचारी ने जैसे ही रामदास के चेहरे पर से चादर हटाई वैसे ही मैंने रामदास की पहचान कर ली और उसी वक्त मैंने दोनो हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। मेरे मुंह से इतना ही निकला 'नहीं रामदास, नहीं। क्षमा कर दो मुझे' और मैं जमीन पर बैठ गया।

वही रामदास जो मेरे सामने बैठकर पढ़ता था। वही रामदास था जो अपनी गलतियों पर क्षमा मांगने के लिए हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़ा होता था। वहीं रामदास था जिसने अपने प्राणप्रिय रंजना के लिए सब कुछ त्याग दिया था। वही रामदास था जिसके साथ होने वाले अन्याय को वह स्वयं देखते हुए भी चुप रह जाता था।

उस त्याग की साकार मूर्ति के मृतक शरीर को देखकर मैं माथा पकड़कर बहुत देर तक जमीन पर बैठा रहा। मेरा हृदय भर आया। आंखे भी आंसुओं से भींग गई। हंसता खेलता जवान नवयुवक पलक झपकते ही मर गया था। यह एक कठोर परन्तु अविश्वसनीय सत्य था। अस्पताल के कर्मचारी ने धीरज बंधाते हुए मुझे खड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किया। रामदास के चेहरे पर से जो सफेद कपड़ा हटाया गया था। फिर से वह कपड़ा ढंक दिया। मैं वहां से बाहर आ गया। अस्पताल के बरामदे में बैठा रहा, क्योंकि उस समय मुझसे चला नहीं जा रहा था। थोड़ी देर बैठा रहा। घड़ी में देखा रात्रि के नौ बज रहे थे।

अस्पताल से मैं राष्ट्रीय मार्ग पर आया। इक्का-दुक्का ट्रक चल रहे थे। एक ट्रक चालक से विनती की। उन्होंने मेरी विनती स्वीकार की और उनके ट्रक में बैठकर मैं पुलगांव आ गया। वहां से चलकर पुलिस थाने गया। वहां पर वास्तव में घोड़ा भूखा-प्यासा खड़ा था और मुझे देखते ही खंखारने लगा। मैंने उसकी लगाम खोली और बहुत देर तक उसे पैदल ही लेकर चलता रहा। मुझ में शक्ति नहीं थी कि मैं घोड़े को दौड़ाते हुए गांव तक ले जाऊं। फिर थके हुए शरीर को एक बार फिर घोड़े पर लाद दिया और तड़ेगांव की ओर चल पड़ा।

उस समय रात्री के दस बज रहे थे। ग्यारह बजे तक गांव में पहुंच गय। पूरे गांव में समाचार था कि रामदास पानी में डूबकर मर गया है। पोस्टमार्टम के बाद शव रिश्तेदारों के सुपुर्द किया जाएगा।

मैं जैसे ही गांव में पहुंचा वैसे ही विशेष जानकाी हेतु मोहल्ले के एवं पिरचित लोग इकट्ठे हो गये। दूसरे दिन रामदास का शव लेने के लिए कैसी योजना बनाई जाए इस पर चर्चा होने लगी। तय हुआ कि दूसरे दिन सवेरे दस-पन्द्रह आदमी वर्धा जाएंगे और वर्धा से ट्रक किराये पर लेकर उसमे रामदास का शव लायेंगे। चर्चा होने के बाद मैं अपने घर गया। मन नहीं लग रहा था। न तो कुछ सोचने की इच्छा हो रही थी, न कुछ करने की। भोजन तो भूल ही गया था।

पूरे गांव को आश्चर्य होने लगा था कि रामदास कभी पानी में डूब कर नहीं मर सकता। वह एक अनुभवी तैराक था। उसके मरने का दुख हर सुनने वाले को हो रहा था।

रंजना को यदि पता चल गया तो उसकी क्या दशा होगी? वह कलकत्ता से लौटकर आ गई होगी और उसने सुन भी लिया होगा। पर वह चुप नहीं रह सकती। वह शायद तड़ेगांव पहुंची नहीं होगी, वरना उसके आने की खबर मुझे कही न कही से मिल जाती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं सोने की चेष्टा कर रहा था। नींद नहीं आ रही थी पर पूरी रात किसी तरह कट गई। सवेरे उठा और नहा धोकर सेठजी के घर पहुंच गया। रंजना अब तक पहुंची नहीं थी। पर शाम को पांच बजे तक पहुच जायेंगे ऐसा उसकी मां से पता चला। रंजना को आने के लिए विलम्ब होने का कारण यह था कि कलकत्ता में कारखानो के कर्मचारियों ने राज्यव्यापी हड़ताल की थी। इसलिए रेल मार्ग भी बंद पड़े थे।

रामदास के मरने की सूचन रंजना की मां को भी थी। उन्हें भी बहुत दुख हुआ।

सेठजी घर में नहीं थे। वे खेतों की तरफ गये थे जहां मजदूर वर्ग काम कर रहे थे। मैं वहां से रामदास के घर गया। दस पन्द्रह लोग वर्धा चलने के लिए तैयार खड़े थे।

हम सब गांव के बस अड्डे आए और वहां से बस में बैठकर वर्धा गए। और वहां से बस में बैठकर वर्धा पहुंच गए। हमें दो घन्टे लगे। ग्यारह बजे हास्पिटल पहुंचे। रामदास का पोस्टमार्टम करके उसकी लाश शवगृह में रख दी थी। रामदास के मामा हमारे साथ थे। शव प्राप्त करने में अधिक देर नहीं लगी। तुरन्त ही रामदास का शव हमें सौंप दिया गया। ट्रक द्वारा हम शव को तड़ेगांव ले आए।

69

रामदास के घर के सामने लोगो का तांता लगा हुआ था। घर के आंगन में रामदास के शव को देखकर मेरे सामने पूरा अतीत चित्रित हो उठा। कितनी अमिट छाप छोड़ गया था रामदास मुझ पर। घर के जिस प्रमुख दरवाजे के सामने जमीन पर रामदास का शव रखा था उसी दरवाजे से मैं पहली बार रामदास को मिलने आया था। पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुझे यह अपेक्षा नहीं थी कि आज उसी दरवाजे के सामने रामदास को मृतक के रूप में देखूंगा। कितनी भीड़ लगी हुई थी। जीवन काल लोग उसे उतना स्नेह, प्रशंसा और आशीष नहीं दे सके थे जो आज उसके शव को प्राप्त हो रहा था। मानव जीवन की यह कैसी विडम्बना है। इसे समझना कठीन था।

समय अपनी गति से भाग रहा था। सूर्यास्त से पहले अर्थी निकालना तय किया गया। जिन रिश्तेदारों को रामदास के मरने की सूचना मिल गई थी वे सभी पहुंच चुके थे। शाम के पांच बजे मातमी धुन के साथ रामदास की शव यात्रा शुरू हुई।

हृदय को छलनी करने वाली मातमी धुन बजाते हुए बैन्ड बाजा आगे चल रहा था। उसके पीछे थी रामदास की अर्थी और अर्थी के पीछे थे सैकड़ों लोग। विद्यालय के अध्यापक एवं छात्र भी शव यात्रा में सम्मिलित हुए थे।

श्मशान घाट गांव के बाहर ही था। आधे घन्टे में ही शवयात्रा श्मशान भूमि पहुंच गई। पहले से ही लकड़ी की चिता तैयार की गई थी। सूर्यास्त के लिए अभी काफी समय था। सैकड़ो लोग चिता के चारों तरफ बैठ गये। दाह-संस्कार की विधि आरम्भ हुई।

मुझे विश्वास नही हो रहा था कि यह जो अंतिम संस्कार किया जा रहा है यह अन्तिम संस्कार रामदास का ही है। पर यह सत्य था। उसके चेहरे परं नजर पड़ते ही लगता था कि यह रामदास ही है। उसे देखकर मुझे उसके सम्पर्क के पिछले सारे दिन याद होने लगे।

विद्यालय के अध्यापक कहते थे - "गुरूजी किस लड़के को सुधारने का प्रयास कर रहे हो आप? यह रामदास आप का भी समय खराब कर देगा।"
पर ऐसा नहीं था। उसको समझने में हर अध्यापक ने भूल की। रंजना जैसी चंचल प्रामाणिक एवं संभ्रान्त परिवार की लड़की ने रामदास को पसन्द किया। इससे अधि‍क प्रमाण क्या चाहिए थे। रामदास वह नहीं था जो लोग समझ रहे थे।

जिस नदी में डूबकर वह मर गया उस नदी पंर मुझे वह टहलते हुए दो-चार बार ले गया था। वह यही कहता था - "सर! इस नदी के पानी में पता नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या आकर्षण है। मुझे यह खिचती हुई अपने पास बुला लेती है। मैं महीने में एक दो बार आकर इस नदी के पानी में अवश्य नहा लेता हूं।" वह शब्द मुझे बार-बार अपने पास बुलाती थी।

मैं अभी मन-ही-मन सोच रहा था कि रामदास के मामा ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा - "अध्यापक जी! पण्डित जी कह रहे थे कि चिता को आग कौन लगाए। हम लोग सोच रहे हैं कि यह कार्य आप ही करें।"

मैं अवाक रह गया इतनी बड़ी सजा मुझे मिलेगी यह मैं सोच भी नही सकता था। जिस छात्र को मैं आदर्श व्यक्ति बनने के पाठ पढ़ाता आया उसकी चिता को मुझे आग लगानी पड़ेगी।

यह कितनी बड़ी विडम्बना थी। रामदास मेरा छात्र था। मैने उसे अपने हाथो से गढ़ा। वही हाथ उसकी अंतिम क्रिया करेंगे। क्या यह मेरे लिए सजा नही थी? परन्तु मैं टाल नहीं सका।

पण्डित जी ने मुझे अपने सामने बुलाया। पूजा का कार्य पूरा किया और घी से मिश्रित चंदन की लकड़ी मेरे हाथ में दी और मैंने रामदास की चिता को आग लगा दी। फिर एक बार मेरा हृदय भर आया। इस गांव ने मेरे रिश्ते को मजबूत करने का प्रयास किए।

थोड़ी ही देर में रामदास की चिता धू-धू कर जलने लगी। सभी लो खड़े होकर जलती हुई चिता को देख रहे थे। अनेको की आंखों में आंसू थे।

रामदास के साथ जो घटना घटी थी वह अकस्मात ही थी। अकस्मात के लिए कुछ भी सोचा नहीं जाता। वह एक ऐसी घड़ी कभी टल नही सकती थी। जिसका शिकार रामदास हो चुका था। जल रही चिता को मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मेरे मुंह से एक ही शब्द निकला। 'रामदास!'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

70

तत्पश्चात भीड़ से हटकर मैं एकांत में आकर बैठ गया। कभी मैंने ऊपर देखा, कभी नीचे, कभी चिता से उठ रही अग्नि की तरफ। सूर्यास्त होने जा रहा था। मैं उठकर खड़ा हो गया। मन उदास था। चारो तरफ चिन्ता की लहर थी। अचानक मेरी नजर गांव की तरफ से आनेवाले कच्चे रास्ते पर पड़ी।

एक स्त्री लगभग तेजी से दौड़ती हुई श्मशान भूमि की तरफ आ रही थी। जैसे-जैसे वह स्त्री नजदीक आने लगी, मेरी घबराहट और बढ़ने लगी। मैं उसे पहचान रहा था। वह जानी पहचानी सी लग रही थी। . . . वह . . . वह रंजना ही थी। वह दौड़कर आ रही थी।

उसे मैंने स्कर्ट-ब्लाउज में खेलते कूदते दौड़ते बहुत बार देखा था। पर आज नई नवेली दुल्हन की साड़ी पहने दौड़ते हुए पहली बार मैं देख रहा था। जैसे ही मुझे पूरा विश्वास हो गया और मैं उसकी तरफ दौड़ने लगा।

मुझे उसकी तरफ दौड़ते हुए आते देख उसने मुझे पहचान लिया था। वह जोर जोर से मुझे पुकारने लगी सर ऽ ऽ ऽ ऽ सर स ऽ ऽ ऽ र, उसकी चीखों में हृदय भेदी क्रन्दन था।

मैंने जोर से कहा - "रंजना दौड़ो नहीं, रूक जाओ।" वह रूकी नहीं। दौड़ते-दौड़ते वह गिरने ही वाली थी कि मैंने उसे थाम लिया। वह जोर-जोर से चीखने लगी। मैंने उसे सीने से लगाया।

वह बालिका की तरह रोने लगी। रोते-रोते मुझ से प्रश्न पर प्रश्न करने लगी। पर मैं क्या उत्तर देता। क्या मैं रंजना के हर एक प्रश्न का उत्तर दे सकता था? ऐसे प्रश्न मात्र रंजना ही कर सकती थी।

रंजना का एक-एक वाक्य मुझे कांटो की तरह चुभने लगा। उसका एक-एक प्रश्न मेरे सीने को चीरने लगा। वह बोली - "सर! केवल दो दिन तक क्या आप रामदास को संभाल नहीं सकते थे? मेरे गांव के छोड़ते ही रामदास मुझ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से रूठ कर चला गये।"

रंजना के किसी भी प्रश्न का उत्तर मेरे पास नहीं था। जो कुछ था वह उसके सामने ही था। रंजना को सहारा देते हुए मैं धीरे-धीरे उसे रामदास की चिता तक ले गया। रंजना को देखकर और भी विद्यालय के बच्चे साथ में खड़े थे वे भी रोने लगे। अध्यापक वर्ग रंजना व बच्चों को सांत्वना देकर चुप रहने के लिए कहने लगे।

बेचारी थोड़ी जल्दी आती तो संभवतः रामदास को देख लेती। पर अब तो देर हो चुकी थी। उसका सिसक-सिसक कर रोना देख नहीं जा रहा था।

एक बुर्जुग व्यक्ति मेरे पास आए और बोले - "अध्यापक जी, इस बच्ची को आप यहां से ले जाइए। नवविवाहिता का श्मशान भूमि में आना ठीक नहीं है।"

वह सज्जन उचित कर रहे थे। उनका कहना मानते हुए मैंने रंजना को वापस चलने को कहा। रंजना खड़ी होकर जलती चिता को देख रही थी तथा रोते हुए आंसू पोछ रही थी।

वह जैसे ही कलकत्ता से अपने घर आई मां ने उसे आते ही रामदास के मरने की खबर दी। मां ने तो सीधे-सीधे शब्दों में बताया, परन्तु रंजना की चीख निकल गई। अपने आप को अकेले पाकर पहले वह रामदास के घर गई।

उसके बाद जो उसे जानकारी मिली उस आधार पर श्मशानघाट पहुंची। मैंने कहा - "चलो रंजना! घर चलो।"

वह बोली - "सर कुछ देर मुझे और खड़ी रहने दीजिए। जी भर कर देखने दीजिए।"

वह बहुत देर तक जलती चिता को देखती रही। मेरे बार-बार कहने पर भी वह चलने को राजी नहीं हो रही थी। फिर अपने आप ही उसने चलने का मन बना लिया।

उसके पहले उसने सिर पर साड़ी का पल्लू खींच कर दोनो हाथ जोड़ते हुए रामदास की चिता को प्रणाम किया। उसके बाद वह मुड़कर पीछे आई तथा हल्के-हल्के पग भरते हुए मेरे साथ गांव की तरफ चलने लगीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूरज डूब रहा था। रामदास की चिता धू-धू कर जल रही थी। पंछी कल-कल करते हुए आसमान में घूम रहे थे। वीरान सड़क पर सबसे आगे रंजना चल रही थी जिसकी हल्के-हल्के सिसिकियों की आवाज आ रही थी। उस के पीछे उसे ढांढस बंधाते हुए मैं चल रहा था। अब सूरज पूर्ण रूप से छिप गया था और चारों तरफ अन्धेरा होने जा रहा था।

समाप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

President Patil meets tea vendor who's also an author

New Delhi - A tea vendor with a literary passion, Laxman Rao is the author and publisher of more than 15 books, all in Hindi. On Thursday, when he was invited to meet President Pratibha Patil at Rashtrapati Bhavan, she was curious to know why Rao, a Maharashtrian, prefers to write in Hindi than in his mother tongue.

Marathi is my mother tongue, but Hindi is my national language. That's why I prefer to write in Hindi, replied Rao.

IANS
July 23rd, 2009

सम्पर्क स्थान : **लक्ष्मण राव** (साहित्यकार)
11, विष्णु दिगम्बर मार्ग, नई दिल्ली - 110 002
मोबाइल : 9210415574,
Email : laxmanrao.bskp@gmail.com

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जन्म : 22 जुलाई, 1954

जन्म स्थान : तड़ेगांव दशासर, तहसील-धामणगांव

ज़िला - अमरावती (महाराष्ट्र)

शिक्षा : बी. ए. (दिल्ली विश्वविद्यालय)

साहित्यकार - **लक्ष्मण राव**

रचनाएं :

1. नई दुनिया की नई कहानी (1979), 2. प्रधानमंत्री (नाटक, 1984), 3 रामदास (1992), 4. नर्मदा (2001), 5. परम्परा से जुड़ी भारतीय राजनीति (2006), 6. रेणु (2008), 7. पत्तियों की सरसराहट, 8. सर्पदंश, 9. साहिल, 10. प्रातः काल, 11. शिव अरूणा, 12. प्रशासन (नाटक), 13. राष्ट्रपति (नाटक), 14. संयम (राजीव गांधी की जीवनी), 15. साहित्य व्यासपीठ (आत्मकथा), 16. दृष्टिकोण, 17. समकालीन संविधान,18 अहंकार, 19. अभिव्यक्ति, 20. मौलिक पत्रकारिता, 21. गांधी (महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित)

पुरस्कार व सम्मान

1. भारतीय अनुवाद परिषद्	(2000)
2. कोच लीडरशिप सेन्टर	(2002)
3. इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती	(2003)
4. निष्काम सेवा सोसायटी	(2004)
5. अग्निपथ	(2005)
6. अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच	(2005)
7. शिव रंजनी कला कुंज	(2005)
8. प्रागतिक सहजीवन संस्थान	(2006)
9. यशपाल जैन स्मृति	(2006)
10. चिल्ड्रन वैली स्कूल, प्रीतविहार-दिल्ली	(2007)
11. विज्ञान एवं प्रौद्योगिक परिषद्	(2007)
12. चित्रकला संगम	(2008)
13. इ. एम. पी. आई. मैनेजमेन्ट इन्स्टिट्यूट, सतबड़ी	(2008)
14. इन्टरनेशनल, इन्टिलेक्च्युअल अवार्ड	(2008)
15. नेशन केअर	(2008)
16. पुनीत सक्सैना संस्थान	(2009)

भारतीय साहित्य कला प्रकाशन

11, विष्णु दिगम्बर मार्ग, नई दिल्ली - 110 002

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi